धातुदौर्बल्य

और

होमियोपैथिक मतसे उसको चिकित्सा ।

श्री प्रफुल्लचन्द्र भड़ द्वारा
संगृहीत और प्रकाशित ।

हैनिमैन पब्लिशिङ्ग को०
१६५ नं० बहुबाज़ार स्ट्रीट, कलकत्ता ।

मूल्य ॥।)

भूमिका ।

—:o:—

आजकल धातुदौर्बल्यकी बीमारी घर-घर फैलती दिखाई देती है, मानसिक तथा शारीरिक दुर्बलता और शरीरमें रोग-प्रवणता— इन सबकी जड़मे यही धातुदौर्बल्य विराज रहा है। इसीलिये इस पुस्तकमें हमने आरम्भमें धातुदौर्बल्यके कारणोंपर विस्तृत विवेचन दे दिया है, जिसमें लोग समझे कि धातुदौर्बल्य क्यों होता है तथा धातुदौर्बल्यवालोंकी मानसिक और शारीरिक स्थिति कैसी हो जाती है। इसके बाद, धातुदौर्बल्यसे उत्पन्न होनेवाले अन्यान्य रोगोंपर अच्छीतरह आलोचना कर, उनकी चिकित्सा खूब सरल और सहज-साध्य भाषामें बता दी गयी है। आशा ही नहीं, मुझे पूरा विश्वास है, कि यदि इसमें लिखी विधिके अनुसार कार्य किया जायगा, तो इस रोगसे बहुत जल्द छुटकारा प्राप्त होगा। यदि इससे किसीका भी कुछ उपकार हुआ तो हम अपना परिश्रम सफल समझेंगे।

विनम्र—

श्री प्रफुल्लचन्द्र भड।

———

रोग-सूची ।

—::*::—

धातुदौर्बल्य ।

धातुदौर्बल्य किसे कहते हैं ।

धा धातुका अर्थ है, धारण करना। धा धातुमें तुन् प्रत्यय लगकर धातु शब्द बनता है। मनुष्यका वलि, (शरीरमें झुर्रियाँ पडना) पलित, (सफेदी आ जाना) लालित्य, कृशता, दुर्बलता, जरा प्रभृतिको रोक कर जो शरीरको धारण कर रख सकता है, वही धातु है। आयुर्वेद चिकित्सा-शास्त्रमें देखा जाता है, कि खाया हुआ पदार्थ पाचन होकर उसका सार पदार्थ "रसमें" परिणत हो जाता है। रससे रक्त होता है और इसके बाद धीरे धीरे उसी रक्तसे मांस, मांससे मेद, मेदसे अस्थि या हड्डी, अस्थिसे मज्जा और मज्जासे शुक्र उत्पन्न होता है और खाद्य-की सबसे परम परिणति शुक्र है और इसीका एक दूसरा नाम धातु है। क्योंकि यही एक ऐसी चीज है, जो देहको धारण कर रख सकती है। आज-कलके पाश्चात्य शरीर-विधानके जानकार पण्डितोंका कहना है, कि रक्तका सार भाग ही शुक्र है। इसी शुक्रका जब अनुचित रूपसे अपव्यय हो जाता है। तब उसीका दूसरा नाम धातुदौर्बल्य होता है। जातिके प्राण और देशके भविष्य आशा-भरोसाके स्थल, सब श्रेणीके युवकगणमें, खासकर स्कूल कालेजके छात्रोंमें, यह बीमारी अपनी महिमा खूब फैलाती जा रही है।

रोग-सूची ।

—::#::—

विषय

———

धातुदौर्बल्य ।

धातुदौर्बल्य किसे कहते हैं ।

धा धातुका अर्थ है, धारण करना । धा धातुमे तुन् प्रत्यय लगकर धातु शब्द बनता है । मनुष्यका बलि, (शरीरमें झुर्रियां पडना) पलित, (सफेदी आ जाना) लालित्य, कृशता, दुर्बलता, जरा प्रभृतिको रोक कर जो शरीरको धारण कर रख सकता है, वही धातु है । आयुर्वेद चिकित्सा-शास्त्रमें देखा जाता है, कि खाया हुआ पदार्थ पाचन होकर उसका सार पदार्थ "रसमे" परिणत हो जाता है । रससे रक्त होता है और इसके बाद धीरे धीरे उसी रक्तसे मांस, मांससे मेद, मेदसे अस्थि या हड्डी, अस्थिसे मज्जा और मज्जासे शुक्र उत्पन्न होता है और खाद्यकी सबसे परम परिणति शुक्र है और इसीका एक दूसरा नाम धातु है । क्योंकि यही एक ऐसी चीज है, जो देहको धारण कर रख सकती है । आज-कलके पाश्चात्य शरीर-विधानके जानकार परिडतोंका कहना है, कि रक्तका सार भाग ही शुक्र है । इसी शुक्रका जब अनुचित रूपसे अपव्यय हो जाता है । तब उसीका दूसरा नाम धातुदौर्बल्य होता है । जातिके प्राण और देशके भविष्य आशा-भरोसाके स्थल, सब श्रेणीके युवकगणमें, खासकर स्कूल कालेजके छात्रोंमें, यह बीमारी अपनी महिमा खूब फैलाती जा रही है ।

धातुदौर्बल्यका लक्षण।

शारीरिक दुर्बलता, रोगीको बहुत कमजोरी मालूम हुआ करती है। इसके साथ ही उसका मस्तिष्क भी कमजोर हो पड़ता है, स्मरण-शक्ति घट जाती है, यहाँतक कि खूब परिचित मनुष्यका नाम भी याद नहीं रहता, कोई वाक्य अगर लिखना होता है, तो उसका आखिरी शब्द छूट जाता है। पहले खूब मेधावी कहलाकर जिस युवककी खूब प्रशंसा होती थी, उसकी वह स्मरण-शक्ति और धारणा शक्ति धातुक्षयके भयानक परिणामके कारण कहीं चली गयी है, वह इस समय मणिहीन सर्पकी तरह बहुत ही दीन भावसे अपना समय बिताता है। उसके सरमें दर्द और सरमें चक्कर आता है। माथेमें हमेशा भाँ भाँ होता है, खाली खाली मालूम होता है। राहमें चलता चलता रोगी ढुलक पड़ता है और उसके मनमें हमेशा ही आतङ्कका एक भाव बना रहता है। रातमें अकेला राहमें नहीं चल सकता, उसे ऐसा मालूम होता है, मानो कोई उसका पीछा कर रहा है। कमजोरीके कारण कानमें एक आवाज होती है, आँखके सामने अँधेरा छा जाता है, माथेके केश असमयमें ही पक जाते हैं और उनका झड़ना आरम्भ हो जाता है। [illegible] आ जाता है, किसी काममें उत्साह नहीं रहता। रोगी हमेशा दुश्चिन्ता भावमें अपना समय बिताता है। अगर किसी जगहपर कुछ देरतक बैठ रहने बाद उठता है तो सरमें चक्कर आ जाता है, आँखोंके सामने अँधेरा छा जाता है। थोड़ा-सा परिश्रम करनेसे और किसी भी बात बिना किसी कारणके ही

हृत्पिण्ड-प्रदेशमें एक तरहके दबावका दर्द मालूम होता है और कलेजेमें धड़कन पैदा हो जाती है। इसका एक दूसरा लक्षण है, अन्नका पाचन न होना—अर्थात मन्दाग्नि या अजीर्ण, भोजनपर रूचि नहीं रहती, यदि रहती भी है, तो खायी हुई चीज अच्छी तरह पाचन नहीं होती। पेटमें दर्द मालूम होता है, पेट फूलता है। धसधसा दस्त होता है, मुँहसे या श्वाससे बदबू निकलती है, शरीरमे रक्त कम हो जानेके कारण शरीर पीला पीला दिखाई देता है। शरीरकी सभी सन्धियाँ वात रोगसे आक्रान्त हो जाती हैं। हाथ-पैर कमजोर हो जाते हैं, बहुत अधिक कमजोरी आ जानेके कारण हाथ-पैरोंमें झुनझुनी होती है। चलनेके समय पैर डगमगाते हैं, हाथसे कोई काम नहीं किया जाता. कलम पकड़कर लिखते समय हाथ काँपते हैं। धातुदौर्बल्यके ये सब साधारण लक्षण हैं, पर इसका परिणाम बड़ा ही भयानक होता है। बहुत अधिक धातुक्षयका, यहाँतक नतीजा होता है, कि आदमी पागल हो जा सकता है।

पहले तो ४।५ दिनका अन्तर देकर रातमें स्वप्नदोष होता है, रोगी किसी सुन्दरी रमणीका उपभोग स्वप्नमें करता है। इसके बाद धीरे धीरे व्याधिका आकार बड़ा हो जाता है और प्रायः की रातमें स्वप्नदोष होता है। कभी कभी तो एक ही रातभरमें ५।६ बार भी हो जाया करता है। इसके बाद किसी रमणीको स्वप्नमें देखनेकी जरूरत ही नहीं होती, बिना कारण और बिना उत्तेजनाके ही उसका वीर्यस्खलन हुआ करता है।

पाखाना फिरनेके समय काँखनेपर वीर्य-पतन होता है, पेशाब

करनेके पहले बूँद बूँद शुक्र निकलता है। किसी सुन्दरी स्त्रीके साथ बात-चीत करनेपर सहजमें ही वीर्य-स्खलन हो जाता है। इसके वाद रोगीमें पूर्ण ध्वजभंग पैदा हो जाता है, जननयंत्रमें विलकुल ही शक्ति नहीं रहती। अगर रोगी विवाह करता है, तो उसका विवाहित जीवन दुःखमय हो जाता है, निराशासे उसमें आत्महत्या करनेकी प्रवृति होती है और कितने ही युवक इसी वजहसे आत्महत्या भी कर लेते हैं। उन्मत्तता, मृगी, हिस्टिरियो, अवसाद वायु या व्याधिशंका, मेलनकोलिया, उदासीनता, पक्षाघात, धनुष्टङ्कार प्रभृति कड़ी वीमारियाँ सव इससे पैदा हो जाती हैं।

एक कालेजके विद्यार्थीमें चिकित्साके समय नीचे लिखे लक्षण मिले। इससे मालूम हो जायगा कि यह प्राणघातक वीमारी किस तरह देशके भविष्य आशा-भरोसाके स्थल युवकोंको नष्ट कर रही है—

युवककी उमर २० वरसकी है, उसने यौवनके आरम्भ कालमें वहुत ज्यादा पुं०-मैथुन और हस्त-मैथुन किया है। रमणीके साथ प्रेमकर निराश हो गया है। पहले वहुत ज्यादा स्वप्नदोष भी हुआ है। मौजूदा लक्षण नीचे लिखे ढंगके हैं :—

सर-दर्द, सरमें चक्कर, स्मरण शक्ति घटी हुई, सोचनेकी शक्ति तो यदि यह कहा जाये कि विल्कुल ही नहीं है, तो भी ठीक ही है। पढ़नेकी इच्छा नहीं होती, किसी तरहका भी मस्तिष्क-परिचालन वहुत ही कष्टकर मालूम होता है। हमेशा ही मस्तिष्क गरम रहता है। हमेशा विपन्न, हमेशा मानो उसमें एक सुस्तीका भाव भरा रहता है। श्वासमें कष्ट, श्वास-प्रश्वास लेने छोड़नेके समय

कहते है, क्योंकि स्कूल, कालेज और होस्टलोंके विद्यार्थियोंमें यह बीमारी विशेष रूपसे फैल रही है।

यह रोग होनेका इतिहास।

इस बामारीका सबसे पहला और सबसे प्रधान कारण है—हस्तमैथुन। मालूम नहीं कि मनुष्य जातिको इस तरह सत्यानाश करनेकी पद्धति किस समय और किसके द्वारा खोज निकाली गयी थी। वाइबिलमें लिखा है—सबके पहले (Onan) ओननने इस पापका प्रचार किया। हस्तमैथुनका अँगरेजी नाम Onansim है। यह "ओनन" से ही बना है। ग्रीक, रोमन, अपने चतुर देवता मर्करी (Mercury) के ऊपर यह दोषारोपण करते हैं, कि उसकी सुन्दरी स्त्री एको (Echo) जब मर गयी, तब राजा पैनके लिये उन्होंने इस क्रियाका आविष्कार किया; पर इसमें तो कोई सन्देह ही नहीं है, कि यह पाप बहुत दिनोंसे मानव-समाजमें अपना जाल फैलाये हुए है।

आज कलके समयमें—अर्थात् वर्त्तमान कालमें, देशसे ब्रह्मचर्य उठ गया है, विजातीय शिक्षामें धर्मका स्थान नहीं है। तरल और लघुमति युवकोंको वीर्यरक्षापर या इसके सम्बन्धमें कोई भी उपदेश नहीं दिया जाता। वे सहजमें ही बुरी सगतमें पड़कर यह पाप-कार्य करने लगते हैं। इसका जो खौफ़नाक नतीजा होता है, उसकी धारणा भी नहीं की जा सकती। अगर किसी तरह धारणा

इच्छा होती है। २४ घण्टोंमें आत्महत्या करनेकी इच्छा होती है। कोई हथियार अगर हाथमें आ जाता है, तो आत्महत्या करनेकी इच्छा या अपने रिश्तेदारोंको या जो सामने आ जाये, उसे ही हत्या करनेकी इच्छा होती है। देवताकी मूर्त्तिपर थूक देना या उसे लात मार कर दूर फेंक देनेकी इच्छा होती है, इस ढंगकी बहुत-सी आकांक्षाएँ उत्पन्न होती हैं। कभी कभी ज्ञान लोप हो जाता है: कुत्तोंकी प्रवृति—जैसे सामने विष्ठा या सड़ा साँप, मेढ़क इत्यादि देखनेसे ही, उसे उठाकर खा जानेकी इच्छा, पुस्तक पढ़ते पढ़ते, पेन्सिलकी नोक आँखमें गड़ा लेनेकी प्रबल इच्छा होती है।

यही युवककी कहानी है। यह युवक उस स्कूलका एक प्रधान मेधावी विद्यार्थी माना जाता था। वह देखनेमें बहुत ही शान्त सौम्य था, सुन्दर मालूम होता था। उसी मेधावी सौम्यमूर्त्ति प्रिय-दर्शन युवकका ऐसा भीषण परिणाम! आज हरएक घरमें—घर घरमें यह लक्षण, यह दृश्य दिखाई देता है: आज बीसवीं शताब्दि की सभ्यताके गौरवपूर्ण युवकोंमें ऐसा मालूम होता है, कि सैंकड़े निनानबे युवक कुछ न कुछ इस पापमें लिप्त हो रहे हैं। देश बहुत तेजीसे ध्वंसकी ओर अग्रसर होता जा रहा है, इसके बहुत-से कारण हैं, पर मालूम होता है, कि यही सबसे प्रधान और विशेष कारण है। जो समाजमें शूरता, वीरता और आत्म-प्रतिष्ठाकी प्राप्ति-कर देशमाताका मुख उज्वल करते, वे आज घरके कोने कोनेमें मुँह छिपाकर इसी तरहका घृणापूर्ण जीवन बिता रहे हैं। इस रोगको कितने ही पाठशालाका रोग (school disease)

कहते हैं, क्योंकि स्कूल, कालेज और होस्टलोंके विद्यार्थियोंमें यह बीमारी विशेष रूपसे फैल रही है।

यह रोग होनेका इतिहास ।

इस बीमारीका सबसे पहला और सबसे प्रधान कारण है—हस्तमैथुन। मालूम नहीं कि मनुष्य जातिको इस तरह सत्यानाश करनेकी पद्धति किस समय और किसके द्वारा खोज निकाली गयी थी। बाइबिलमें लिखा है—सबके पहले (Onan) ओननने इस पापका प्रचार किया। हस्तमैथुनका अँगरेजी नाम Onansim है। यह "ओनन" से ही बना है। ग्रीक, रोमन, अपने चतुर देवता मर्करी (Mercury) के ऊपर यह दोषारोपण करते हैं, कि उसकी सुन्दरी स्त्री एको (Echo) जब मर गयी, तब राजा पैनके लिये उन्होंने इस क्रियाका आविष्कार किया ; पर इसमें तो कोई सन्देह ही नहीं है, कि यह पाप बहुत दिनोंसे मानव-समाजमें अपना जाल फैलाये हुए है।

आज कलके समयमें—अर्थात् वर्त्तमान कालमें, देशसे ब्रह्मचर्य उठ गया है, विजातीय शिक्षामें धर्मका स्थान नहीं है। तरल और लघुमति युवकोंको वीर्यरक्षापर या इसके सम्बन्धमें कोई भी उपदेश नहीं दिया जाता। वे सहजमें ही बुरी संगतमें पड़कर यह पाप-कार्य करने लगते हैं। इसका जो खौफ़नाक नतीजा होता है, उसकी धारणा भी नहीं की जा सकती। अगर किसी तरह धारणा

इच्छा होती है। २४ घण्टोंमें आत्महत्या करनेकी इच्छा होती है। कोई हथियार अगर हाथमें आ जाता है, तो आत्महत्या करनेकी इच्छा या अपने रिश्तेदारोंको या जो सामने आ जाये, उसे ही हत्या करनेकी इच्छा होती है। देवताकी मूर्त्तिपर थूक देना या उसे लात मार कर दूर फेंक देनेकी इच्छा होती है, इस ढंगकी बहुत-सी आकांक्षाएँ उत्पन्न होती हैं। कभी कभी ज्ञान लोप हो जाता है; कुत्तोंकी प्रवृति—जैसे सामने विष्ठा या सड़ा सांप, मेढ़क इत्यादि देखनेसे ही, उसे उठाकर खा जानेकी इच्छा, पुस्तक पढ़ते पढ़ते, पेन्सिलकी नोक आँखमें गड़ा लेनेकी प्रवल इच्छा होती है।

यही युवककी कहानी है। यह युवक उस स्कूलका एक प्रधान मेधावी विद्यार्थी माना जाता था। वह देखनेमे बहुत ही शान्त सौम्य था, सुन्दर मालूम होता था। उसी मेधावी सौम्यमूर्त्ति प्रिय-दर्शन युवकका ऐसा भीषण परिणाम! आज हरएक घरमें—घर घरमें यह लक्षण, यह दृश्य दिखाई देता है; आज बीसवीं शताब्दि की सभ्यताके गौरवपूर्ण युवकोंमें ऐसा मालूम होता है, कि सैंकडे निनानवे युवक कुछ न कुछ इस पापमें लिप्त हो रहे हैं। देश बहुत तेज़ीसे ध्वंसकी ओर अग्रसर होता जा रहा है, इसके बहुत-से कारण हैं, पर मालूम होता है, कि यही सबसे प्रधान और विशेष कारण है। जो समाजमें शूरता, वीरता और आत्म-प्रतिष्ठाकी प्राप्ति-कर देशमाताका मुख उज्वल करते, वे आज घरके कोने कोनेमें छिपाकर इसी तरहका घृणापूर्ण जीवन विता रहे हैं।

रोगको कितने ही पाठशालाका रोग (school disease)

कहते हैं, क्योंकि स्कूल, कालेज और होस्टलोंके विद्यार्थियोंमें यह बीमारी विशेष रूपसे फैल रही है।

यह रोग होनेका इतिहास ।

इस बीमारीका सबसे पहला और सबसे प्रधान कारण है—हस्तमैथुन। मालूम नहीं कि मनुष्य जातिको इस तरह सत्यानाश करनेकी पद्धति किस समय और किसके द्वारा खोज निकाली गयी थी। बाइबिलमें लिखा है—सबके पहले (Onan) ओननने इस पापका प्रचार किया। हस्तमैथुनका अँगरेजी नाम Onansim है। यह "ओनन" से ही बना है। ग्रीक, रोमन, अपने चतुर देवता मर्करी (Mercury) के ऊपर यह दोषारोपण करते हैं, कि उसकी सुन्दरी स्त्री एको (Echo) जब मर गयी, तब राजा पैनके लिये उन्होंने इस क्रियाका आविष्कार किया ; पर इसमें तो कोई सन्देह ही नहीं है, कि यह पाप बहुत दिनोंसे मानव-समाजमें अपना जाल फैलाये हुए है।

आज कलके समयमें—अर्थात् वर्त्तमान कालमें, देशसे ब्रह्मचर्य उठ गया है, विजातीय शिक्षामें धर्मका स्थान नहीं है। तरल और लघुमति युवकोंको वीर्यरक्षापर या इसके सम्बन्धमें कोई भी उपदेश नहीं दिया जाता। वे सहजमें ही बुरी सगतमें पडकर यह पाप-कार्य करने लगते हैं। इसका जो खौफ़नाक नतीजा होता है, उसकी धारणा भी नहीं की जा सकती। अगर किसी तरह धारणा

इच्छा होती है। २४ घण्टोंमें आत्महत्या करनेकी इच्छा होती है। कोई हथियार अगर हाथमें आ जाता है, तो आत्महत्या करनेकी इच्छा या अपने रिश्तेदारोंको या जो सामने आ जाये, उसे ही हत्या करनेकी इच्छा होती है। देवताकी मूर्त्तिपर थूक देना या उसे लात मार कर दूर फेंक देनेकी इच्छा होती है, इस ढंगकी बहुत-सी आकांक्षाएं उत्पन्न होती हैं। कभी कभी ज्ञान लोप हो जाता है; कुत्तोंकी प्रवृति—जैसे सामने विष्ठा या सड़ा साँप, मेढ़क इत्यादि देखनेसे ही, उसे उठाकर खा जानेकी इच्छा, पुस्तक पढ़ते पढ़ते, पेन्सिलकी नोक आँखमें गड़ा लेनेकी प्रवल इच्छा होती है।

यही युवककी कहानी है। यह युवक उस स्कूलका एक प्रधान मेधावी विद्यार्थी माना जाता था। वह देखनेमें बहुत ही शान्त सौम्य था, सुन्दर मालूम होता था। उसी मेधावी सौम्यमूर्त्ति प्रिय-दर्शन युवकका ऐसा भीषण परिणाम ! आज हरएक घरमें—घर घरमें यह लक्षण, यह दृश्य दिखाई देता है; आज बीसवीं शताब्दि की सभ्यताके गौरवपूर्ण युवकोंमें ऐसा मालूम होता है, कि सैंकड़े निनानवे युवक कुछ न कुछ इस पापमें लिप्त हो रहे हैं। देश बहुत तेजीसे ध्वंसकी ओर अग्रसर होता जा रहा है, इसके बहुत-से कारण हैं, पर मालूम होता है, कि यही सबसे प्रधान और विशेष कारण है। जो समाजमें शूरता, वीरता और आत्म-प्रतिष्ठाकी प्राप्ति-कर देशमाताका मुख उज्वल करते, वे आज घरके कोने कोनेमें मुँह छिपाकर इसी तरहका घृणापूर्ण जीवन विता रहे हैं। इस रोगको कितने ही पाठशालाका रोग (school disease)

परिणाम यह होता है, कि इन सबसे युवकोंका दिमाग एकदम चौपट हो जाता है। कोई समाचारपत्र खोलकर पहले युवकगण यही देखते हैं, कि इसमें नारी-निर्यातन या नारी-हरणकी कोई कहानी है—या नहीं, किस तरह, किस उपायसे किसी युवतीका सतीत्व नष्ट किया गया, किस तरह किसी युवतीको ये दुर्वृत्त हरण कर ले गये, ये सब कहानियाँ पढ़ते पढ़ते युवक इन्हीं घटनाओंमें तन्मय हो जाते हैं। वाजारमें नंगी स्त्रियोंकी तस्वीरोंकी भी कमी नहीं है। वायस्कोपकी तस्वीरें और थियेटरकी वेश्याओंका नाचना गाना, इस लालसाकी आगमें घीका काम करता है। धीरे धीरे युवकोंके मनमें सुन्दरीकी मोहिनी-मूर्त्तिकी कल्पना और उसका साथ होनेकी वासना वहुत ही प्रवल हो उठती है। ये ही सब विषय रातमें सपनेमें दिखाई देते हैं और इसका ही यह नतीजा होता है, कि रातमें वीर्यस्खलन हो जाता है। पहले पहल तो ५।७ या १० दिनोंके अन्तरसे ऐसा होता है। इसके बाद तो फी रातमें और कभी कभी तो एक ही रातमें कितनी ही वार होने लगता है। इस तरह होते होते धीरे धीरे जननेन्द्रियमें शिथिलता आ जाती है, इसके वाद तो फिर स्वप्न देखनेकी जरूरत ही नहीं पड़ती। विना उत्तेजना हुए ही जभी तभी वीर्य-स्खलन या शुक्रक्षय हुआ करता है। रमणीको छूने देखने या उससे वात करने, या उसका गाना सुनने या उपन्यासमें प्रेम कहानी पढ़नेके समय भी विना किसी उत्तेजनाके या साधारण-सी उत्तेजनासे ही अनजानमें हो, अथवा जानकारीमें धातु या वीर्य निकल जाता है।

यह तो हुई अनुचित—अवैध उपायकी वात। पर वैध उपाय-

की भी जाये तो हस्तमैथुनके समय जो एक तरहकी सुखकर उत्तेजना पैदा होती है, उसके मोहमें पड़कर सब कुछ भूल जानेमें आता है। फतिङ्गे जिस तरह मरनेके लिये ही दीयेकी लौकी ओर खिंच जाते है, उसी तरह युवकगण भी इस सर्वनाश करनेवाले मोह—चुम्बककी तरफ खिंचते चले जाते है। वे इससे किसी तरह भी अपनेको बचा नहीं सकते—वे इस कार्यके लिये समर्थ ही नहीं होते। होटल, बोर्डिङ्ग इत्यादि जगहोंमें यह पापका काम बहुत ही तेजीसे आगे बढ़ता है। इसको मदद पहुँचानेवाले और भी कितने ही कारण है। यह एक ऐसी उमर है, जिसमें मन आपसे आप लालसाभरे नाटक और उपन्यासोंमे डूबा रहना चाहता है, धर्म या दूसरे विषयोंकी पुस्तक पढ़नेकी इच्छा ही नहीं होती। इधर बाजार नाटक उपन्यासोंसे भर रहा है। कितने ही नामी लेखकोंके कुरुचिसे भरे उपन्यासोंके संस्करण पर संस्करण होकर इन सब युवकोंके दिमागोंका भरपूर सत्यानाश कर रहे हैं। इस विषयमें जरा भी सन्देह करनेको कोई जरूरत नहीं है। अवैध प्रेम-कहानी हृदयमें आनन्द पैदा करती है। मनका स्वभाव ही है कि वह चंचल रहता है, इन्द्रियोंमे यह विकार और क्षोभ पैदा करता रहता है, हवाकी तरह ही इसको भी वशमें करना बहुत कठिन काम है। इसके अलावा इस समय जो सब मासिक पत्र प्रकाशित हो रहे है,

सबके गत्ते या कवरपर और बीचमें भी जबतक दो एक सुन्दरी रमणियोंका चित्र यदि नहीं दिया जाता, तो उनका उद्देश्य ही सिद्ध नहीं होता। ऐसी तस्वीरें या उपन्यासोंमें अवैध प्रणय कहानी रहती है—उन सबको 'आर्ट' की दोहाई देकर अपना काम बनाना चाहते है।

परिणाम यह होता है, कि इन सबसे युवकोंका दिमाग एकदम चौपट हो जाता है। कोई समाचारपत्र खोलकर पहले युवकगण यही देखते हैं, कि इसमें नारी-निर्यातन या नारी-हरणकी कोई कहानी है—या नहीं, किस तरह, किस उपायसे किसी युवतीका सतीत्व नष्ट किया गया, किस तरह किसी युवतीको ये दुर्वृत्त हरण कर ले गये, ये सब कहानियाँ पढ़ते पढ़ते युवक इन्हीं घटनाओंमें तन्मय हो जाते हैं। बाजारमें नंगी स्त्रियोंकी तस्वीरोंकी भी कमी नहीं है। बायस्कोपकी तस्वीरें और थियेटरकी वेश्याओंका नाचना गाना, इस लालसाकी आगमें घीका काम करता है। धीरे धीरे युवकोंके मनमें सुन्दरीकी मोहिनी-मूर्त्तिकी कल्पना और उसका साथ होनेकी वासना बहुत ही प्रबल हो उठती है। ये ही सब विषय रातमें सपनेमें दिखाई देते हैं और इसका ही यह नतीजा होता है, कि रातमें वीर्यस्खलन हो जाता है। पहले पहल तो ५।७ या १० दिनोंके अन्तरसे ऐसा होता है। इसके बाद तो फी रातमें और कभी कभी तो एक ही रातमें कितनी ही बार होने लगता है। इस तरह होते होते धीरे धीरे जननेन्द्रियमें शिथिलता आ जाती है, इसके बाद तो फिर स्वप्न देखनेकी जरूरत ही नहीं पड़ती। बिना उत्तेजना हुए ही जभी तभी वीर्य-स्खलन या शुक्रक्षय हुआ करता है। रमणीको छूने देखने या उससे बात करने, या उसका गाना सुनने या उपन्यासमें प्रेम कहानी पढ़नेके समय भी बिना किसी उत्तेजनाके या साधारण-सी उत्तेजनासे ही अनजानमें हो, अथवा जानकारीमें धातु या वीर्य निकल जाता है।

यह तो हुई अनुचित—अवैध उपायकी बात। पर वैध उपाय-

से भी वहुत ज्यादा वीर्य-क्षय कर कितने युवकोंका भविष्य जीवन वेकार हुआ जाता है, इसका भी कोई ठिकाना नहीं है। कितने ही माता पिता अपने वड़े ही प्यारे, दुलारेका विवाह वहुत ही छोटी उमरमें, किसी युवती कन्याके साथ कर देते हैं। उनकी इच्छा रहती है, कि वर्षभरके भीतर ही पोते—पौत्रका मुँह देख ले तव स्वर्गवास करे। इधर वह दुलारा भी अपनी कच्ची उमरमें ही वहुत ज्यादा और अनियमित रूपसे शुक्रका नाश कर वहुत थोडे ही दिनोंमें दीवालिया हो जाता है। ऐसे उदाहरणोंकी कमी नहीं है।

आजकल त्रिकालदर्शी ऋृषि मुनियोंका निषेध कोई भी मानना नहीं चाहता, उसका कितना विशेष मूल्य है, इसे भी कोई स्वीकार करना नहीं चाहता। अमावस्या, पूर्णिमा या चतुर्दशीको स्त्री-सहवास मना है। इस तरहकी वातें वहुतसे पागलोंका प्रलाप कहकर उड़ा देना ही चाहते हैं। स्त्री-सहवासका क्या नियम है, यह वहुतसे मनुष्य न तो जानते हैं और न जानना चाहते हैं। उनकी आँखोंमें—सहधर्मिणी—स्त्री है, विलासकी सामग्री गुड़िया और उनका जीवन उच्छृङ्खलताका जाज्वल्यमान आधार रहता है। इसलिये, आजकल ये शिक्षित कहलानेवाले युवक भी अनियमित मैथुनके कारण एक ही हीन अवस्थामें अगर जा पहुँचें तो आश्चर्य ही क्या है।

जो हो, यही है, शिक्षित—पढ़े लिखे भद्र सन्तानोंकी वातें। धीरे धीरे यह पाप अशिक्षित कृषकोंमें भी प्रवेश कर रहा है। ग्वालेके वच्चे दल वाँधकर मैदानमें गायें चराते हैं, वे अपनेसे वडे उमरवालेसे यही सीखते हैं, और फिर दलमें मिलकर यही पापा-

रण करते हैं। मैदानों और राहोंमें पशुका मैथुन देखकर उनकी
ह लालसा वहुत वढ़ जाया करती है। इसी तरह दूसरे दूसरे
द्र, सभ्य कहलानेवाले, शिक्षित, अशिक्षित, धनी, दरिद्र, सभी
रि धीरे ध्वंस और नाशकी तरफ आगे वढ़ते जा रहे हैं अथवा
न्हें ले जाया जा रहा है।

इसका प्रतिकार कैसे हो?

इसका प्रतिकार क्या है? क्या इसे रोकनेका कोई उपाय नहीं है? प्रतिकार अवश्य है और उपाय भी है। मनकी चञ्चलताके विषयमें पहले ही कहा जा चुका है। प्रतिकार करनेके लिये पहले उसी मनको अपने वशमें लाना होगा। काम जरा कठिन जरूर है, पर श्री भगवानने अपने प्रिय शिष्य अर्जुनको कहा है—

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम्।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येन च गृह्यते॥

हे अर्जुन! इसमें कोई भी सन्देह नहीं कि मन एकदम अबाध्य है। इसे वशमें लाना कठिन है, पर अभ्यास और वैराग्यसे उसे वशमें लाया जा सकता है।

शरीर तत्वके जानकार विद्वानोंका कहना है, कि रक्तका सबसे उत्कृष्ट सार भाग शुक्र या वीर्य है। और इसका क्षय ही धातु-दौर्बल्यका मूल कारण है। इसलिये, धातुदौर्बल्यके हाथोंसे छुटकारा यदि पानेकी इच्छा है—तो वीर्यधारण करना होगा—ब्रह्मचर्य पालन करना होगा। क्योंकि "वीर्यधारणं ब्रह्मचर्य"। कोई दिन ऐसा भी था कि यह भारतवर्ष ब्रह्मचर्यका लीला निकेतन हो रहा था, विद्यार्थी गुरुगृहमें रहकर ब्रह्मचर्यका पालन करते और विद्याका अध्ययन करते थे और जब पढ़ना समाप्त हो जाता था, तो विवाह आ द गृहस्थीके काममें सहयोग देते थे। आज ब्रह्मचर्य नहीं है इसीलिये हमलोगोंकी यह अधोगति हो रही है; पर यह वीर्य है क्या, उसकी शक्ति या तेज कितना है, इसपर अगर एक

बार भी हमलोग ध्यान देकर विचार करें और उसपर लक्ष्य रखें तो ब्रह्मचर्यका पालन कर इस भयानक रोगके हाथोंसे छुटकारा पानेके लिये आगे बढ़ें और उसका आग्रह भी पैदा हो। हमलोग जो कुछ खाते हैं, पैंतीस दिनोंमें जाकर वीर्य बनता है, इसलिये, जो पैंतीस दिनोतक वीर्य क्षय नहीं कर सकते हैं, उनके ही शरीर-के रक्तमे एक बूँद वीर्य उत्पन्न होता है और जो मनुष्य धृतवीय और ऊर्द्ध रेता है, वे मनुष्य नहीं, वल्कि देवता हैं। विद्वान पण्डित लोग तपस्याको तपस्या नहीं कहते। ब्रह्मचर्य ही सबसे श्रेष्ठ तपस्या है—

न तपस्तप इत्याहुर्ब्रह्मचर्यं तपोत्तमम्।
ऊर्द्ध रेता भवेद्‌ यस्तु स देवो नतु मानुष॥
ज्ञानसंकलिनी तंत्रः।

जिन्होंने इस विन्दु-साधनामें सिद्धि प्राप्त की है, उनके लिये इस पृथिवीमें ऐसा कुछ भी नहीं है, जो असाध्य हो। यह भी बिल्कुल सत्य है कि वीर्यके प्रत्येक बूँदमें करोड़ो वज्रकी शक्ति छिपी हुई है। जिसने वीर्यक्षयको रोक रखा है और धृतवीर्य बन गया है, उसके आगे अगर सभी शक्तियाँ नहीं हारी रहतीं तो क्या मुनि-ऋषिके आगे वनके सिंह व्याघ्र अपनी हिंसा-वृत्ति भूलकर पालतू बिल्लीकी तरह रहते। यह केवल हमारे शास्त्रोंकी ही बात नहीं है, बल्कि सभी देशके और सभी मनुष्योंने वीर्यरक्षाकी प्रशंसा सैंकड़ों मुँहसे की है। डाक्टर निकोल्सने लिखा है—

It is a medical—a physiological fact that the best blood in the body goes to form the elements

वाला भोजनकी दोहाई देकर, किसी तरहका उत्तेजक पदार्थ खाना और भी अन्याय है।

बहुत सोना, न सोना, दिनमें सोना, असमयमें सोना, रातमें जागना, जिस तरह स्वास्थ्यरक्षामें बाधा पहुँचाते हैं, उसी तरह ब्रह्मचर्यकी कामना करनेवालोंके लिये भी ये भयङ्कर विरोधी हैं।

सब तरहकी नशीली चीजोंको छोड़ देना होगा, पान, सुपारी, चूना, कत्था, जर्दा, चाय, चुरुट, बीड़ी, तम्बाकू, काफी, ये सभी, और इनमेंसे प्रत्येक स्वास्थ्यमें खराबी पहुँचाते हैं और ब्रह्मचर्यके पालनमें बाधा पहुँचाते हैं।

नियमित रूपसे परिश्रम और व्यायाम, युवक, प्रौढ़, वृद्ध सबके लिये ही लाभदायक है।

युरोपीय शिक्षा और सभ्यताके साथ ही साथ यह विला-सिता भी भारवासियोंके मज्जागत हो पड़ी है और धनिकोंका अनुकरण करनेके कारण यह "घोड़ा रोग" साधारण गृहस्थोंमें भी प्रवेश कर, जैसा कष्टदायक हो गया है, वैसा ही ब्रह्मचर्यकी कामना करनेवालोंके लिये भी यह उनके कार्यमें बाधा पहुँचनेवाला है। अतएव, यह हमेशा याद रखना होगा, कि—

"हमलोग क्यों भोग भोगेंगे, हमलोग तो त्यागीके लड़के हैं,
भोग-विलासमें फसकर, यह तो भूल ही गये हैं।"

एक दिन वह था जब इस भारतका आदर्श था,—Plain living and high thinking अर्थात सीधा-साधा जीवन बिताना और उच्च ज्ञानमें लगे रहना। यही आदर्श फिर सामने रखना होगा, अतीतको भूल जानेसे काम न चलेगा।

बिना जरूरतके किसीकी ओर देखना, अनुचित है। स्त्रियोंके चेहरेकी ओर देखकर कभी बात न करना। ऋषियोंका कथन है—ब्रह्मचर्य पालन करते समय, हमेशा अपने पैरकी ओर अथवा सामनेकी जमीनकी ओर नजर रखनी उचित है।

बालक-बालिकाओंके अंग-विशेष, जैसे बच्चेका लिङ्ग, स्तन, उदर, गाल इत्यादि छूकर या उनका मुख चूमकर प्यार करनेकी रीति इस देशमें बहुत प्रबल है, यह दोनोंके लिये ही बहुत नुक्सान करनेवाली है, इसमें जरा-भी सन्देह करनेका कारण नहीं है।

हमेशा कौपीनका—लगोटका व्यवहार करना उचित है। उत्तर पश्चिमांचल प्रभृति देशमें बच्चे और बालकोंको कौपीन—लङ्गोटी पहनानेकी व्यवस्था देखी जाती है।

खराब दृश्य या खराब चरित्र देखना और बुरे काम करना, ब्रह्मचर्य पालनका घोर विघ्न-स्वरूप है। आजकल बाजारोंमें नाना प्रकारके चित्रोंकी बेहद भरमार दिखाई देती है। कितने ही अच्छे विषयोंके चित्र भी आजकलकी रुचिके दोषसे विकृत भावके बन-कर, बाजारमें बिक रहे हैं, जैसे राधाकृष्णकी तस्वीरें। इनके आपसके सम्बन्धको प्रायः बहुत-से मनुष्य नहीं जानते, उस सम्बन्ध की मधुरता बहुत ही कम अनुभव कर सकते हैं, परिणाम यह हुआ है, कि अशिक्षित चित्रकारोंके हाथमें पड़कर अथवा अर्थ-लोलुप व्यवसाइयोंके कपट भक्तिरसमें लुक्काचोरी, मान-भंजन, झूलन, "देहि-पद्पल्लवमुदारम" प्रभृति भावोंके राधाकृष्णके जो सब चित्र बाजारमें छा रहे हैं, उनसे मनमें ऊँचा भाव ही नहीं पैदा होता, बल्कि उससे कुभावका ही उदय होता है।

दूसरोंका काममें लाया हुआ गमछा, कपड़ा, बिछावन प्रभृति का व्यवहार करना उचित नहीं है। दूसरोंका जूठा भोजन कभी न खाना चाहिये। इससे दूसरेका रोग-बीजाणु या चरित्र-दोष, त्रुटि इत्यादि अपने शरीरमें भी प्रवेश कर जाती हैं। यह कोई बढ़ा कर कही हुई, अतिरंजित बात नहीं है। जो होमियोपैथिक शास्त्रपर विश्वास करते हैं, वे इस तत्वको अच्छी तरह समझ सकेंगे।

कुचिन्ता पापका बीज है, खराब बात सोचनी नहीं चाहिये—यह नीति-शास्त्रका वचन है। मन किसी समय भी, बिना किसी तरहकी बात सोचे, चिन्ता-शून्य रह ही नहीं सकता। अगर वहाँ सच्चिन्ता नहीं रहती तो कुचिन्ता आ बैठती है। अतएव, हमेशा, इस बातकी चिन्ता करना उचित है, कि कुचिन्ता पास फटकने ही न पाये। इस बातकी कायदेसे चेष्टा करनी होगी। स्त्रियोंकी चिन्ता, बुरे-साथी या बुरे कामकी चिन्ता, किसीकी बुराई करनेकी चिन्ता या विलासिताकी चिन्ता, भी ब्रह्मचर्यका घोर बाधक है। ऐसे कुविषयोंकी आलोचना करना भी महापाप है।

आजकल बाजार नाटक उपन्यासोंसे भरा-पड़ा है, कितने ही नामी लेखकोंकी बहुत अश्लील पुस्तकें, जिस तरह बिक रही हैं, उससे मालूम होता है, कि आजकलके युवक-युवतियोंकी रुचि बिगड़ गयी है। ऐसी पुस्तकोंके पढ़नेसे उनका नैतिक चरित्र खराब हो जाता है। ऐसे तमाशे या थियेटर बायस्कोप देखनेसे भी नतीजा बहुत खराब होता है। ये अच्छे विषय नहीं हैं, यह मैं नहीं कहता, पर जिनमें अपने चित्तपर प्रभुत्व रखनेकी शक्ति नहीं है, उन्हें ये विषय विषकी तरह त्याग ही देने चाहियें।

ब्रह्मचर्यके विषयमें बहुत कुछ कहा जा चुका, फिर भी कहता हूँ, कि सब तरहसे सब इन्द्रियोंको संयत रखना पड़ेगा। जलके घड़ेमें अगर एक छोटा-सा छेद भी रहता है, तो सभी पानी उसमें से निकल जाता है। इसलिये, सभी इन्द्रियोंमेंसे, एक भी अगर वशी-भूत नहीं रहती, तो वह उस मनुष्यकी प्रज्ञाको नष्ट कर देती है :—

इन्द्रियाणान्तु सर्वेषां यद्येकं क्षरतीन्द्रियं।
तेनास्य क्षरति प्रज्ञा दृतेः पात्रादिवोदकम्॥

यह भी याद रखना होगा, कि काम्य-पदार्थका उपभोग करने पर कामनाकी तृप्ति नहीं होती। भगवान मनुने कहा है :—

न जातु कामः कामानां उपभोगेन शाम्यति।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभि वर्द्धते॥

आगमें अगर घीकी आहुति पड़ती है, तो वह और भी वेगसे जल उठती है। इसी तरह जब कामनाको काम्य वस्तु प्राप्त होती है और वह उसका उपभोग किया करती है, तो उसकी अपेक्षा वह मनुष्य, जो उसका उपभोग त्याग कर सका है, वही प्रशंसाके योग्य है। इस विषयमें कोई भी सन्देह नहीं है—

यश्चैतान् प्राप्नुयात् सर्वान् यश्चतान केवलां स्त्यजेत्।
प्रापणात् सर्वकामानां परित्यागो विशिष्यते॥

यह तो अविवाहितोंके लिये, इन्द्रिय-संयम और ब्रह्मचर्यकी बात कही गयी, पर जिनका विवाह हो गया है, जो गृहस्थ धर्मका पालन कर रहे हैं, उन्हें भी शास्त्र-सम्मत सहवास-विधिको मान-कर काम करना होगा। यह सत्य है, कि गृहस्थोंमें, स्त्री-सम्भोग

की इच्छा वहुत प्रवल रहती है और उन्हें स्त्री-सहवास करना भी चाहिये, पर इसमें भी संयमकी जरूरत है। यदि इसमें संयमका पालन नहीं किया जाता तो केवल इन्द्रिय-दौर्वल्य—इन्द्रियोंकी कमजोरी ही नहीं, वल्कि वहुत तरहकी वीमारियाँ होकर उनकी असमयमें ही मृत्यु हो जानेकी वहुत अधिक सम्भावना रहती है। शास्त्रोंमें कहा है :—

स्मृतिर्मेधायुरारोग्य पुष्टीन्द्रिय यशोवलैः।
अधिका मन्दजरसो भवन्ति स्त्रीषु संयता॥

अर्थात संयत भावसे स्त्री-सहवास करनेपर स्मृति, मेधा, आयु, आरोग्य, पुष्टि और सव इन्द्रियोंका वल वढ़ता है। सहजमें ही वुढ़ापेका—जराका आक्रमण नहीं हो सकता।

पर आजकल कोई भी शास्त्र-विधिका पालन नहीं करता, भारतवासी आजकल इन्द्रिय-दास होते चले जा रहे हैं और वहुत अधिक स्त्री-सम्भोगका यह परिणाम हुआ है, कि वे नाना प्रकारके रोगोंसे पीड़ित होकर दिन-रात जर्जरित हो रहे हैं। इस तरहकी वहुत अधिक स्त्री-सम्भोगकी इच्छाका कारण वताना भी विशेष कठिन नहीं है। आजकलकी शिक्षामें धर्मका लेश भी नहीं रह गया है। इस धर्म-हीन शिक्षासे मनुष्यके संयमका वाँध टूटता जा रहा है। ऐसी शिक्षामें नाटक उपन्यासोंका पढ़ना दूषण नहीं माना जाता और उनमें लिखी शृङ्गार-रसकी छटाएँ वहुत ज्यादा मात्रामें, काम-प्रवृत्तिको जगा देती हैं। थियेटर वायस्कोप देखने से भी ऐसा ही नतीजा होता है। नाना प्रकारके उत्तेजक खाद्य भी इसके अन्यतम कारण माने जाते हैं। इससे कामेन्द्रियकी उत्ते-

जना बढ़ जाती है। ५० वर्ष पहलेके पुरुषोंसे दिनमें स्त्रियोंसे मुलाकात न होती थी, उस समय गृहस्थीका ऐसा ही कठोर शासन था, पर आज दिन-रात एक साथ रहना या प्रेम-भरी बातोंमें बाधा देनेवाला कोई भी नहीं है, खासकर नौकरी करने की जगहोंमें, छोटेसे घरमें, स्त्री न रहनेपर, खाने-पीनेकी गड़बड़ी और असुविधाएं प्रभृति नाना प्रकारके कारण दिखाकर स्त्री-सहित रहा जाता है। दिन-रात इस तरह स्त्रीके साथ रहनेपर कामकी उत्तेजना दिनों-दिन बढ़ा करती है। यह भी एक तरहका मैथुन है और स्वास्थ्यके लिये बहुत ही नुक्सान पहुंचानेवाला है।

स्मरणं कीर्त्तनं केलिः प्रेक्षणं गुह्यभाषणम्।
संकल्पोऽध्यवसायश्च क्रियानिष्पत्तिरेव च ॥

विषय बहुत बढ़ जानेके कारण और न कहा जायगा। पर स्त्री-सहवासके सम्बन्धमें दो चार बातें कहकर यह प्रबन्ध समाप्त करूँगा।

बीस बरसके पहले और सत्तर बरसके बाद स्त्री-सहवास करना उचित नहीं है।—यही शास्त्रका विधान है : परन्तु बहुत-से शारीरतत्व-विद् पण्डित और विज्ञ चिकित्सक कहते हैं, कि यह पहलेका नियम है। आजकल, मनुष्योंकी और खासकर भारत-वासियोंकी जैसी दैहिक अवनति हो रही है, उससे २५ वर्षके पहले और ६० वर्षके बाद स्त्री-सहवास करना उचित नहीं है. पर इसका पालन नहीं होता. २५ वर्षमें तो कितने ही युवक २।३ सन्तानोंके पिता हो जाते हैं और ६० वर्षके विपत्नीक वृद्ध नाना प्रकारकी वजहें दिखाकर केवल स्त्री-सहवासके लिये, फिर विवाह कर लेते

है। ग्रीष्म और वर्षाके दिनोंमें पन्द्रह दिनका अन्तर देकर और अन्यान्य ऋतुओंमें तीन दिनोंका अन्तर देकर स्त्री-सहवास किया जाये, यही शास्त्रकी विधि है। पर यह भी पहलेका ही नियम है। भारतवासी जैसे दुर्बलोंके लिये, यह नियम लाभदायक न होगा। इन्हें गरमी और बरसातमें एक महीनेका अन्तर देकर और दूसरी ऋतुओंमें सात दिनोंका अन्तर देकर स्त्री-सहवास करना चाहिये। भूखी-प्यासी अवस्थामें, परिश्रम करनेके बाद और किसी रोगसे ग्रस्त मनुष्यके लिये स्त्री-सहवास मना है। मल-मूत्रका वेग रोक-कर या मनमें कोई क्षोभ या शरीरमें कष्ट रहे तो सहवास न करे। इससे घोर अनिष्ट होनेकी सम्भावना है। कितनी ही खास खास तिथियोंमें भी स्त्री-सहवास मना है, उसका क्या नतीजा होता है, यह तो हमलोग नहीं जानते, पर गुरुवाक्य समझकर, उसका पालन करना हमलोगोंका कर्तव्य है।

धातुदौर्बल्य क्या है और यह किस तरह उत्पन्न होता है, उसका प्रतिषेधक उपाय क्या है, यह संक्षेपमें बता दिया है। पर जवानीके अत्याचारोंके कारण एक बार अगर धातुदौर्बल्यकी बीमारी पैदा हो गयी तो उससे कौन-कौन-सी बीमारियाँ उत्पन्न हो सकती हैं या उसके साथ साथ और क्या क्या बीमारियाँ आ सकती हैं, उनका परिचय आगे दिया जायगा।

धातुदौर्बल्य ।

पुरुष जननेन्द्रियका परिचय ।

धातुदौर्बल्यके सम्बन्धमें कुछ बतानेके पहले पुरुष जननेन्द्रिय और उसके आस-पासके या उससे सम्बन्ध रखनेवाले यंत्रोंका परिचय करा देना आवश्यक मालूम होता है; क्योंकि इन सब यंत्रोंकी राहसे धातु-दौर्बल्य प्रकट होता है।

पुरुषका वस्ति-देश (Pelvic cavity) में नीचे लिखे यंत्र (visceras) हैं :—

१ । **रेकटम** (Rectum) या सरलांत्र—यह बड़ी आँतका तीसरा और सबसे अन्तवाला अंग है। यह गुह्यद्वारमें समाप्त हो गया है। इसका न्युब्ज-स्थान (Concave part) मूत्राशय या ब्लेडरमें है। इयुरेटर या मूत्रवाही नली, जो वृक्कसे निकली है, वह इसी सरलान्त्रकी बगलसे मूत्राशयके पिछले अंशमें मिल गयी है।

२ । **ब्लैडर या मूत्राशय** (Bladder)—यह पेशाबका आधार है (the reservoir which contains the urine)। वृक्क या मूत्रपिण्ड (किडनी) में पेशाब उत्पन्न होता है और वहांसे मूत्रवाही नलीके द्वार इसी आधारमें आकर इकट्ठा हो जाता है। यह वस्तिगह्वरके सामनेवाले भाग (forepart) में है। जब यह सिकुड़ा रहता है, तो यह चिपटा और तिकोनिया बना रहता है और वस्तिगह्वरके सामनेवाले गातमें सोया-सा रहता है,

पर जब यह फूलता है, तब उस फूली हुई अवस्थामें (when full) यह अण्डेकी तरहके आकारका हो जाता है, इसका बड़ा अंश सरलांत्रकी ओर और उसका शीर्ष उदर गात्रकी ओर रहता देखा जाता है।

३। **युरेटर्स** (Ureters) या मूत्रवाही नली—दोनों वृक्कक (किडनी) से दो नल निकल कर, ब्लैडर या मूत्राशयके नीचेकी ओरके पिछले अंशमें मिल गये है। किडनी (वृक्कक) से मूत्राशय या ब्लैडरमें पेशाव ले जाना ही इनका काम है।

४। **प्रोस्टेट ग्लैण्ड** (Prostate Gland)—इसको मूत्राशय मुखशायी ग्रन्थि कहते है। यह मूत्राशय-ग्रीवाके नीचे और मूत्रवहानलीके उपर या वल्वके पीछे मूत्राशयकी ग्रीवाको घेरे हुए है। यह देखनेमें केलेके फूलके अगले भागकी तरह अर्थात Conical रहती है। तलदेशका आकार, सुपारीकी तरह रहता है, यह ऊपर की ओर रहती है। इसका पीछेवाला अंश मलनालीके पासमें रहता है। इसलिये, मलनालीमें अंगुली घुसानेपर यह अनुभवमें आता है। युरेथरा इसी ग्रन्थिके वीचसे गयी है और कामन सेमिनल डक्ट (शुक्रवाही नली) दोनों, टेढ़े भावसे जाकर, इसका गात्र भेद करती हुई, युरेथ्रामें मिल गयी है। इससे एक तरहका चिकना लसदार तरल पदार्थ निकलता है। उसको Prostatic fluid मुखशायी ग्रन्थिका रस कहते है।

५। **वेसिकुलि सेमिनैलिस** (Vesiculæ Semi-

इञ्च लम्बा, दो थैलीकी तरह पदार्थ (Sacculated body) है, यह मीनार या पिरामिडकी आकारका है ; इसका वह अंश जो बड़ा है, मूत्रवहानलीकी ओर रहता है और इसका छोटा सिरा मुखशायी ग्रन्थिके गात्रसे लगा रहता है, इसके भीतरकी ओर वैस डिफरेन्स है। वेसिकुलि सेमिनैलिस semen या वीर्यको धारण कर, रखने के लिये, आधार या बरतन (receptacles) का काम करता है। इसमेंसे एक तरहका रस-क्षरण भी (secretion) होता है। यह वीर्यके साथ मिल जाता है। प्रोस्टेट ग्रन्थिके ऊपर मूत्रस्थलीके तलदेशमें, ये दोनों ओर रहती हैं और एकसे दूसरी क्रमसे दूर हट कर एक त्रिकोणाकार (तिकोनिया) स्थान बना देती है। मूत्राशय-मुखशायी ग्रन्थिके तलदेशमें यह वैस डिफरेन्सके साथ एकमें मिलकर कामन सेमिनल डक्ट् अर्थात वहिः-निसारक पथको बना देती है।

६। **वैस डिफरेन्स** (Vas Deferens)—यह अण्डकोष-की शुक्रस्रावी नाड़ी है। यह १८ इञ्च लम्बी होती है। इयुरेथराकी ओर जाती हुई यह इण्टरनल अबडोमिनल रिङ्ग होती हुई उसके भीतर प्रवेश कर गयी है। इसके बाद मूत्राशयके पीछेकी ओर बराबर नीचे जाकर मूत्राशय-मुखशायी ग्रन्थिके तलदेशमें आकर, इस स्थानमें वेसिकुलि सेमिनैलिसके साथ मिलकर कामन सेमिनल डक्ट् नामक शुक्रवाही नलीका गठन करती है।

७। **इयुरेथरा** (Urethra)—मूत्रनली या मूत्रपथ—यह पेशाब निकालनेवाली और शुक्रस्रावी नली है (the excretory canal of the urine and the semen)—यह ८ इंच लम्बी होती है। यह मूत्राशयके अन्तिम भागसे आरम्भ होकर पुरुषाङ्गके

नियुरास्थेनिया या स्नायविक दौर्बल्य ।

(NEURASTHENIA)

नियुरास्थेनिया कहनेसे ही स्नायुमण्डलकी कमजोरी मालूम होती है। "नियुरास्थेनिया" नाम पहले पहल १८६९ ईस्वीमें न्यू यार्कके बियर्ड (Beard) ने व्यवहार किया था। उन्होंने इस तरह नामकरण करते हुए कहा था, कि यह कोई यान्त्रिक रोग नहीं है, बल्कि सुस्त करनेवाले विषसे उत्पन्न (heterogeneous—dissimilar or different in nature) लक्षणोंका समूह है। *

नियुरास्थेनियाके लक्षण दो प्रधान भागोंमें विभक्त किये जाते हैं—मानसिक (mental) और शारीरिक (bodily or physical)। मानसिक लक्षणोंमें ऐसा देखनेमें आता है—कि स्नायुओंका आपसमें जो सम्बन्ध है, मस्तिष्कका स्पन्दन जिस तरह सब जगह पहुँच जाता है, वह सम्बन्ध नियुरास्थेनियामें टूट जाता है। कोई साधारण-सी घटना भी बहुत बड़ी मालूम होती है; खासकर स्वास्थ्य-सम्बन्धी घटना, शरीरके किसी स्थानमें अगर हलका-सा दर्द भी होता है तो रोगी समझता है, कि उसे कोई बड़ी बीमारी हो गयी है। या रोगीको, साधारण-सी घटनाका भूल जाना, किसी बड़ी मानसिक बीमारीका पूर्व-लक्षण मालूम होता है। उसके मनमें हमेशा डर बना रहता है, इसके रोगीको किसी तरह भी शान्ति नहीं मिलती। बिना किसी कारणके ही रोगी चिढ़ जाता है। अपने ऊपरका भी विश्वास खो देता है, मनुष्यों

* Practice of medicine edited by Dr Tice vol X page 269

अन्ततक चली गयी है। इसके तीन अंश हैं; (क)—प्रोस्टेटिक अंश—मूत्राशय-ग्रीवासे लेकर मूत्राशय-मुखशायी ग्रन्थिके वाहरी आवरणतक रहता है। इसकी लम्बाई है सवा इंच। (ख) मेंब्रेनस अंश—अर्थात झिल्लीवाला भाग—यह लम्बाईमें ३।४ इंच लम्बा रहता है—प्रोस्टेट-एपेक्स अर्थात मूत्राशय-मुखशायी ग्रन्थि-शिखर और तिकोनिया निगोमेटके निचले भाग होकर यह गयी है। यह चारों ओरसे घेरे हुए है। कान्स्ट्रिकृर इयुरेथराकी मांसपेशीके तन्तु सव, पीछेकी ओर इसके पास ही हैं, सरलान्त्र और काउपर ग्रन्थि। (ग) कैवरनस (Cavarnous portion) या स्पंज जैसा अंश, मूत्रनलीका यह सबसे लम्बा अंश है, प्रायः ६ इञ्च इसकी लम्बाई है। यह पुरुषाङ्गके अन्तिम सिरेपर मिटस इयुरेनियस नामक छिद्र-पथमें समाप्त हो गयी है।

८। **पेनिस या लिंगेन्द्रिय** (Penis)—इसे पुरुषाङ्ग भी कहते हैं। इसका परिचय अनावश्यक है। कार्पोरा कैवरनोसा (Corpora Cavarnosa) नामके दो दो तन्तुमय पदार्थ और कार्पस स्पंजियोसम (Corpus spongiosum) नामक उसका नीचेका एक कोमल स्पंजी पदार्थसे यह बना है।

९। **टेस्टिस या अण्डकोष** (Testis), स्क्रोटम (Scrotum) नामके मुष्कत्वचाके बीचमें दो कोष हैं; ये शुक्र-निकालनेवाली एक गांठोंकी तरहका (glandular) यंत्र विशेष है। प्रत्येक कोषमें वैस डिफरेन्स नामक एक एक निःसारक नली (excreting duct) है।

नियुरास्थेनिया या स्नायविक दौर्बल्य ।

(NEURASTHENIA)

नियुरास्थेनिया कहनेसे ही स्नायुमण्डलकी कमजोरी मालूम होती है। "नियुरास्थेनिया" नाम पहले पहल १८६९ ईस्वीमें न्यूयार्कके बियर्ड (Beard) ने व्यवहार किया था। उन्होंने इस तरह नामकरण करते हुए कहा था, कि यह कोई यान्त्रिक रोग नहीं है, बल्कि सुस्त करनेवाले विषसे उत्पन्न (heterogeneous—dissimilar or different in nature) लक्षणोंका समूह है। *

नियुरास्थेनियाके लक्षण दो प्रधान भागोंमें विभक्त किये जाते हैं—मानसिक (mental) और शारीरिक (bodily or physical)। मानसिक लक्षणोंमें ऐसा देखनेमें आता है—कि स्नायुओं का आपसमें जो सम्बन्ध है, मस्तिष्कका स्पन्दन जिस तरह सब जगह पहुंच जाता है, वह सम्बन्ध नियुरास्थेनियामें टूट जाता है। कोई साधारण-सी घटना भी बहुत बड़ी मालूम होती है : खासकर स्वास्थ्य-सम्बन्धी घटना, शरीरके किसी स्थानमें अगर हलका-सा दर्द भी होता है तो रोगी समझता है, कि उसे कोई बड़ी बीमारी हो गयी है। या रोगीको, साधारण-सी घटनाका भूल जाना, किसी बड़ी मानसिक बीमारीका पूर्व-लक्षण मालूम होता है। उसके मनमें हमेशा डर बना रहता है, इसके रोगीको किसी तरह भी शान्ति नहीं मिलती। बिना किसी कारणके ही रोगी चिढ़ जाता है। अपने ऊपरका भी विश्वास खो देता है, मनुष्यो

* Practice of medicine edited by Dr Tice vol X page 269

को भीड़के बीचमें जा नहीं सकता, स्नायविक दुर्वलता पैदा हो जाती है, सड़क या कोई दूसरी खुली जगह पार करनेमें डर मालूम होता है और ऐसा ही सोचा करता है, कि वह पागल हो जायगा। मस्तिष्कके परिचालनके किसी काममें किसी तरह भी अपने मनको स्थिर नहीं रख सकता। कितनी ही वार भूलकी वजहसे समझता है, कि उसकी स्मरण-शक्ति लोप हो गयी है और इन सब कामोंमें वह हमेशा ही भूल करता रहेगा। अगर ये सब लक्षण बहुत तेज हो जाते है, तो चित्तोन्मत्तता या अवसाद-वायुकी बीमारी पैदा हो जाती है। गुल्मवायु या हिस्टिरिया इसके वादका लक्षण है; पर हिस्टिरिया साधारणतः औरतोंको ही बीमारी है; पर ठीक ऐसी ही एक बीमारी पुरुषोंको भी होती है। कितनी ही वार तो हिस्टिरियाके लक्षणोंके साथ इसका भ्रम हो जाता है। पर हिस्टिरिया प्रायः स्त्रियोंकी बीमारी है और नियुरास्थेनियासे उत्पन्न अवसाद वायु या चित्तोन्मत्तता अधिकांश स्थानोंमें पुरुषोंको होती ही देखी जाती है। हिस्टिरियाकी रोगिनी चाहती है, कि दूसरे उससे सहानुभूति प्रकट करें; पर नियुरास्थेनियाका रोगी अपनी बीमारी छिपा रखना चाहता है, कहीं लोग यह जान न लें कि यह कामके लायक नहीं रह गया है।

शारीरिक लक्षणोंमें ऐसा देखा जाता है, कि शरीरमें जहाँ तहाँ दर्द होता है। सुरसुरी मालूम होती है, मानो कीड़ा रेंग रहा है, इधर उधर कुछ न कुछ फूल उठता है, तेज सर-दर्द पैदा हो जाता है, दोनों कनपटियोंमें टपक होता है और माथेका तालुदेश या माथेके पिछले भागमें बहुत भार मालूम होता है। पीठकी

रीढ़में वहुत दर्द होता है। पेट फूलता है, अजीर्ण हो जाता है अथवा कब्जियत हो जाती है। पेट फूलना, खासकर स्त्रियोंके लिये तो यह एक वलवान उपसर्ग हो जाता है। संगम शक्ति घट जाती है।

इसकी पैथोलोजी या निदानतत्वमे "साजो" के Analytic Cyclopegia पुस्तकमें लिखा है, कि स्नायुशूलकी अवसन्नता ही इसके निदानके नामसे वहुत दिनोंसे विख्यात है। कोष और कोषमध्यस्थ विन्दु या नियुक्लियस (neucleus) के भीतरके पदार्थका वास्तविक क्षय डा० "हाज" (Hodge) ने लिखा है। डा० रोशिस्टा और कालिनसने ३३ रोगियोंकी रक्त परीक्षा कर देखा कि—decreased ratio of lucocytes to red blood corpuscles अर्थात प्रायः सवमें ही कुछ न कुछ लाल रक्त कणिकाओंमें हिमोग्लोविनकी कमी देखी गयी थी। *

चिकित्सा।

वीमारीका कारण वहुत ज्यादा हस्तमैथुन हो तो—एक्स फेस्टस, कैल्केरिया, चायना, काकियुलस, हायोसायमस, मर्कुरियस, नेट्रम-म्यूर, नक्स-वोमिका, फास्फोरस, फास्फोरिक एसिड, पिकरिक एसिड और सल्फरका प्रयोग करना चाहिये।

वीमारीका कारण वहुत ज्यादा मानसिक परिश्रम हो तो—कैल्केरिया-कार्व, काकुलस, क्यूप्रम, इग्ने-

---

* Sajous Analytic Cyclopedia of Practical Medicine Voll vii Page 10

शिया, लैकेसिस, नैट्रम-कार्व, नैट्रम-म्यूर, लाइकोपोडियम, नक्स-वोमिका, सिपिया, सलफरका लक्षणके अनुसार प्रयोग होता है।

मानसिक उत्तेजना बीमारीका कारण हो तो— एनाकार्डियम, आरम-मेटालिकम, कास्टिकम, कैमोमिला, काकुलस, कोलोसिन्थ, क्यूप्रम, जेल्स, हायोसियामस, इग्नेशिया, लैकेसिस, लाइकोपोडियम, स्टैफिसेग्रिया, स्ट्रामोनिम, विरेट्रम।

पहले किसी बीमारीसे बलक्षय होकर यह बीमारी पैदा हुई हो तो—कैल्केरिया-कार्व, चायना, कैलि-फास, पिकरिक एसिड, फास्फोरिक एसिड, सलफर प्रभृतिका प्रयोग होता है।

एसिड फ्लोरिक ६x, ३०—जो थोड़ी ही उम्रमें बुड्ढे हो जाते हैं और जो सब युवक बुड्ढोंकी तरह दिखाई देते हैं, उनकी स्नायविक दुर्बलतामें इसका विशेष उपयोगिताके साथ व्यवहार होता है। जिन्हें उपदंश हो या जिन्होंने पारा खाया हो उनके लिये यह विशेष उपयोगी है। यह दवा पेशीके ऊपर क्रिया कर सहिष्णुता शक्तिको बढ़ाती है। इसी वजहसे शारीरिक परिश्रम बहुत अधिक परिमाणमें किया जा सकता है।

एसिड फास्फोरिक ३०, २००—हस्तमैथुन अथवा बहुत अधिक इन्द्रिय व्यवहारकी वजहसे पैदा हुए स्नायविक दौर्वल्यमें यह ज्यादा फायदा करता है। (week feeling in the chest from talking) रोगी हमेशा ही मन मराकी तरह बना रहता है और सभी विषयोंमें उसमें वैराग्यका भाव दिखाई देता है, प्रिय या रिश्तेदार

मनुष्यकी मृत्युके शोकके कारण और इसी शोकसे क्रमशः मानसिक अवसाद और दुर्बलता पैदा होनेपर यह विशेष उपयोगी है। इग्नेशियामें भी इसी प्रकारके लक्षण हैं। लेकिन फास्फोरिक एसिडमें यह लक्षण बहुत ज्यादा परिमाणमें दिखाई देता है। फास्फोरिक एसिडका रोगी बहुत जल्दी जल्दी लम्बा हो जाता है। (grow too fast and tall) मुर्झाया, दुःखी, निरुत्साह और भविष्यके विषयमें व्याकुलता, स्मरण शक्तिका घटना, बातचीत करनेकी इच्छा का न होना, सम्पूर्ण उदासीनता और जननेन्द्रियकी दुर्बलता प्रभृति लक्षण प्रकट होते हैं।

एसिड पिकरिक ३०—काम-काजमें बहुत ज्यादा लगे रहनेकी वजहसे मस्तिष्कमें भ्रान्ति मालूम होती है। थोडेसे परिश्रम से सुस्ती आ जाती है। भयङ्कर शारीरिक क्लान्ति पैदा हो जाती है। बहुत ज्यादा मानसिक दुर्बलता बढ़ जाती है। सब विषयोंमें ताच्छिल्य भाव (indifference), इच्छा शक्तिका अभाव (want of will power) हो जाता है, रोगीको हमेशा सोये रहनेकी इच्छा होती है। पैर हमेशा अत्यन्त भारी मालूम पडते हैं। पीठ और कमरमें हमेशा दर्द और थकावटका भाव रहता है और बीच-बीचमें कमरमें जलन होती है। मस्तिष्क परिचालन करते ही माथा भारी हो जाता है और सर-दर्द होने लगता है।

एव्रोटेनम ३०, २००—स्नायविक दुर्बलता, शरीरका कांपना, निराशा, कामकाजसे अनिच्छा, शरीरमें जगह जगहपर दर्द प्रभृति नाना प्रकारके स्नायविक उपसर्ग (various kinds of nervous complaints) पैदा होते हैं।

एकोनाइट ६x, ३०—बहुत ज्यादा डरका लक्षण अगर पैदा हो जाये तो मध्यवर्त्ती औषधके रूपमें इसकी दो एक मात्रा अगर प्रयोग की जाती है तो विशेष फायदा होता है।

एमोनियम पिक्रेटम ३x (विचूर्ण)—यथेच्छाचार (dissipation) अथवा बहुत तरहके कामोंमें मानसिक और शारीरिक परिश्रमके कारण मस्तिष्ककी दुर्बलता पैदा हो जाये तो यह दवा विशेष उपयोगी हुआ करती है। बहुत ज्यादा दुर्बलताकी वजहसे सभी कामोंमें गोलमाल हो जाया करता है, रोगीके हाथ-पैर काँपते हैं, परिश्रम करनेकी शक्ति नहीं रहती है और थोडे ही परिश्रमसे माथेमे दर्द होता है, बहुत नींद आती है या नींद ही नहीं आती है।

एम्ब्राग्रिसिया ६x, ३०—स्मरण-शक्ति और चिन्ता-शक्तिकी क्षीणता, रोगी छोटी बड़ी प्रायः कोई घटना याद नहीं रख सकता है। चलनेके समय पैर, खींच खींचकर चलता है, दोनों पैर वशमें नहीं रहते, अङ्ग-प्रत्यंगमें झुनझुनी पैदा हो जाती है। दुःखित भाव, सरमें चक्कर, स्नायविक धातुवाले दुबले-पतले क्षीण शरीरके लिये यह विशेष उपयोगी है। स्त्री-संसर्गके समय हफनी या दमा बढ़ जाता है। (asthma when attemptig coition)

एनाकार्डियम ६, ३०, २००—बहुत ज्यादा वीर्यपातकी वजहसे स्मरण-शक्तिका घटना, स्मरण-शक्तिका लोप हो जाना, कोई चीज या किसी वस्तुका नाम याद नहीं आता, बहुत डर मालूम होता है, रोगी मनमें सोचता है कि कोई उसका पीछा कर रहा है। मनमें हमेशा ही उद्वेग और विरागका भाव रहता है। उसका मिजाज खास-

खयाली रहता है, साधारण-सी बातमें गम्भीर भाव धारण करता है और गम्भीर विषयोंपर हँसा करता है।

अर्जेण्टम नाइट्रिकम ३०, २००--अत्यन्त विषाद, स्मरण शक्ति लोप हो जाती है। रोगी किसी भी विषयमें मन नहीं लगा सकता है, थोडेसेमें ही थक जाता है, सरमें चक्कर आता है, अजीर्ण, पेट फूलना, पेट गड़गड़ाना, कलेजा धड़कना, ध्वजभङ्ग, लिङ्ग-सूखकर छोटा हो जाता है, दोनों पैरोंमें कमजोरी मालूम होती है, दिन-रात अनजानमें पेशाव निकला करता है। ऊँचा मकान देखनेपर रोगीके सरमें चक्कर आता है और ऐसा मालूम होता है कि चक्कर खाकर गिर पडेगा। दोनों तरफसे ये मकान आकर चूर डालेंगे। रोगी उत्तेजित और खामखयाली रहता है। हमेशा ही काममें जल्दबाज, सभी काममे जल्दीबाजी करता है।

कैक्टस ६×, ३०, २००—हृत्स्पन्दन, हृत्पिण्डमें सुई बिंधने की तरह दर्द, तेज खिंचाव अनुभव होना। ऐसा मालूम होता है मानो लोहेके बन्धनसे हृदयकी स्वाभाविक चाल रुकी जाती है। दिनरात कलेजेमें धड़कन हुआ करती है, बायीं ओर दबाकर सोनेपर अधिक धड़कन होती है। ऐसा मालूम होता है कि डण्डेसे कोई कलेजा दबाये हुए है ; हृत्पिण्डकी क्रियामें गड़बडी।

कैल्केरिया कार्व ३०, २००—बहुत ज्यादा मैथुनकी इच्छा, लेकिन लिङ्गमें जल्दी कड़ापन नहीं आता है, रतिक्रियाके बाद बहुत अधिक दुर्बलता मालूम होना, सरमें चक्कर आना, सर-दर्द; पैरोंमें कमजोरी।

चायना ६x, ३०, २००—शरीरके तरल पदार्थोंकी कमीकी वजहसे कमजोरी, स्वप्नावस्थामें बहुत कमजोर करनेवाला वीर्यपात, बहुत ज्यादा रेतःस्रावके बुरे नतीजेमें इसका व्यवहार होता है। बहुत दिनोंका धातुदौर्बल्य और उसके साथ ही साधारण दुर्बलतामें भी इससे समान उपकार होता है। लगातार, ऊपरके ऊपर दो तीन दिन स्वप्नदोष होकर अगर रोगी बहुत कमजोर हो पडे, उसमें चायना विशेष लाभदायक है।

कोनायम ६, ३०—हाइपोकाण्ड्रियेसिस या अवसाद वायु, डरपोकपन, चुप रहना, अकेले रहनेकी इच्छा ; लेकिन मनुष्योंके पास रहने और उनकी बातचीत सुननेकी भी इच्छा नहीं होती। स्त्रियोंसे हँसी मजाकके समय रेतःस्राव हो जाता है।

डायस्कोरिया १२, ३०—एक रातमें एक बारसे ज्यादा याने दो तीन बार स्वप्नदोष हो जाता है। दूसरे दिन रोगी बहुत कमज़ोर हो जाता है, चलने फिरनेपर घुटनेमें बहुत अधिक कमजोरी मालूम पड़ती है।

फास्फोरस ३०, २००—बहुत अधिक इन्द्रिय व्यवहार करनेकी वजहसे बीमारी होनेपर फास्फोरस विशेष उपयोगी है। सामान्य परिश्रमसे ही मास्तष्कमें थकावट मालूम होना (Brain fag), सरमें चक्कर आना, शरीरमें जगह जगहपर कीड़ा रेंगनेकी तरह मालूम होना, कमज़ोरीके साथ बहुत अधिक उत्तेजना होती है। इसलिये हल्की-सी आवाज़से भी दर्द और तकलीफ होने है। (the senses become too acute), सुस्तीकी

अवस्थामें दर्द, आँखोंके सामने सफेद चमकीले पदार्थ सब उड़ते दिखाई देते हैं। कानमें भों भों शब्द होता है, किसी प्रकारकी गन्धसे भी रोगीको तकलीफ मालूम पड़ती है। वर्षाके साथ बिजली चमकनेपर अथवा वज्र गिरनेसे रोगीको कष्ट होता। कमरमें दर्द, पीठमें जगह जगहपर जलन होती है; बैठनेपर यह घट जाती है और कामोत्तेजना बहुत तेज रहती है।

जेलसिमियम ३x, ३०—मस्तिष्कके तलदेशमें दबाव मालूम पड़ना, रोगी हमेशा ही घूमना-फिरना नहीं चाहता है। घूमनेपर ऐसा मालूम होता है मानो हृत्पिण्डकी गति रुक जायगी। रोगी हमेशा ही निस्तेज, हमेशा ही चुपचाप बैठा रहना चाहता है। मानसिक शक्तिकी कमीके कारण किसी भी विषयपर अधिक देरतक मन नहीं लगा सकता है। हस्तमैथुनका बुरा फल, बिना कामोत्तेजक स्वप्न देखे ही रातमें स्वप्नदोष हो जाता है। लिङ्ग अत्यन्त शिथिल, अण्डकोष शीतल, पसीना भरा यह, जेलसिमियमका विशेष लक्षण है।

इग्नेशिया ६, ३०, २००—कभी हँसता है, कभी रोता है, हिस्टिरियाका लक्षण। सब विषयोंमें बहुत उदासीनता। प्रिय मनुष्यों की मृत्युकी वजहसे शोक, उससे मानसिक सुस्ती और कमजोरी का उत्पन्न होना।

कैलि ब्रोमाइड्स ३x (विचूर्ण) ३०—मानसिक सुस्ती, याददाश्तका घटना, चित्त विभ्रम, रातके समय भयङ्कर कल्पना, नाना प्रकारके स्वप्न देखता है। अकड़नवाला स्नायुरोग, पागलपन,

पुरुष दोनोंमें ही कामोन्माद। बहुत ज्यादा इन्द्रिय-सेवनकी वजहसे टेबिस डरसेनिस अर्थात पृष्ठवंशीय मज्जाका क्षयरोग।

लैकेसिस ३०, २००—कभी कभी मानसिक उत्तेजना या सुस्ती, कभी कभी मानसिक क्रियाकी अधिकता—ऐसा मालूम पड़ता है मानो वह भविष्यवक्ता (Prophecy) बन बैठा है। इस तरह जो कुछ होगा, वह कहता ही जाता है। बहुत बकवादीपन दिखाई पड़ता है। एक विषय कहता कहता दूसरा विषय कहने लगता है। फिर बहुत अधिक मानसिक सुस्तीकी वजहसे स्मरणशक्ति लोप हो जाती है, लिखनेमें हिज्जेकी भूल होती है। रोगी अत्यन्त विपन्न और दुःखित रहता है, नींद खुलने बाद ही सब उपसर्ग बढ़ जाते हैं। पर्यायक्रमसे मानसिक उत्तेजना और विषाद, जो बहुत दिनोंसे जो शराब पी रहे हैं और जिनका शारीरिक खराब हो गया है, उनके लिये यह फायदेमन्द है।

मिफाइटिस ३०—स्नायविक अवसादकी वजहसे दुर्बलता। ऐसा मालूम होता है मानो पैर सुन्न हो गये हैं।

नैट्रम-कार्ब ३०, २००—सामान्य परिश्रमसे ही बहुत कमज़ोरी मालूम पड़ना। रास्तेमें जाता जाता जरा धक्का लगते ही रोगी मुँहके बल गिर पड़ता है। थोड़ेसे मानसिक परिश्रमसे रोग लक्षणका बढ़ना—यह नैट्रम-कार्बका विशेष लक्षण है। किसी विषयको सोचने या किसी प्रकारका मानसिक परिश्रम करनेपर रोगीके सरमें दर्द होता है, सरमें चक्कर आता है और मानो मस्तिष्ककी गति रुक जाती है। रोगी हमेशा उदास और दुःखित

रहता है। जरा-सी भी गडबड़ी, यहाँतक कि गाना-बजाना भी रोगीको सहन नहीं होता।

नक्स-वोमिका ३०, २००—उत्तेजक खान-पानकी वजहसे रातमें गन्दे स्वप्नके साथ वीर्यपात हो जाता है। जरासेमें ही कामकी उत्तेजना होने लगती है सवेरेके वक्त बहुत ज्यादा मालूम होती है। रोगीको उग्र गन्ध, गडबडी, तेज रोशनी, गाना-बजाना, कुछ भी सहन नहीं होता है। हिंसा, द्वेप और क्रोध आ जाता है, साधारण-सी बातमें भी रोगी चिढ़ उठता है।

प्लाटिना ३०—कामोन्मादके कारण स्नायविक दुर्बलतामें इस दवासे विशेष लाभ होता है।

जिङ्कम ३०, २००—माथेमें सुस्ती और मानसिक कमजोरी। निरुत्साहपन और तेज दर्दके साथ माथेमें भार, सरमे चक्कर आना, अर्थशून्य अथवा मूर्खोंकी तरह बात करना, स्मृति शक्तिका घटना, स्वप्नमें वीर्य निकल जाना या अनजानमें वीर्य निकल जाना, उसके साथ ही सुस्ती और रोग-कातरता, या Hypochondriasis, समूचे पैरमें न जाने क्या सुरसुरा रहा है। ऐसा मालूम होता है, मानो खटमल रेंग रहे हैं। इसलिये, नींदमें बाधा पड़ती है। कमरमें दर्द, बहुत अधिक इन्द्रिय परिचालनकी वजहसे कमरमें दर्द, लगातार पैर हिलाना या पटकना (fidgety feet) इसका एक विशेप लक्षण है।

पुरुष दोनोंमे ही कामोन्माद। वहुत ज्यादा इन्द्रिय-सेवनकी वजहसे टेविस डरसेनिस अर्थात पृष्ठवंशीय मज्जाका क्षयरोग।

लैकेसिस ३०, २००—कभी कभी मानसिक उत्तेजना या सुस्ती, कभी कभी मानसिक क्रियाकी अधिकता—ऐसा मालूम पड़ता है मानो वह भविष्यवक्ता (Prophecy) वन वैठा है। इस तरह जो कुछ होगा, वह कहता ही जाता है। वहुत वकवादीपन दिखाई पड़ता है। एक विषय कहता कहता दूसरा विषय कहने लगता है। फिर वहुत अधिक मानसिक सुस्तीकी वजहसे स्मरणशक्ति लोप हो जाती है, लिखनेमें हिज्जेकी भूल होती है। रोगी अत्यन्त विपन्न और दुःखित रहता है, नींद खुलने वाद ही सव उपसर्ग वढ़ जाते है। पर्यायक्रमसे मानसिक उत्तेजना और विषाद, जो वहुत दिनोंसे जो शराव पी रहे हैं और जिनका शारीरिक खराव हो गया है, उनके लिये यह फायदेमन्द है।

सिफाइटिस २०—स्नायविक अवसादकी वजहसे दुर्वलता। ऐसा मालूम होता है मानो पैर सुन्न हो गये हैं।

नैट्रम-कार्व ३०, २००—सामान्य परिश्रमसे ही वहुत कमजोरी मालूम पड़ना। रास्तेमें जाता जाता जरा धक्का लगते ही रोगी मुँहके वल गिर पड़ता है। थोड़ेसे मानसिक परिश्रमसे रोग लक्षणका वढ़ना—यह नैट्रम-कार्वका विशेष लक्षण है। किसी विषयको सोचने या किसी प्रकारका मानसिक परिश्रम करनेपर रोगीके सरमें दर्द होता है, सरमें चक्कर आता है और मानो मस्तिष्ककी गति रुक जाती है। रोगी हमेशा उदास और दुःखित

रहता है। जरा-सी भी गड़बड़ी, यहाँतक कि गाना-बजाना भी रोगीको सहन नहीं होता।

नक्स-वोमिका ३०, २००—उत्तेजक खान-पानकी वजहसे रातमें गन्दे स्वप्नके साथ वीर्यपात हो जाता है। जरासेमें ही कामकी उत्तेजना होने लगती है सवेरेके वक्त बहुत ज्यादा मालूम होती है। रोगीको उग्र गन्ध, गड़बड़ी, तेज रोशनी, गाना-बजाना, कुछ भी सहन नहीं होता है। हिंसा, द्वेष और क्रोध आ जाता है, साधारण-सी बातमें भी रोगी चिढ़ उठता है।

प्लाटिना ३०—कामोन्मादके कारण स्नायविक दुर्बलतामें इस दवासे विशेष लाभ होता है।

जिङ्कम ३०, २००—माथेमें सुस्ती और मानसिक कमजोरी। निरुत्साहपन और तेज दर्दके साथ माथेमें भार, सरमें चक्कर आना, अर्थशून्य अथवा मूर्खोंकी तरह बात करना, स्मृति शक्तिका घटना, स्वप्नमें वीर्य निकल जाना या अनजानमें वीर्य निकल जाना, उसके साथ ही सुस्ती और रोग-कातरता, या Hypochondriasis, समूचे पैरमें न जाने क्या सुरसुरा रहा है। ऐसा मालूम होता है, मानो खटमल रेंग रहे हैं। इसलिये, नींदमें बाधा पडती है। कमरमें दर्द, बहुत अधिक इन्द्रिय परिचालनकी वजहसे कमरमें दर्द, लगातार पैर हिलाना या पटकना (fidgety feet) इसका एक विशेष लक्षण है।

शुक्रमेह या स्पर्माटोरिया ।

(SPERMATORRHOEA)

इसके दूसरे हिन्दी और अँगरेजी नाम है—अनैच्छिक रेतः-स्राव, आप ही आप वीर्य निकल जाना, धातुक्षय, पाल्युशन (pollution), नाकटरनैल एमिशन (nocturnal emission), वेट ड्रीम्स (wet dreams) इत्यादि। ये अन्तवाले दोनों शब्द तो स्वप्नदोषके ही नामान्तर है।

शुक्रमेह किसे कहते हैं ? युरेथ्रा या मूत्रनलीकी राहसे, कामकी उत्तेजना हुए बिना ही, आप ही आप, दिनमें अथवा जिस किसी भी समय अथवा रातमें नींदके समय या स्वप्नावस्थामें बार बार वीर्यपात होनेको शुक्रमेह कहते है।

कारणतत्व या Etiology—जननेन्द्रियका उपदाह या irritability और कमजोरी इसका मुख्य और इस बीमारीको उत्पन्न करनेवाला प्रधान कारण माना जाता है। इससे जनन-यन्त्र और मूत्र-यन्त्रके साथ लगे हुए स्नायु और स्नायुकेन्द्रपर बीमारीका हमला होता है। अतएव, इस तरहकी अवस्था भी शुक्रमेहके मुख्य कारणोंमें मानी जाती है।

जवानी आनेपर हस्तमैथुनका अभ्यास इसका प्रधान गौण कारण कहा जा सकता है। अनियमित और बहुत ज्यादा स्त्री-सहवास भी इसका दूसरा कारण है। कोई कोई यह भी कह सकते हैं, कि केवल हस्तमैथुनको इसका कारण बताना उचित नहीं है, क्योंकि जवानीके आरम्भमें बहुत-से हस्तमैथुन किया

करते हैं, परन्तु उन सबको तो शुक्रमेह नहीं हो जाता। पर इतने पर भी हमलोग यह अवश्य कहेंगे, कि अस्वाभाविक दुष्कर्मके परिणामकी कमी-वेशीके अनुसार और मनुष्योंमें रोग रोकनेकी जो शक्ति रहती है, उसकी ताकतके अनुसार, कितनोंको ही यह बीमारी होती है और कितनोंको ही नहीं होती। पर इसमें कोई भी सन्देह नहीं है, कि हस्तमैथुनका बुरा अभ्यास ही इस बीमारीका प्रधान कारण है।

इसके अलावा हस्तमैथुन या बहुत अधिक स्त्री-सहवासके बिना ही यह बीमारी पैदा हो सकती है। मूत्राशय (bladder) का irritation या उपदाह, तथा पेशाबकी नली या मूत्रमार्गकी रोगिनी अवस्था, कृमि हो जानेके कारण सरलांतका उपदाह, बवासीर, दुर्दम्य कब्जियत, इन्द्रियमें जल्दी जल्दी उत्तेजना और स्वाभाविक परितृप्तिकी कमी, लिङ्गमुण्डको ढकनेवाली त्वचाका बहुत अधिक लम्बा रहना और इसी वजहसे उपदाह या irritation। मस्तिष्क और मेरुदण्डकी मज्जाकी बीमारियाँ—इन सब से भी शुक्रमेह उत्पन्न हो जाता है। जनन-यंत्रकी दूसरी दूसरी बीमारियोंसे भी शुक्रमेह उत्पन्न होता है।

प्रकृत स्पर्माटोरिया या शुक्रमेह हुआ है कि नहीं, यह कैसे मालूम होगा? (Diagnosis)—मूत्रनलीकी राहसे वीर्यकी तरह पदार्थ कितने ही कारणोंसे और कितनी ही अवस्थाओंमें निकल सकता है। इस पदार्थको निकलता देखकर ही सन्देह कर लेना, कि शुक्रमेह हुआ है, यह कदापि उचित नहीं है। निस्तेज प्रकृतिकी बहुत-सी बीमारियाँ भोगनेके समय, कितने ही रोगियों

को अनजानमें वीर्य निकला करता है। स्नायु-विधानपर जब रोगका आक्रमण होकर साधारण दुर्बलता आ जाती है तो उसीसे ऐसा हुआ करता है। जब मूल रोग आराम हो जाता है और रोगीके शरीरमें ताकत आ जाती है, तो यह आपसे आप आराम हो जाता है। पाखानेके समय काँखनेपर, कितनी ही बार शुक्रकी तरह पदार्थ निकलता है, शुक्रमेहकी बढी हुई अवस्थामें भी ऐसा हो सकता है। अथवा किसी दूसरे कारणसे शरीर अगर बहुत कड़ा हो जाता है, तो ऐसा हो जाता है ; शैल्य क्रिया करनेपर यह आराम हो जाता है। प्रोस्टेट-ग्रन्थिकी (मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थि) बीमारीकी वजहसे प्रोस्टेटिक रस (मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थि का रस) इसी तरह निकला करता है। इसलिये और और पारिपार्श्विक अवस्थाओंपर विचारकर रोगीका रोग-निर्णय करना चाहिये। पारिपार्श्विक अवस्थाओंसे रोग-निर्णयमें सहायता मिलती है।

शुक्रमेहकी लक्षणावली--विशेषज्ञोंका कहना है, कि वीर्यस्खलन ही दोष नहीं है और बीच-बीचमें वीर्यस्खलन हो जाता हो तो उसे शुक्रमेहका लक्षण मान लेनेकी कोई जरूरत नहीं है ; क्योंकि स्वस्थ्य मनुष्योंको भी बीच बीचमें, रातके समय, नींदमें या स्वप्नमें इस तरहका वीर्यपात हुआ करता है पर उससे उनके स्वास्थ्यकी कोई हानि नहीं होती। इसका कारण यह है, कि वीर्याधारकी पूरी पूरी आनुपातिक शोषण-क्रिया यदि समयपर नहीं होती, तो जो चीज़ शरीर-विधानके किसी काममें नहीं आती, वही निकल जाती है, पर यही यदि बार बार और बहुत अधिक

मात्रामें हुआ करे तो समझना होगा, कि बीमारी पैदा हो गयी है।

शुक्रमेहका सबसे पहला लक्षण है—स्वप्नदोष या सुन्दरी रमणी के साथ रतिक्रिया अथवा दूसरी तरहके कामोद्दीपक स्वप्न देखकर अनजानमें वीर्य निकल जाना और दूसरे दिन जानु-सन्धिमें कमजोरी मालूम होना। इसके अलावा, दूसरे दिन शरीर आलस्य-भरा रहता है, शरीरमें थकान-सी मालूम होती है, स्नायविकता (nervousness) और उपदाहिता (irritability) प्रकट होने लगती है। रोगीमें हताश हो जानेका लक्षण भी दिखाई देता है, उसमें लजालु भाव भी प्रकट होता है। पर स्वस्थ्य मनुष्यके वीर्यस्खलनमें ये सब लक्षण नहीं दिखाई देते। अगर बीमारी धीरे धीरे बढ़ती जाती है, तो स्वप्नदोष भी जल्दी जल्दी होता है। प्रत्येक रातमें यहाँतक कि एक रातमें एकसे अधिक बार भी हुआ करता है। इसके बाद, ऐसी अवस्था आती है, कि साधारण-सी उत्तेजनासे ही वीर्यपात हो जाता है। स्त्रीको देखने, छूने या उससे बात-चीत करनेमें भी कभी कभी वीर्यपात होता है। सुस्ती, क्लान्ति, चिड़चिड़ा स्वभाव, हताश-भाव और उदासी प्रभृति लक्षण धीरे धीरे प्रकट होते हैं।

इस तरह बहुत ज्यादा शुक्रक्षय होनेपर जननेन्द्रिय बहुत ही स्पर्श-असहिष्णु (जिसे छूना सहन न हो hyperesthetic) हो पड़ती है। इस समय थोड़ी-सी रगड़ या स्पर्शसे ही, यहाँतक कि जननेन्द्रियमें कपड़ेकी रगड़ लगनेपर भी वीर्य निकल जाता है।

धीरे धीरे मानसिक लक्षण सब दिखाई देते हैं। रोगी हमेशा एकान्तमें रहना पसन्द करता है, लोगोंके संसर्गमें जानेपर लज्जा

होती है और भय मालूम होता है। यह जानकर वह बहुत ही दुःखित हो जाता है, कि उसकी अवस्थाको और भी कुछ मनुष्य जान गये है। आराम होनेके सम्बन्धमें भी वह हताश हो जाता है, उन्हें अपना जीवन बहुत ही भार-स्वरूप मालूम होता है और कितनी ही बार तो अपना जीवन ही नष्ट करनेके लिये तैयार हो जाता है। नींद नहीं आती, लगातार नींद न आनेके कारण रोगी बहुत बेचैन हो पड़ता है। सर-दर्द, सरमें चक्कर, कानमें भों भों आवाज, आँखोंके आगे अँधेरा छा जाना; दृष्टि-शक्तिकी कमी प्रभृति सब तरहकी अवसन्नता और दुर्बलताके लक्षण प्रकट होते हैं। आंशिक या सम्पूर्ण ध्वजभंग और विषाद-वायु, उन्माद प्रभृति मानसिक लक्षण इसके बादके उपसर्ग या परिणाम है।

भावीफल या Prognosis के सम्बन्धमें यही कहा जा सकता है, कि उपयुक्त रूपसे इलाज होनेपर और आनुसंगिक उपाय करनेपर बीमारी आरोग्य हो सकती है। मस्तिष्क या पृष्ठवंश (मेरुदण्ड) से पैदा हुआ शुक्रमेह जल्दी आरोग्य नहीं होता।

चिकित्सा।

एगनस कैस्टस ३०, २००—जननेन्द्रियकी कमजोरीमें यह बहुत फायदा करता है। पाखानेके समय काँखनेपर मूत्राशय मुखगायी-ग्रन्थिसे स्राव निकल जाता है। लिङ्ग बहुत शिथिल रहता है, छोटा और कोमल हो जाता है, मैथुन या स्त्री-सहवासकी इच्छा बहुत कम पड़ जाती है। रोगी बहुत दुःखित और निराशासे भरा रहता है; मृत्यु-भय और बहुत अन्यमनस्क रहता है। उसकी

स्मरण-शक्ति घट जाती है और कोई भी विषय याद नहीं रख सकता। बहुत अधिक मात्रामें एग्नस कैस्टस काम-प्रवृत्ति और संगम-शक्तिको निस्तेज बना देता है। इसी लिये पुराने जमानेके युरोपीय संन्यासी काम-प्रवृत्तिको रोक देनेके लिये इसका व्यवहार किया करते थे। प्रमेहसे अगर शुक्रमेह या ध्वजभंग हो जाये तो एग्नस विशेष लाभ करता है। असमयमें ही बुढ़ापा आ जाता है। डाक्टर एलेन कहते हैं—Old sinners with impotence and gleet; unmarried persons suffering from nervous debility अर्थात ध्वजभंग और लाला-मेहयुक्त पुराने पापियोंकी बीमारी; अविवाहित पुरुष, जिनको स्नायविक दुर्बलता हो जाती है, उनके लिये यह उपयोगी है।

ब्यूफो २००, १०००—हस्तमैथुनकी अदम्य इच्छा, रोगी हमेशा हस्तमैथुन करनेके लिये एकान्त स्थान खोजा करता है। बहुत ज्यादा हस्तमैथुनकी वजहसे अकड़न या मृगीमें इससे विशेष उपकार होता है। जो मृगीका झोंक या aura जननेन्द्रियसे शुरू होता है, उसमें ब्यूफो विशेष उपयोगी है।

ब्रोमाइड आफ आयरन २x, ३x—शुक्रमेह या स्पर्माटोरिया, इसके साथ ही रोगीमें अत्यन्त मानसिक अवसाद, रक्तहीनता और दुर्बलता वर्त्तमान रहनेपर इसका विशेष उपयोगिताके साथ व्यवहार होता है।

कैलेडियम ३x, ३०—इन्द्रियकी उत्तेजना या किसी प्रकारका काम-भाव हुए बिना ही स्वप्नदोष या शुक्रस्राव। बहुत

ज्यादा इन्द्रिय सेवनके कुफलमें इसका व्यवहार होता है। लिङ्गमें शिथिलता, पर रतिक्रियाकी इच्छा और कामोत्तेजना अथवा मैथुन-क्रियामें लिङ्गमें कड़ापन नहीं आता है, स्त्री-सहवासमें शुक्रस्राव नहीं होता है। बहुत दिनोंतक स्वप्नदोष होकर रोगीको जब ध्वजभंग हो जाता है, तब रोगीके लिंगमे कडापन तक नहीं आता है (advanced cases without erection) तब कैलेडियम विशेष उपयोगिताके साथ व्यवहृत होता है।

कैल्केरिया-कार्ब ३०, २००—बहुत ज्यादा मैथुनकी इच्छा, लेकिन शीघ्र ही लिंगोद्रेक नहीं होता है। रतिक्रियाके समय अतिशीघ्र रेतःस्राव हो जाता है। वीर्यपातके बाद, पसीना होता है और बहुत कमजोरी मालूम होती है। नक्स-वोमिका, सल्फर और कैल्केरिया इन तीन दवाओंके बाद इसके व्यवहारसे विशेष फायदा होता है।

कैम्फर ६x—अण्डकोष और जननेन्द्रियकी शिथिलता; रतिशक्तिका एकदम अभाव, ध्वजभंग। स्त्री-सहवासकी इच्छा न होना, इसके साथ ही मूत्रकृच्छ्र और मूत्राशयकी उग्रता मौजूद रहनेपर, यह बहुत ज्यादा उपयोगी है। पेशाब रुकना और पेशाब में जलनका भी लक्षण रहता है।

चायना ६x, ३०, २००—बहुत दिनोंतक हस्तमैथुनके अभ्यासके बाद रात्रिके समय स्वप्नावस्थामें, दुर्बलताके साथ, वीर्यस्राव होता है। अश्लील चिन्ता और मैथुनकी इच्छा। स्वप्नदोषके बादकी दुर्बलता हटानेके लिये यह विशेष उपयोगी है।

रोगी सब विषयोंमें निरुत्साह, उदास और विरागी बना रहता है। सब प्रकारके कामोंकी इच्छा नहीं होती। डाक्टर फेरिंगटन कहते हैं कि ऊपरके ऊपर दो तीन दिन स्वप्नदोष होकर, रोगी अत्यन्त दुर्बल हो जाये तो चायना विशेष लाभदायक है या बहुत दिनोंतक स्वप्न-दोष या शुक्रक्षयकी वजहसे दुर्बलता आ जाये तो 'फास्फोरिक-एसिड' विशेष लाभदायक है। किन्तु अन्तवाली अवस्थामें 'चायना' से भी विशेष लाभ होता देखा गया है; पुरानी अवस्थामें 'फास्फो-रिक एसिड' और नयी अवस्थामें, डाक्टर फैरिंगटन कहते हैं, कि 'चायना' विशेष उपयोगी है।

कोनायम ३०—लिंगमें उत्तेजना हुए बिना ही संगम की इच्छा, स्त्रियोंके साथ मजाक करनेसे ही रेतःपात हो जाता है अपनी कामेच्छा पूरी न कर सकनेके कारण जो उपसर्ग पैदा होते हैं, उनमें कोनायम विशेष लाभदायक है। संगमकी इच्छाको बहुत संयमकी वजहसे पैदा हुए नाना प्रकाके उपसर्गोंमें कोनायमका व्यवहार होता है। किसी प्रकारका काम करनेकी इच्छा नहीं होती, मनुष्योंके पास रहने या उनकी बातचीत सुननेमें मन नहीं लगता, मनमें हमेशा काम-चिन्ताका उदय होता है और काम-चरि-तार्थकी इच्छा बलवती रहती है, लेकिन स्त्री-सहवासकी शक्ति नहीं रहती है। बिलकुल ही लिंगोच्छ्वास नहीं होता है। कभी हुआ भी तो वह भी क्षणिक या आलिङ्गनके समय ही चला जाता है। इसके बाद ही दुर्बलता आती है; क्षोभकी वजहसे माथेमें दर्द हो जाता है। इसमें जो मानसिक कष्ट होता है, उसके फलस्वरूप क्रमसे रोगोन्मत्तता (Hypochondriasis) हो जाती है। इसके

साथ ही यदि सोनेपर या माथा हिलानेपर अथवा इधर उधर करनेपर बढ़े तो इस तरहका सरमें चक्कर रहनेपर, कोनायमका अधिकतर उपयोगिताके साथ व्यवहार होता है।

डिजिटेलिस ६x, ३०—रोगीकी निद्रितावस्थामें अनजानमें अधिक परिमाणमें शुक्रपात और इसके बाद बहुत दुर्बलता में, डिजिटेलिसका विशेष उपयोगिताके साथ व्यवहार होता है। लिङ्गके उद्रेकके साथ ही शुक्रमेह और स्वप्नदोषकी वजहसे ध्वजभंग। लगातार पेशाब करनेकी इच्छा, पर एक बारमें सिर्फ कई बूँद पेशाब होता है। इसके साथ ही हृत्पिण्डकी दुर्बलता और हृत्स्पन्दन अगर वर्तमान रहे तो यह बहुत फायदेमन्द होता है। बहुत ज्यादा स्नायवीय दुर्बलता, नाड़ीकी अनियमित या विषम गति, विषमता, सन्देह और भविष्यके सम्बन्धमें व्याकुलता रहती है, इसके साथ ही चिन्ता-शक्ति और स्मृति-शक्ति भी क्षीण हो जाती है।

डिजिटेलिसका वीर्य—डिजिटेलिस निम्न-क्रम इस अवस्थामें ज्यादा फायदा करता है—ऐसा बहुतोंका मत है। डाक्टर हेम्पेल, बार, हेल प्रभृति विद्वानोंने इसकी बहुत प्रशंसा की है और निम्न-क्रम प्रयोग करनेका विधान दिया है।

डायस्कोरिया ३x (विचूर्ण) १२x, ३०—एक रातमें दो तीन बार स्वप्नदोष हो जाना और दूसरे दिन घुटनेमें बहुत-कमजोरी अनुभव होना। ऐसे लक्षणमें डा० फैरिङ्गटन इस दवा की बहुत अधिक प्रशंसा करते है। इसका रोगी रातभर औरतोंके सपने देखा करता है। जननेन्द्रिय बहुत ही ठण्डी रहती है,

नाभीके नीचेवाले अंशमें और अण्डकोषमें तेज गंधवाला पसीना होता है। पुट्ठे से लेकर अण्डकोषतक फैला हुआ दर्द रहता है और शुक्रवाही नाड़ी-गुच्छमें अकड़न पैदा हो जाती है। पुरुषांग ठण्डा और शिथिल रहता है।

जेलसिमियम ६×, ३०, २००—बहुत ज्यादा हस्तमैथुन का यह नतीजा होता है, कि लिंगमें कड़ापन आये विना ही, अश्लील स्वप्न देखकर, रातमें बार बार वीर्यस्राव होता है। अण्ड-कोष ठण्डा और पसीनेसे तर रहता है। जननेन्द्रिय शिथिल रहती है, मेरुदण्डमें कमजोरी मालूम होती है। किसी तरह के मानसिक कारण या स्थानिक रक्तसंचयकी वजहसे अगर धातु-क्षीणता पैदा हो जाये तो इससे बहुत अधिक फायदा होता है। लिंगमें कड़ापन आये विना ही आप ही आप वीर्य निकल जाना। पुरुषांग (लिंगेन्द्रिय) की कोमलता और शीतलताके साथ वीर्यका पतलापन। बहुत ज्यादा मैथुनके कारण शुक्रका पतला हो जाना और मेरुदण्डमें कमजोरी मालूम होना। स्थानिक रक्तसंचयकी वजहसे शुक्रक्षीणता। इसका रोगी हतबुद्धि-सा हो जाता है और उदास बना रहता है।

कोबाल्टम ३०—शुक्रमेहकी यह एक अन्यतम उत्कृष्ट दवा है। जानकारीमें या अनजानमें शुक्रस्राव हो जाना, वीर्य-स्रावके बाद पीठ और कमरमें तेज दर्द, बैठे रहनेकी अवस्थामें दर्द बढ़ा हुआ मालूम होता है और चलने-फिरनेके समय दर्द घट जाता है। अगर नक्स-वोमिकाके बाद इसका प्रयोग किया जाता है, तो बहुत अधिक फायदा होता है।

कैलि-ब्रोमेटम ६x (विचूर्ण), ३०, २००—लिंगमें कड़ापन आये बिना ही स्वप्नमें वीर्यपात हो जाता है। स्वप्नदोषके बाद रोगी मन बहुत ही दुःखित हो जाता है, दोनों पैर सुन्न हो जाते हैं और उनमें झुनझुनी पैदा हो जाती है। स्मरण-शक्ति घट जाती है, बोलनेके समय रोगी भूल जाता है, कि वह क्या कहना चाहता है। उदास, निरुत्साह और दुःखित रहता है, स्मरण-शक्ति कमजोर और क्षीण हो जाती है तथा चित्तमें विभ्रम पैदा हो जाता है।

लाइकोपोडियम ३०, २००—हस्तमैथुन या बहुत ज्यादा स्त्री-सहवासकी वजहसे शुक्रमेह और ध्वजभंग पैदा हो जाता है, लिंग छोटा हो जाता है। ढीला और ठण्डा रहता है। वृद्धोंकी संगमकी बहुत अधिक इच्छा, पर लिंगमें कड़ापन नहीं आता। रतिक्रियाके बाद ही नींद आने लगती है, रति-कालमें जल्दी जल्दी वीर्यपात होता है। किसी बातके सोचनेकी ताकत नहीं रह जाती और स्मरण-शक्ति कमजोर हो जाती है।

नेट्रम-म्यूर ३०, २००—जननेन्द्रियकी बहुत अधिक कमजोरीके कारण रातके समय निद्रावस्थामें शुक्रस्राव हो जाता है। वीर्यस्राव हो जाने बाद बहुत अधिक कमजोरी मालूम होने लगती है। संगमके बाद भी स्वप्नदोष होकर शुक्रस्राव हुआ करता है। अण्डकोषके ऊपर और नीचे बहुत अधिक खुजली रहती है। स्त्री-सहवासके समय लिंगमें कड़ापन नहीं आता है इसीलिये, वीर्यपात नहीं होता है, इसीलिये शुक्र आकर जमा रहता है, उपदाह पैदा करता है और इसी वजहसे रातमें स्वप्नदोष होता

है। वार वार स्वप्नदोष और कमरमें दर्द होता है। रातके समय पसीना होता है। दोनों पैरोंमें ताकतका न रहना और विषाद भाव पैदा होना दिखाई देता है।

नेट्रम-फास ६x, ३०—स्वप्नदोष और वहुत ज्यादा शुक्र क्षयकी वजहसे कमरमें कमजोरी मालूम होने लगती है और घुटने काँपने लगते हैं, बहुत ज्यादा शुक्रक्षयकी वजहसे पक्षाघात हो जाने पर भी यह विशेष फायदा करता है।

नूफर-लूटियम ६, ३०—ध्वजभंग पर कामोत्तेजक वातें कहने अथवा इस तरहके व्यवहारसे अनजानमें आप ही आप वीर्य-पात हुआ करता है। जरा भी प्रतिवाद करनेपर रोगी अपना धीरज खो देता है—यह मानसिक लक्षण इसके रोगीमें अकसर दिखाई दिया करता है।

नक्स-वोमिका ३०, २००—उत्तेजक पदार्थ खाने-पीने पर रातके समय अश्लील सपने देखकर वीर्यस्राव हो जाया करता है। सहजमें हो कामोद्रेक होता है और सवेरेके वक्त बहुत ही तकलीफ देनेवाला लिंगमें कडापन आया करता है। प्रातःकालके समय वार वार स्वप्नदोष होता है। पीठमें दर्द पैदा हो जाता है, बहुत ज्यादा इन्द्रिय सेवनके वाद और हस्तमैथुनके बुरे परिणामको दूर करनेके लिये, नक्स-वोमिका बहुत ही उपयोगी है। अम्लकी वीमारी, अग्निमान्द्य आदि पाकाशयकी गडवडी भी साथ ही लगी रहती है। ईर्षालु, द्वेषी और क्रोधी मनुष्योंके लिये नक्स-वोमिका विशेष उपयोगी है। रोगीमें अनुभवाधिक्य बहुत अधिक रहता

कैलि-ब्रोमेटम ६x (विचूर्ण), ३०, २००—लिंगमें कड़ापन आये विना ही स्वप्नमें वीर्यपात हो जाता है। स्वप्नदोषके वाद रोगी मन वहुत ही दुःखित हो जाता है, दोनों पैर सुन्न हो जाते हैं और उनमें झुनझुनी पैदा हो जाती है। स्मरण-शक्ति घट जाती है, वोलनेके समय रोगी भूल जाता है, कि वह क्या कहना चाहता है। उदास, निरुत्साह और दुःखित रहता है, स्मरण-शक्ति कमजोर और क्षीण हो जाती है तथा चित्तमें विभ्रम पैदा हो जाता है।

लाइकोपोडियम ३०, २००—हस्तमैथुन या वहुत ज्यादा स्त्री-सहवासकी वजहसे शुक्रमेह और ध्वजभंग पैदा हो जाता है, लिंग छोटा हो जाता है। ढीला और ठण्डा रहता है। वृद्धोंकी संगमकी वहुत अधिक इच्छा, पर लिंगमें कड़ापन नहीं आता। रतिक्रियाके वाद ही नींद आने लगती है, रति-कालमें जल्दी जल्दी वीर्यपात होता है। किसी वातके सोचनेकी ताकत नहीं रह जाती और स्मरण-शक्ति कमज़ोर हो जाती है।

नेट्रम-म्यूर ३०, २००—जननेन्द्रियकी वहुत अधिक कमजोरीके कारण रातके समय निद्रावस्थामें शुक्रस्राव हो जाता है। वीर्यस्राव हो जाने वाद वहुत अधिक कमज़ोरी मालूम होने लगती है। संगमके वाद भी स्वप्नदोष होकर शुक्रस्राव हुआ करता है। अण्डकोषके ऊपर और नीचे वहुत अधिक खुजली रहती है। स्त्री-सहवासके समय लिंगमें कड़ापन नहीं आता है इसीलिये, वीर्यपात नहीं होता है. इसीलिये शुक्र आकर जमा रहता है, उपदाह पैदा करता है और इसी वजहसे रातमें स्वप्नदोष होता

है। बार बार स्वप्नदोष और कमरमें दर्द होता है। रातके समय पसीना होता है। दोनों पैरोंमें ताकतका न रहना और विषाद भाव पैदा होना दिखाई देता है।

नेट्रम-फास ६x, ३०—स्वप्नदोष और बहुत ज्यादा शुक्र क्षयकी वजहसे कमरमें कमजोरी मालूम होने लगती है और घुटने काँपने लगते है, बहुत ज्यादा शुक्रक्षयकी वजहसे पक्षाघात हो जाने पर भी यह विशेष फायदा करता है।

नूफर-लूटियम ६, ३०—ध्वजभंग पर कामोत्तेजक बातें कहने अथवा इस तरहके व्यवहारसे अनजानमें आप ही आप वीर्यपात हुआ करता है। जरा भी प्रतिवाद करनेपर रोगी अपना धीरज खो देता है—यह मानसिक लक्षण इसके रोगीमें अकसर दिखाई दिया करता है।

नक्स-वोमिका ३०, २००—उत्तेजक पदार्थ खाने-पीने पर रातके समय अश्लील सपने देखकर वीर्यस्राव हो जाया करता है। सहजमें ही कामोद्रेक होता है और सवेरेके वक्त बहुत ही तकलीफ देनेवाला लिंगमें कड़ापन आया करता है। प्रातःकालके समय बार बार स्वप्नदोष होता है। पीठमें दर्द पैदा हो जाता है, बहुत ज्यादा इन्द्रिय सेवनके बाद और हस्तमैथुनके बुरे परिणामको दूर करनेके लिये, नक्स-वोमिका बहुत ही उपयोगी है। अम्लकी बीमारी, अग्निमान्द्य आदि पाकाशयकी गड़बड़ी भी साथ ही लगी रहती है। ईर्षालु, क्रोधी और क्रोधी मनुष्योंके लिये नक्स-वोमिका विशेष उपयोगी है। रोगीमें अनुभवाधिक्य बहुत अधिक रहता

कैलि-ब्रोमेटम ६x (विचूर्ण), ३०, २००—लिंगमें कड़ापन आये विना ही स्वप्नमें वीर्यपात हो जाता है। स्वप्नदोषके वाद रोगी मन वहुत ही दुःखित हो जाता है, दोनों पैर सुन्न हो जाते है और उनमें झुनझुनी पैदा हो जाती है। स्मरण-शक्ति घट जाती है, बोलनेके समय रोगी भूल जाता है, कि वह क्या कहना चाहता है। उदास, निरुत्साह और दुःखित रहता है, स्मरण-शक्ति कमजोर और क्षीण हो जाती है तथा चित्तमे विभ्रम पैदा हो जाता है।

लाइकोपोडियम ३०, २००—हस्तमैथुन या वहुत ज्यादा स्त्री-सहवासकी वजहसे शुक्रमेह और ध्वजभंग पैदा हो जाता है, लिंग छोटा हो जाता है। ढीला और ठण्डा रहता है। वृद्धोंकी संगमकी वहुत अधिक इच्छा, पर लिंगमें कड़ापन नहीं आता। रतिक्रियाके वाद ही नींद आने लगती है, रति-कालमें जल्दी जल्दी वीर्यपात होता है। किसी वातके सोचनेकी ताकत नहीं रह जाती और स्मरण-शक्ति कमजोर हो जाती है।

नेट्रम-म्यूर ३०, २००—जननेन्द्रियकी वहुत अधिक कमजोरीके कारण रातके समय निद्रावस्थामें शुक्रस्राव हो जाता है। वीर्यस्राव हो जाने वाद वहुत अधिक कमजोरी मालूम होने लगती है। संगमके वाद भी स्वप्नदोष होकर शुक्रस्राव हुआ करता है। अण्डकोषके ऊपर और नीचे वहुत अधिक खुजली रहती है। स्त्री-सहवासके समय लिंगमें कड़ापन नहीं आता है इसीलिये, वीर्यपात नहीं होता है. इसीलिये शुक्र आकर जमा रहता है, उपदाह पैदा करता है और इसी वजहसे रातमें स्वप्नदोष होता

है। बार बार स्वप्नदोष और कमरमें दर्द होता है। रातके समय पसीना होता है। दोनों पैरोंमें ताकतका न रहना और विषाद भाव पैदा होना दिखाई देता है।

नेट्रम-फास ६x, ३०—स्वप्नदोष और बहुत ज्यादा शुक्र क्षयकी वजहसे कमरमें कमजोरी मालूम होने लगती है और घुटने काँपने लगते हैं, बहुत ज्यादा शुक्रक्षयकी वजहसे पक्षाघात हो जाने पर भी यह विशेष फायदा करता है।

नूफर-लूटियम ६, ३०—ध्वजभंग पर कामोत्तेजक बातें कहने अथवा इस तरहके व्यवहारसे अनजानमें आप ही आप वीर्य-पात हुआ करता है। जरा भी प्रतिवाद करनेपर रोगी अपना धीरज खो देता है—यह मानसिक लक्षण इसके रोगीमें अकसर दिखाई दिया करता है।

नक्स-वोमिका ३०, २००—उत्तेजक पदार्थ खाने-पीने पर रातके समय अश्लील सपने देखकर वीर्यस्राव हो जाया करता है। सहजमें ही कामोद्रेक होता है और सवेरेके वक्त बहुत ही तकलीफ देनेवाला लिंगमें कड़ापन आया करता है। प्रातःकालके समय बार बार स्वप्नदोष होता है। पीठमें दर्द पैदा हो जाता है, बहुत ज्यादा इन्द्रिय सेवनके बाद और हस्तमैथुनके बुरे परिणामको दूर करनेके लिये, नक्स-वोमिका बहुत ही उपयोगी है। अम्लकी बीमारी, अग्निमान्द्य आदि पाकाशयकी गड़बड़ी भी साथ ही लगी रहती है। ईर्षालु, द्वेषी और क्रोधी मनुष्योंके लिये नक्स-वोमिका विशेष उपयोगी है। रोगीमें अनुभवाधिक्य बहुत अधिक रहता

है, साधारण-सी बिना किसी दोषवाली निर्दोष बातपर भी चिढ़ उठता है, थोड़ी भी उपयुक्त ओषधि सहन नहीं होती, थोड़ी-सी गड़बड़ीसे भी डर जाता है। गोलमाल, बातचीत, चमकीली रोशनी, तेज गन्ध और गाना-बजाना रोगी किसी तरह भी सहन नहीं कर सकता। मानसिक परिश्रममें बहुत ही अधिक असमर्थता और अनिच्छा रहती है।

फास्फोरिक-एसिड १८, ३०—शुक्रक्षयके बहुत दिनों तक रहनेवाले दुष्परिणामकी फास्फोरिक एसिड एक बहुत ही बढ़ियाँ दवा है और बड़ी उपयोगिताके साथ इसका व्यवहार हुआ करता है। जब सभी स्नायुमण्डल बहुत ही सुस्त हो पड़ते हैं, उस समय यह बहुत लाभदायक होता है। पीठ और जंघा या घुटने कमजोर हो जाते हैं। चलनेके समय रोगीमें कपकपी होती है। जननेन्द्रियकी कमजोरी, संगम या स्वप्नदोषके बाद ही बहुत सुस्ती मालूम होती है। स्वप्नावस्थामें बार बार कमजोर करनेवाला शुक्रस्राव हुआ करता है। लिंगमें कड़ापन आते न आते अथवा न होकर ही वीर्यस्राव हो जाता है।

चायना के साथ इसकी बहुत-से विषयोंमें समानता है। दोनों ही दवाओंमें कमजोरी और सुस्तीका भाव है। साधारणतः नये लक्षणमें चायना और पुराने लक्षणमें फास्फोरिक एसिडसे लाभ होता देखा जाता है।

फास्फोरिक एसिडका रोगी बहुत ही निरुत्साह और भवि-ष्यके विषयमें व्याकुल हो पड़ता है। उसकी स्मरण-शक्ति क्षीण हो जाती है और किसी विषयको वह सोच नहीं सकता है।

फास्फोरस ३०, २००—वार वार तकलीफ देनेवाला
का कड़ापन और वीर्यस्राव हो जाना। स्त्री-सहवास करनेकी
त ही प्रवल इच्छा फास्फोरसका एक विशेप लक्षण है (कैन्थरिस,
त-वोमिका और कैल्केरिया-कार्वमें भी इस ढंगका लक्षण है।
तु इसके विपरीत लक्षण रहनेपर, अर्जेण्टम-नाइट्रिकम, हिपर-
फर और लाइकोपोडियमका व्यवहार हुआ करता है)। मस्तिष्क
कमजोरी और शरीरमें जगह जगह कीड़ा रेंगनेकी तरह मालूम
ता है। पीठमें जगह जगहपर जलन होती है, हिलने-डोलनेपर
ा मालूम होता है, मानो पीठ टूट जायगी।

लम्बे पर क्षीण शरीरवाले मनुष्योंके लिये यह उपयोगी है।
स्मरण-शक्तिका घट जाना, मानसिक परिश्रम करनेकी इच्छा
न होना। किसी विषयमें मन नहीं लगा सकना प्रभृति कितने
ऐसे मानसिक लक्षण उसमें रहते दिखाई देते हैं, जो फास्फो-
; एसिडमें भी हैं।

पिकरिक एसिड ३०—नींदके समय लिंगमें कड़ापन आ
ा है और इसके साथ ही वार वार वीर्यस्खलन होता है, नींदके
कमरमें दर्द। मस्तिष्ककी कमजोरी, पढ़ने-लिखनेके काममें
रहनेवाले अध्यनशील या व्यवसायमें उलझे हुए मनुष्योंके
सर्ग। थोड़ी-सी उत्तेजना या मानसिक परिश्रमसे ही सर-दर्द
जाता है और पीठकी रीढ़की मज्जामें जलन होती है। पृष्ठ
ाकी वीमारीके साथ लिंगका बहुत अधिक उद्रेक होना।
त अधिक समयतक स्थायी लिङ्गोद्रेक और बहुत ज्यादा

शुक्र निकल जाना। पुरुषोंका कामोन्माद (excessive sexual inclination in male)। पीठकी रीढ़की मज्जामें जलन मालूम होना और सुस्ती आ जाना।

सेलिनियम ३०—जननेन्द्रिय बहुत ही शिथिल और आप ही आप बूँद बूँद वीर्य टपका करता है। पाखाना पेशाब होने बाद वीर्य-क्षरण, आप ही आप मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थिसे रसस्राव होना। मानसिक परिश्रमसे और नींद न आनेके कारण सुस्ती बढ़ जाती है ; संगमकी बहुत इच्छा पर इसके साथ ही ध्वज-भग। स्त्री-सहवासकी नाना प्रकारकी चिन्ताएँ मनमें उदय होती हैं, पर रोगीमें सहवासकी ताकत नहीं रहती है। लिङ्गमें पूरा पूरा कड़ापन नहीं आता है। स्त्री-संगम करनेपर बहुत जल्द वीर्यपात हो जाता है और देरतक उसको तकलीफ देनेवाली अनुभूति बनी रहती है। स्त्री-सहवासके बाद रोगीका स्वभाव क्रोधी हो जाता है।

सलफर ३०, २००—रातके समय बार बार और आप ही आप वीर्यस्राव हो जाता है। इसीलिये, दूसरे दिन सबेरे बहुत अधिक सुस्ती मालूम होती है। लिंगमें शिथिलता आ जाती है, अण्डकोष भी शिथिल हो जाता है और झूल पड़ता है। संगमकी चेष्टा करनेपर बहुत जल्द यहांतक कि स्त्रीको छूनेपर ही वीर्यपात हो जाता है। पीठमें दर्द और कमजोरी मालूम होती है, कमजोर, क्षीण, रोगियोंके लिये सलफर विशेष उपयोगी है। उत्तापका आवेश, पैरोंमें ठण्डक मालूम पड़ना और माथेकी चांदीमें उत्ताप मालूम होना, सलफरका विशेष लक्षण है।

स्टैफिसेग्रिया ३०—पढ़नेवाली अवस्थामें विद्यार्थियों का स्वप्नदोष। हमेशा प्रेम-सम्बन्धी बातें ही सोचनेकी इच्छा, इसके साथ ही रमणेच्छा बहुत तेज हो जाती है। जननेन्द्रियके उपदाहकी वजहसे धातुदौर्बल्य और शुक्रमेह। अण्डकोषमें दर्द, बहुत अधिक काम-प्रवृत्तिके परिचालनकी वजहसे अथवा बहुत ज्यादा रतिक्रियाके कारण स्मरण-शक्ति घट जाती है। कभी कभी चित्तमें उद्वेग पैदा हो जाता है और कभी उदासी आ जाती है।

जिङ्कम ३०, २००—अगर बहुत दिनोंतक स्थायी शुक्रमेह का यह नतीजा हो कि मेलनकोलिया या अवसाद् वायुके लक्षण दिखाई देने लगें तो जिङ्कम फायदा करता है।

प्रबल और बहुत देरतक स्थायी लिंगका कड़ापन और उसकी उग्रताकी वजहसे संगमके समय बहुत जल्द ही वीर्यपात हो जाता है, स्वप्नदोष हो जाता है।

आनुसंगिक उपाय—धातुक्षीणताकी बीमारीमें दवा का सेवन करनेके साथ ही साथ कितने ही आनुसंगिक नियम भी पालन करने पडते हैं। हमेशा इस बातपर ध्यान रखना चाहिये कि मन हमेशा प्रसन्न रहे। सवेरे और शामको कुछ देरतक निर्मल हवामें घूमना बहुत अच्छा है। सवेरे और सहन होनेपर तीनों शाम भी नहाना कितनी ही बार बहुत फायदा करता है। साधु-संग और धर्म-सम्बन्धी पुस्तकें पढ़ना, इस बीमारीमें बहुत फायदा करता है। नाटक, उन्यास, और श्रृङ्गार रसकी पुस्तकें (वे भले ही राधाकृष्ण सम्बधी क्यों न हों) तथा बुरी संगत, सब तरहसे

और यत्नके साथ त्याग देनी चाहिये। नियमित भावसे व्यायाम करना फायदा करता है। हलकी, जल्द पचनेवाली पर पुष्ट चीजें खाना उत्तम है। इसके विपरीत, मांस अण्डा वगैरह उत्तेजक खाद्य सामग्री और बहुत अधिक मसालेदार चीजें एकदम त्याग देनी चाहियें। सब तरहकी विलासिता त्यागकर ब्रह्मचर्यका पालन करना ही इसे आरोग्य करनेका श्रेष्ठ उपाय है।

ध्वजभंग ।

(IMPOTENCE)

स्त्री-सहवासकी ताकतका एकदम घट जाना, या थोडा घट जाने को ध्वजभंग कहते हैं। इसमें जनन-यंत्रमें कमजोरी पैदा हो जाती है, स्नायुओंमें उत्तेजना कम होती है अथवा संगमेच्छा होनेपर वह बिलकुल ही उत्तेजित ही नहीं होता। सम्भोगकी इच्छा तो होती है, पर लिंगमें भरपूर कडापन नहीं आता और असमयमें ही वीर्यपात हो जाता है। इसमें वास्तविक सहवास सुख और फलमें बाधा पड जाती है। प्रकृत ध्वजभंगमें इतना भी नहीं होता और पुरुषाङ्गकी उत्थान-शक्ति बिलकुल ही नहीं रह जाती है।

साधारणतः इस देशमें १८।१६ वर्षकी उमरसे लेकर ५० वर्षकी उमरतक रति-सुखके सम्भोगकी इच्छा और शक्ति बलवान रहती है। किसी किसीमें इसमें गडबडी भी दिखाई देती है। शीत प्रधान देशमें यह शक्ति और भी ज्यादा दिनोंतक बनी रहती है। जो अधिक शारीरिक और मानसिक परिश्रम करते हैं, उनकी संगम-इच्छा हर समय बलवती नहीं रहती, बल्कि उसके विपरीत जो परिश्रम नहीं करते और हमेशा उत्तेजक पदार्थ आदि खाया करते हैं, उनकी संगम इच्छा बढ़ी हुई दिखाई देती है।

कारणतत्व या Etiology और **भावीफल** या Prognosis आंशिक (partial) और सम्पूर्ण (completo), क्षणिक (of short duration) और दीर्घ-स्थायी (of long dura-

ध्वजभंग।

(IMPOTENCE)

स्त्री-सहवासकी ताकतका एकदम घट जाना, या थोड़ा घट जाने को ध्वजभंग कहते हैं। इसमें जनन-यंत्रमें कमजोरी पैदा हो जाती है, स्नायुओंमें उत्तेजना कम होती है अथवा संगमेच्छा होनेपर वह बिलकुल ही उत्तेजित ही नहीं होता। सम्भोगकी इच्छा तो होती है, पर लिंगमें भरपूर कडापन नहीं आता और असमयमें ही वीर्यपात हो जाता है। इसमें वास्तविक सहवास सुख और फलमें बाधा पड जाती है। प्रकृत ध्वजभंगमें इतना भी नहीं होता और पुरु-पाङ्गकी उत्थान-शक्ति बिलकुल ही नहीं रह जाती है।

साधारणतः इस देशमें १८।१६ वर्षकी उमरसे लेकर ५० वर्षकी उमरतक रति-सुखके सम्भोगकी इच्छा और शक्ति बलवान रहती है। किसी किसीमें इसमें गडबडी भी दिखाई देती है। शीत प्रधान देशमें यह शक्ति और भी ज्यादा दिनोंतक बनी रहती है। जो अधिक शारीरिक और मानसिक परिश्रम करते हैं, उनकी संगम-इच्छा हर समय बलवती नहीं रहती, बल्कि उसके विपरीत जो परिश्रम नहीं करते और हमेशा उत्तेजक पदार्थ आदि खाया करते हैं, उनकी संगम इच्छा बढ़ी हुई दिखाई देती है।

कारणतत्व या Etiology और **भावीफल** या Prog-nosis आंशिक (partial) और सम्पूर्ण (complete), क्षणिक (of short duration) और दीर्घ-स्थायी (of long dura-

और यत्नके साथ त्याग देनी चाहियें। नियमित भावसे व्यायाम करना फायदा करता है। हलकी, जल्द पचनेवाली पर पुष्ट चीजें खाना उत्तम है। इसके विपरीत, मांस अण्डा वगैरह उत्तेजक खाद्य सामग्री और बहुत अधिक मसालेदार चीजें एकदम त्याग देनी चाहियें। सब तरहकी विलासिता त्यागकर ब्रह्मचर्यका पालन करना ही इसे आरोग्य करनेका श्रेष्ठ उपाय है।

ध्वजभंग ।

(IMPOTENCE)

स्त्री-सहवासकी ताकतका एकदम घट जाना, या थोडा घट जाने को ध्वजभंग कहते है। इसमें जनन-यन्त्रमें कमजोरी पैदा हो जाती है, स्नायुओंमें उत्तेजना कम होती है अथवा संगमेच्छा होनेपर वह बिलकुल ही उत्तेजित ही नहीं होता। सम्भोगकी इच्छा तो होती है, पर लिंगमें भरपूर कड़ापन नहीं आता और असमयमें ही वीर्यपात हो जाता है। इसमें वास्तविक सहवास सुख और फलमें बाधा पड जाती है। प्रकृत ध्वजभंगमें इतना भी नहीं होता और पुरुषाङ्गकी उत्थान-शक्ति बिलकुल ही नहीं रह जाती है।

साधारणतः इस देशमें १८।१६ वर्षकी उमरसे लेकर ५० वर्षकी उमरतक रति-सुखके सम्भोगकी इच्छा और शक्ति बलवान रहती है। किसी किसीमें इसमें गडबडी भी दिखाई देती है। शीत प्रधान देशमें यह शक्ति और भी ज्यादा दिनोंतक बनी रहती है। जो अधिक शारीरिक और मानसिक परिश्रम करते हैं, उनकी संगम-इच्छा हर समय बलवती नहीं रहती. बलिक उसके विपरीत जो परिश्रम नहीं करते और हमेशा उत्तेजक पदार्थ आदि खाया करते हैं, उनकी संगम इच्छा बढी हुई दिखाई देती है।

कारणतत्व या Etiology और **भावीफल** या Prognosis आंशिक (partial) और सम्पूर्ण (complete). क्षणिक (of short duration) और दीर्घ-स्थायी (of long dura-

tion) इत्यादिके हिसाबसे ध्वजभगके नाना प्रकारके कारणोंका उल्लेख किया जा सकता है।

बहुत दिनोंतक निस्तेज करनेवाली बीमारियाँ भोग करनेके बाद भी थोड़े दिनोंके लिये ध्वजभग पैदा हो जा सकता है। तेज मनोविकार, चित्तमें क्षोभ, शोक, आयी हुई रमणीके प्रति अनुराग की कमी इत्यादि कारणोंसे जो ध्वजभग हो जाता है, वह क्षणिक होता है। वह सांघातिक नहीं होता, यह सहजमें ही आरोग्य हो सकता है। बहुत दिनोंका मैथुनका अभ्यास और बहुत अधिक स्त्री-सहवासके कारण जो शुक्रमेह पैदा हो जाता है, उससे भी ध्वजभग पैदा हो जाता है। प्रमेह, अण्डकोष प्रदाह, मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थिकी बीमारियाँ तथा जनन-यन्त्रकी दूसरी दूसरी बीमारियोंकी वजहसे भी ध्वजभग हुआ करता है। सुर्ती, गाँजा, अफीम, मार्फिया इत्यादि बहुत ज्यादा नशाके सेवनके कारण ध्वज-भग पैदा हो जाता है।

अगर ठीक ठीक इलाज और आनुसंगिक उपाय किये जायं तो इन सब कारणोंसे पैदा हुआ ध्वजभग आरोग्य हो सकता है। पर और भी कितनी ही ऐसी दूसरी वजहें हैं, जिनकी वजहसे ध्वजभग होता है। उनकी चिकित्साका परिणाम वैसा सन्तोषजनक नहीं होता बल्कि अपेक्षाकृत दुःसाध्य होता है। जैसे—मस्तिष्क या पीठकी रीढ़में चोट लगनेके कारण या उनकी दूसरी बीमारियोंके कारण जनन-यंत्र आदिके स्नायुओंकी प्रतिफलित क्रिया या reflex action की वजहसे ध्वजभंगका पैदा हो जाना। इसकी वजहसे लिंगेन्द्रिय और अण्डकोष पतले पड़ जाते हैं। स्क्रोटल हार्निया

(scrotal hernia), इसमें पुरुषांग या लिंगेन्द्रिय मुष्क (स्क्रोटम) में डूब जाती है। बहुमूत्रकी बीमारीके साथ या बहुत अधिक चर्बी बढ़ जानेकी वजहसे ध्वजभंगकी जो बीमारी पैदा हो जाती है, वह अपेक्षाकृत दुःसाध्य हो जाया करती है।

जहाँ organic deformity या यांत्रिक-विकार वर्त्तमान रहता है, वहाँ आरोग्यकी आशा कुछ भी नहीं देखी जाती। पुरुषांगकी कमी या लिंगके आकारमें विकार (deformity of penis) रहता है, उसका नीचे या ऊपरकी ओर टेढ़ापन, पूरा पूरा विकास न प्राप्त होना, लिंगमुण्डके छेदका पीछेकी ओर रहना, glans penis या लिङ्गमुण्डका न रहना, गामाटा, सैंकर या चोट की वजहसे लिंगके कड़ापनमें बाधा इत्यादिको यांत्रिक विकार कहते हैं।

इस बीमारीमें अधिकांश स्थानोंमें सूज़ाक, गर्मी या बहुत दिनों का हस्तमैथुनका अभ्यास और बहुत अधिक स्त्री-सहवास प्रभृति कारणोंका इतिहास पाया जाता है।

लक्षण (Symptoms)--जननेन्द्रियमें कमजोरी पैदा हो जाती है, स्नायुओंमें उत्तेजना कम होती है और संगमकी इच्छा होनेपर वे भरपूर उत्तेजित नहीं होते, सम्भोगकी इच्छा तो होती है, पर लिंगमें पूरा पूरा कड़ापन नहीं आता और असमयमें ही वीर्यपात होकर सहवासका वास्तविक आनन्द और फल भी प्राप्त होनेमें बाधा आ जाती है। असली ध्वजभंगमें इतना भी नहीं होता और लिंगमें कड़ापन आनेकी शक्ति ही नहीं रह जाती।

रोगीकी आशंका धीरे धीरे प्रबल होती जाती है, ८

उत्पन्न होनेकी शक्ति नष्ट होती जाती है, यह सोचकर रोगी घोर चिन्तामें आ पड़ता है। इस चिन्तासे उसमें रोग-सन्दिग्धता (hypochondriasis) उपस्थित हो जाता है, रोगी बहुत ही दुःखित हो पड़ता है। इसके साथ ही सरमें चक्कर आना, सर-दर्द, कलेजा धड़कना, कब्जियतके साथ अजीर्ण, स्नायविक अवसन्नता, नींदका न आना प्रभृति लक्षण प्रकट होते हैं।

स्त्रियोंकी नपुंसकता—(Impotency of the females)—कितने ही कारणोंसे स्त्री-पुरुषका पूरी तरह रतिक्रिया का कार्य जब नहीं होता या उसमें बाधा प्राप्त हो जाती है, तो स्त्रियोंकी सन्तान उत्पन्न करनेकी शक्ति नष्ट हो जाती है। इसीको स्त्रियोंकी नपुंसकता या Impotency of the females कहते हैं। Sterility या वन्ध्यात्वके साथ इसका कोई भी सम्बन्ध नहीं है। वन्ध्या स्त्री नपुंसक हो भी सकती है और नहीं भी हो सकती है। स्त्री-योनिमें पुरुषांगके प्रवेशमें बाधा पड़ जाना इम्पोटेन्सीका अन्यतम कारण है। यह बाधा आजन्मसे (congenital) भी हो सकती है अथवा बादके समयमें भी किसी कारणसे बाधा पैदा हो जा सकती है। अगर स्त्री-जननेन्द्रियके दोनों कपाटोंके सिरे आपसमें जुड़े रहकर योनि-पथको एकदम रोके रहें—अगर ऐसा हो जाये तो यह भी इम्पोटेन्सी ही है। यह जन्मके समयसे ही रह सकता है अथवा उसके बाद भी श्वेतप्रदरका स्राव अथवा दूसरे प्रकारके प्रदाह प्रभृतिसे हो जा सकता है। स्त्रियोंका सतीच्छद या हाइमेन साधारणतः पहली बार ही रम-

करनेके समय फट जाता है, पर उसमें यदि छेद नहीं रहता, या अगर उससे योनिपथ ढका रहता है, तो गड़बड़ी होती है। वह स्वभावतः ही कोमल और लचीला रहता है, परन्तु यदि ऐसा हो, कि वह लचीला न होकर कड़ा हो तो स्त्री-नपुंसक (इम्पोटेण्ट) बनी रहती है। *

योनिकी बनावटमें नाना प्रकारकी गडबडी अथवा योनि-गात्र जुड जानेपर भी स्त्रियाँ नपुंसक हो जाती हैं, योनि या जरायुमें अर्बुद तथा वस्तिगह्वरकी अस्थि विकृत रहनेकी अवस्थामें भी स्त्रियों में नपुंसकता पैदा हो जाती है। ऐसे स्थानपर नश्तर लगवानेकी जरूरत पडती है। over-sensitiveness of the vagina या vaginismus अर्थात योनिकी अत्यन्त स्पर्श-असहिष्णुतासे भी स्त्रियाँ नपुंसक हो जाया करती हैं।

इस तरहकी नपुंसक स्त्रियोंसे संगमकी चेष्टा करनेपर बहुत दर्द हुआ करता है। उनके पेरिफेरल स्नायुमें उपदाह (irritation) या अनुभवाधिक्य (over-sensitiveness) होनेकी वजह से रोगिनीको अकड़न या कानवलशन (convulsion) तक हो जा सकती है। योनिकी पेशीके आक्षेपिक आकुंचनके कारण

---

* कड़ा और लचीला सतीच्छद संगमकी क्रियामें व्याघात पैदा करता है, परन्तु कितने ही स्थानोंपर ऐसा देखा गया है, कि पुरुषका वीर्य स्त्री-अंगपर गिरकर शुक्र-कीट स्त्री-योनिके भीतर प्रवेश कर गया और स्त्री-बीजके साथ मिलकर गर्भका संचार हो गया है। ऐसे स्थानपर प्रसवके समय सतीच्छदको काटकर प्रसव कराना पड़ता है।

संगमकी क्रिया पूरी पूरी नहीं हो पाती, इस तरहका दर्द और इन सब असुविधाओंके कारण नपुंसक स्त्रीको बाध्य होकर संगममें बाधा देनी पडती है और धीरे धीरे उसकी संगमेच्छा भी चली जाया करती है, स्वास्थ्य खराब हो जाता है और नाना प्रकारके उपसर्ग पैदा हो जाया करते हैं ।

चिकित्सा ।

एग्नस कैस्टस ३०, २००—संगमेच्छाका घटना, एक तरहसे प्रायः लोप ही हो जाती है । इच्छाके बिना ही वीर्य-स्राव हो जानेके साथ ध्वजभंग, पुरुषाङ्ग इतना शिथिल और ढीला रहता है, कि कामोद्दीपक बातोंके सोचनेपर भी लिङ्गमें कडापन नहीं आता । अण्डकोषकी गांठ ठण्डी, सूजी हुई और कडी रहती है । लिङ्गेन्द्रिय छोटी और ढीली पड जाती है, ध्वजभंगके साथ पुराना प्रमेह रोग । जवानीमें बहुत अधिक इन्द्रिय-परिचालन करने पर भी बुढापेमें उसी तरह काम-वृत्ति चरितार्थ करनेकी इच्छा तो रहती है, पर शक्ति नहीं रहती, बहुत बार प्रमेह हो जानेके बाद ध्वजभंगके साथ अगर प्रमेह मौजूद हो तो यह और भी ज्यादा फायदा करता है । लिङ्गके मुँहपर पीले रंगका लसदार स्राव लगा रहता है (yellow viscid discharge sticking at the mouth of the orifice), ध्वजभंगमें लिङ्ग आकारमें छोटा रहता है, शिथिल रहता है और ठण्डा रहता है (penis small, relaxed and cold) ।

एसिड-फास १८, ३०, २००—बहुत ज्यादा स्त्री-संगम अथवा हस्तमैथुनकी वजहसे ध्वजभग। बोलनेके समय कलेजेमें कमजोरी मालूम होना, मस्तिष्क दुर्बल, रोगी हमेशा दुःखित रहा करता है, सभी कामोंमें वैराग्यका भाव पैदा हो जाता है। बहुत ज्यादा परिमाणमें बदबूदार पीवकी तरह बलगमके साथ अगर खांसी आती हो तो एसिड-फास बहुत ज्यादा फायदा किया करता है। रतिक्रियाके समय एकाएक लिङ्ग शिथिल पड जाता है और वीर्य स्खलनमे बाधा पड जाया करती है। सगमके बाद और स्वप्नदोप के बाद कमजोरी। बार बार कमजोर करनेवाला वीर्यस्राव होता है। लिङ्गकी कमजोरीकी वजहसे वीर्यस्राव हो जाना, इसके साथ ही हस्तमैथुन-दोप, रति-प्रकृतिकी कमी। हस्तमैथुनका रोगी अपने पाप अभ्यासके कारण दुःखित होता है। लिङ्गमुण्डमें भार मालूम होता है, खासकर पेशाव करनेके समय, इसके साथ ही उसके चारों ओर कुटकुटाहट होती है।

अर्जेण्टम-नाइट्रिकम ३०, २००—ध्वजभंगमें लिङ्ग सूखकर छोटा हो जाता है। रोग भोगकर, जीर्ण-शीर्ण युवक भी वृद्धोकी तरह दिखाई देते है। दिन-रात अनजानमें पेशाब निकला करता है, इसके साथ ही प्रमेह रहनेपर यह और भी ज्यादा फायदा करता है। सरमें चक्कर आता है और कानमें भों भों आवाज होती है। ऊंचा मकान देखनेसे ही रोगीके सरमें चक्कर आता है और ऐसा मालूम होता है, मानो यह चक्कर खाकर गिर पड़ेगा।

एनाकार्डियम ३०, २००—जिन सब युवकोंका हस्त

मैथुन या वेश्यागमनके कारण स्वास्थ्यभंग हो जाता है, वे ध्वजभंग हो गया है, ऐसी आशंका कर विवाह करना नहीं चाहते। उनके लिये यह बहुत ही उत्तम दवा है। इसके सेवनसे सम्भोग करनेकी शक्ति पैदा होती है। बहुत क्रोधी, बात काटनेवाला और व्याधि-शंकामें ग्रस्त रोगीके लिये यह ज्यादा फायदेमन्द है। स्मरण-शक्तिका घट जाना। रोगी बहुत ही उत्कण्ठित रहता है और इस बातसे डरा करता है, कि कोई बुराई न आ जाये।

आर्निका ६x, ३०, २००—चोट लगकर अगर ध्वजभंग पैदा हो गया हो, तो इसका बहुत ही सफलता-पूर्वक व्यवहार होता है।

बैराइटा-कार्ब ३०, २००—इन्द्रिय-शक्तिका घट जाना, अण्डकोष और उसके बीचकी जगहकी खाल उधड़ जाती है। अण्डकोषके चारों ओर पसीना होता है। दोनों अण्डकोष ढीले होकर सिकुड़ जाते हैं। वृद्धोंका ध्वजभंग। मानसिक दुर्बलता, मानो मानसिक वृत्तियोंका बिलकुल ही विकास नहीं होता। जड़ भरतकी तरह (like idiot and imbecile) रहता है।

ब्यूफो २००, १०००—हस्तमैथुनकी न रोकी जा सकने वाली इच्छा, हस्तमैथुन करनेके लिये रोगी एकान्त स्थान खोजा करता है। मृगी या अकड़न, ध्वजभंगके लिये बहुतसे इस दवाकी बहुत अधिक प्रशंसा करते हैं। अगर कोई दूसरी दवा सेवन करनेपर कोई विशेष फायदा न दिखाई दे तो इसे व्यवहार कर देखना चाहिये। इसकी ऊँची शक्तिसे बहुत फायदा होता है। इसका निम्न क्रममें कभी भी व्यवहार न करना चाहिये।

कैनाबिस सैटाइवा ३०, २००—बहुत अधिक रति-क्रियाके कारण ध्वजभंग। लिङ्ग फूला पर स्पष्ट कड़ापन नहीं आता। खड़े होनेपर अण्डकोषमें दबावके साथ टनक मालूम होती है। मूत्रमार्गमें जलन और दर्द होती है, समूचा मूत्रमार्ग प्रदाहित-सा मालूम होता है, छूनेपर उसमें दर्द मालूम होता है। पेशाब दो धारोंमें निकलता है।

कैल्केरिया-कार्ब २००, १०००—प्रबल संगमेच्छा, पर लिंगमें कड़ापन देरसे आता है। संगमके समय बहुत जल्दी जल्दी वीर्यपात हो जाता है, वीर्यस्रावके समय जलन होती है और डंक मारनेकी तरह दर्द होता है। बार बार स्वप्नदोष होनेके कारण शरीर और मन दोनों ही कमजोर हो पड़ते हैं।

कैलेडियम ३०—कामकी उत्तेजना न होना और सपना देखकर वीर्यस्राव। सोनेकी अवस्था और निद्रितावस्थामें आराम मालूम होता है। गरम पानी सेवन करनेपर रोगीको आराम नहीं मिलता और ठण्डा पानी भी पसन्द नहीं करता है।

कोबाल्टम ६x, ३०—बहुत ज्यादा स्त्री-सङ्गम और स्वप्नदोषकी वजहसे ध्वजभंग। कमरमें बेहद दर्द, बैठनेपर दर्द बढ़ जाता है। दोनों पैरोंमें कमजोरी मालूम होती है। स्वप्न-दोष या बहुत अधिक स्त्री-संगमकी वजहसे कमरमें दर्द।

कोनायम ३०, २००—लिंगमें कमजोरी, परन्तु काम-वासना पूर्ण करनेकी बहुत अधिक इच्छा; स्त्री-सहवासकी बिल-कुल ही शक्ति नहीं रहती। स्त्रीको देखने यहाँतक कि मन हो

मन सोचनेपर भी, आप ही आप वीर्य निकल जाता है। यदि बहुत कुछ चेष्टा करनेपर लिंगमें कुछ कड़ापन आता भी है, तो वह आलिंगन करनेके समय ही शिथिल हो पड़ता है और उसके बाद ही कमज़ोरी और मानसिक कष्ट पैदा हो जाते हैं। इन सब लक्षणोंके साथ एक तरहका सरमें चक्कर आनेका भाव भी अगर रहे तो उसका बहुत सफलता-पूर्वक व्यवहार होता है। सोनेपर या इधर उधर करवट बदलनेपर अथवा सर हिलानेपर सरका चक्कर बढ़ जाया करता है।

चायना ३०, २००—बहुत ही प्रबल संगमेच्छा, कामोद्दीपक कल्पनाओंके साथ ध्वजभग होना। रातके समय बार बार स्वप्नदोष, उसमें रोगी अपनेको बहुत कमज़ोर अनुभव करता है। बहुत दिनोंतक, बहुत ज्यादा शुक्रक्षरणके दुष्परिणामकी वजहसे ध्वजभंग हो जाना।

डामियाना ф—स्नायविक दुर्बलताकी वजहसे इन्द्रियकी ताकतका घट जाना या ध्वजभंग। वृद्धोंकी धारणा-शक्तिकी कमी. पाखाना या पेशाबके समय काँखनेपर वीर्य निकल जाना। ध्वजभंगकी यह एक बहुत ही लाभदायक दवा है। यह दवा १० से १५ बूँदकी मात्रामें या मूल अरिष्टका कुछ दिनोंतक व्यवहार करनेपर बहुत अधिक फायदा करता है।

जेलसिमियम ६x, ३०—जननेन्द्रियमें उत्तेजना होती है, पर कमज़ोरी भी बनी रहती है। लिंगमें कड़ापन आकर अनजानमें शुक्र निकल जाता है। पाखाना होनेके समय वीर्य निकल

जाता है, लिंग ठण्डा और शिथिल रहता है। अण्डकोषमें खींचन की तरह दर्द, शामके वक्त थोडी भी उत्तेजनाके साथ थोड़ा थोड़ा वीर्य निकल जाना, मानसिक अवसन्नता, जननेन्द्रियमें उपदाह (irritation)। चेहरा उतरा हुआ और बदरंग और आँखोंके चारों ओर नीला घेरा रहता है। स्वप्नदोष और हस्तमैथुनका दुष्परिणाम दूर करनेकी यह बहुत ही लाभदायक दवा है। रोगी चलनेके समय डगमगाता है। किसी तरहका कामोत्तेजक स्वप्न देखे बिना ही रातके समय प्रायः स्वप्नदोष हो जाता है। इसी वजहसे लिङ्गमें भी शिथिलता आ जाती है। इसका विशेष लक्षण है, अण्डकोषका ठण्डा रहना और उसमें पसीना होना। सम्पूर्ण ध्वजभंग न होनेपर भी ध्वजभंगके बहुत-से लक्षण जेलसिमियम में देखनेको मिलते हैं।

हाइपेरिकम ६x, ३०—मेरुदण्डमें चोट लगकर अगर ध्वजभंग हो जाये तो इस दवासे बहुत ज्यादा फायदा देखा जाता है।

हाइड्रोकोटाइल एशियाटिका ३०—(यह दवा हमारी देशी जडी ब्राह्मीसे तैयार होती है)—अण्डकोषमें सूजन के साथ ध्वजभंग। जननेन्द्रियमें खुजली और जलन। मूत्रस्थलीके ग्रीवादेशकी उत्तेजना और हमेशा ही पेशाब करनेकी इच्छा बनी रहना। रोगी अकेला रहना पसन्द करता है, किसीका संसर्ग उसे अच्छा नहीं लगता।

लाइकोपोडियम ३०, २००, १०००—ध्वजभंग, जनन-यन्त्र छोटा पड जाता है, ठण्डा और ढीला हो जाता है। हस्त-मैथुनके बाद ध्वजभंग। आलिङ्गनके समय रोगी सो पड़ता है,

उसके लिङ्गमें कड़ापन नहीं आता। बहुत अधिक परिणाममें कमजोर करनेवाला वीर्यस्राव। मुष्कत्वक और उरुदेशमें जखम, रोगी बहुत चिड़चिडा, अहंकारी और उद्धत रहता है। हमेशा ही सबपर अविश्वास करता है। उसकी स्मरण-शक्ति बहुत कमजोर हो जाती है। हमेशा मृत्यु-सम्बन्धी सपने देखा करता है। स्वप्नदोष और अनजानमें आप ही आप वीर्यस्राव होकर धीरे धीरे ध्वजभंग पैदा हो जाता है। इसमें लाइकोपोडियमसे बहुत फायदा हुआ करता है। हस्तमैथुनकी वजहसे पैदा हुआ ध्वजभंग और वृद्धोंकी पुरुषत्वहीनतामें यह विशेष उपयोगी है।

नक्स-वोमिका ३०, २००—सहजमें ही कामोद्रेक हो जाता है, अकसर ही लिङ्गमें उत्तेजना हुआ करती है, पर कमजोरी भी बनी रहती है। सङ्गमके समय लिंग शिथिल हो जाता है। स्वप्नदोष, खासकर हस्तमैथुनके बाद, या बहुत अधिक इन्द्रिय-सेवनके कारण ध्वजभंग। अराडकोषका प्रदाह, ईर्षालु, द्वेषी और क्रोधी मनुष्योंके लिये यह विशेष उपयोगी है। इसके रोगीके सामने एकदम निर्दोष बात कहनेपर भी वह चिढ़ उठता है। बहुत अधिक मानसिक परिश्रम करनेवाले पर व्यायाम न करनेवाले मनुष्योंके ध्वजभंगमें भी इसका बहुत सफलताके साथ व्यवहार होता है।

नूफर लूटिया ६x, ३०—ध्वजभंग, इसके साथ ही कोई कामोत्तेजक बात कहने या किसी तरहकी कामोत्तेजक व्यवहार करनेपर अनजानमें वीर्यस्राव हो जाया करता है।

ओनस्मोडियम ३०—स्मरण-शक्तिका घट जाना। सङ्गमेच्छा एकदम ही नहीं रहती। इसमें रोगी अपने मन ही मन समझता है, कि उसे ध्वजभग हो गया है। कभी कभी लिङ्गमें थोड़ा कड़ापन आता भी है, पर स्त्री-सहवासके समय जल्दी जल्दी वीर्यस्खलन हो जाता है।

फास्फोरस ३०, २००—बहुत अधिक कामकी उत्तेजना और अस्वाभाविक वीर्यस्खलनके बाद ध्वजभंग। प्रमेहकी वजहसे अण्डकोषका प्रदाह हो जाने बाद आबमजूल (हाइड्रोसील) की बीमारी, इसके साथ ही काम-शक्तिकी कमजोरी, बहुत दिनोंतक विवाह न करनेकी वजहसे, स्त्री-संसर्ग न होनेके कारण जो स्वाभाविक काम-प्रवृत्तिके दमनकी चेष्टा करते हैं, उनमें भीतरी उत्तेजना होकर अगर क्रमशः ध्वजभंग हो जाये तो उन्हें फास्फोरस बहुत फायदा किया करता है। ध्वजभंगके कुछ दिन पहले बहुत अधिक कामोत्तेजना और कामोद्रेक हुआ करता है।

सेलिनियम ३०, २००—जननेन्द्रिय कमजोर, लिङ्गमें सहजमें ही कड़ापन नहीं आता, यदि होता भी है, तो बहुत विलम्ब से होता है, उसी समय ढीला हो जाता है। स्त्री-सहवासके समय बहुत जल्द वीर्यपात हो जाता है। कामेच्छा या रतिक्रिया की प्रबल इच्छा, पर ताकत और पुरुषत्वकी कमीके कारण वह इच्छा पूरी नहीं होती, रात्रिमें ३।४ बार स्वप्नदोष होता है, स्वप्न-दोषके बाद भयानक कमजोरी आती है और कमरमें दर्द होता है।

सैबाल सेरुलेटा १—अगर कमजोरीके कारण संगम

की ताकत न हो तो इस दवाके सेवनसे विशेष लाभ होता दिखाई देता है। इसके मदर-टिंचर ५।७ बूंदका प्रयोग करना चाहिये।

सलफर ३०, २००—माथेमें मानो आगकी लौ उठ रही है। नहानेकी इच्छा नहीं होती, रोगीको किसी तरह भी आनन्द नहीं मिलता, शरीरमें नाना प्रकारके चर्म-रोग मौजूद रहते हैं। केश रूखे रहते हैं और झड जाते हैं, पलकें लाल रहती हैं, मलद्वारमें जलन और जखमकी तरह मालूम होता है। दोनों अण्डकोष ढीले पड़ जाते हैं, इसके साथ ही ध्वजभंग। अनजानमें वीर्यस्राव होनेके साथ ही साथ पेशाबकी नलीमें जलन, रमण-शक्तिकी कमजोरी, इन लक्षणोंमें इसका प्रयोग होता है।

पथ्य आदि—दूध, घी, मक्खन, मांस, रोहित आदि मछलियां प्रभृति पुष्टिकर और पुरुषत्व-वर्द्धक पथ्य देना चाहिये। आयुर्वेदमें कहा है—बकरेके दोनों अण्डकोष, पीपलका चूर्ण और सैन्धव-लवणके साथ घीमें तलकर सेवन करनेपर, सौ स्त्रियोंसे रमण करनेका सामर्थ्य पैदा होता है। * ताजी रोहित मछली, मांस अथवा पुटी मछली घीमें तलकर खानेपर स्त्री-संसर्गमें शुक्र-क्षय नहीं होता। ×

---

* पिप्पली लवणोपेतौ बस्ताण्डौ क्षीरसर्पिषा।
साधितौ भक्षयेद् यस्तु स गच्छेत् प्रमदाशतम्॥

× आर्द्राणि मत्स्यमांसानि शफरीर्वा सुभर्जिताम्।
तप्ते सर्पिषि यः खादेत् स गच्छेत् स्त्रीषु न क्षयम्॥

चिकित्सा।

चोटकी वजहसे बीमारी हो जाये तो—'आर्निका' निम्न-शक्ति बहुत बढ़िया दवा है। अगर बीमारीका कारण हस्तमैथुन हो, तो 'टैरेण्टुला' ६x देना चाहिये और बहुत ज्यादा स्त्री-सहवासके बाद प्रवाह पैदा हो जाये तो 'एसिड-फास ६x या ३०' का प्रयोग हुआ करता है। जलन इसका अन्यतम लक्षण है, स्त्री-सहवास के बाद तकलीफ हो तो 'एलियम-सेपा ६x' फायदा करता है।

प्रवाहकी नयी अवस्थामें 'बेलेडोना ६x', 'पल्सेटिला ६x' और 'मर्क्युरियस ६x' उत्तम कार्य करते हैं। 'आर्जेण्ट-नाइट्रिकम ३०' और 'थूजा २००' दवाएँ भी व्यवहृत हुआ करती हैं। बहुत दर्द होनेपर—'बेञ्जोयिक एसिड', 'कैलि-आयोडेटम' और 'पेट्रोलियम' उत्तम दवाएँ हैं।

ग्रन्थिका कड़ापन होनेपर 'फास्फोरस' और 'सिनिसियो' उसकी बढ़िया दवाएँ हैं। उसमें भार मालूम होनेपर 'हाइड्रोकोटाइल' व्यवहृत होता है। पेशाब करनेके समय चिलक मार उठता है और इसी तरहके दर्दमें 'कैलि-नाइट्रम' और साधारण चिलक मारनेके दर्दमें 'कैलि बाइक्रोमिकम' का प्रयोग होता है। फोड़ेकी अवस्थाके अनुसार बेलेडोना, मर्क्युरियस, हिपर-सल्फर [illegible] और उसकी पुरानी अवस्थामें 'सल्फर ३०' का प्रयोग [illegible] है।

एकोनाइट १x, ३x—सर्दी लगकर बीमारीका पैदा हो जाना। इसके साथ ही थोड़ा या अधिक बोखार, मानसिक

[उद्वे]ग, बेचैनी, पानीकी प्यास, वहुत छटपटी और कातरता extreme restlessness and anguish), संध्याके समय या रातके समय तकलीफोंका बढ़ना। अन्तर्दाह, पर रोगी शरीरका कपड़ा नहीं उतार सकता, जाडा मालूम होता है। प्रवल, तेज और पुष्ट नाडी।

एपिस ६x, ३०—ग्रन्थिका बढना और सूजन। उसमें डंक मारनेकी तरह दर्द होता है। जलन और कडापन, periodical pain अर्थात दर्द पर्यायक्रमसे पैदा होता है। मूत्रकृच्छ्र, गदलेरङ्गका थोडा-सा पेशाव या लगातार पेशाव होते रहना, खाँसनेके समय और रातके समय बढ़ जाता है।

बेञ्जोयिक एसिड ३०—मुखशायी-ग्रन्थि वढ़ी हुई, खासकर वृद्धोंकी, इसके साथ ही बूँद बूँद पेशाव होना। गहरे भूरे रंगका पेशाव (dark brown colour) और उसमें वहुत ही तेज गन्ध रहती है : उपदंश और प्रमेह रोगवाले रोगियोंके लिये ज्यादा उपयोगी है।

बेलेडोना ३x, ६x—प्रदाहकी नयी अवस्थामें यह ज्याद[ा] उपयोगी है। रोगवाली जगहपर टपकका दर्द होता है। ज्व[र] चेहरा लाल और सर-दर्द प्रभृति उपसर्ग रहनेपर यह ज्या[दा] फायदा करता है।

बैरोस्मा क्रिनेटा १x, ३x—मुखशायी-ग्रन्थिका प्रदाह और मूत्राशयके उपदाहकी वजहसे पेशावकी राहसे श्लेष्मा और छोटी छोटी पथरीकी तरह पदार्थ (lithic acid calculi)

निकलते है। इसके साथ ही अकड़न और जलनकी तकलीफ भी बनी रहती है। हस्तमैथुन या इन्द्रिय-दोषकी वजहसे मुत्रनली या मुख-शायी-ग्रन्थिसे अनजानमें अगर स्राव निकलता हो, तो यह और भी ज्यादा फायदा करता है।

चिमाफिला ३x, ३०—मुखशायी-ग्रन्थिकी बीमारीकी यह एक बहुत ही फायदेमन्द दवा है। इसके साथ मूत्रकृच्छ्र, रह भी सकता है और नहीं भी रह सकता है; पर पेशावमें बहुत ज्यादा परिमाणमें डोरीकी तरह श्लेष्मा मिला रहता है। यह इसका प्रधान प्रयोग-लक्षण है। (great quantity of roby mucus in the urine)। रोगीको ऐसा अनुभव होता है, मानो वह एक गेंदपर बैठा हुआ है। मलद्वारके पास या पेरि-नियमकी जगहपर इसी तरहकी सूजन रहती है। (sensation of swelling in the perineum or near the anus as if sitting on a ball)। इसके साथ ही मूत्राशय या ब्लैडरका प्रदाह अगर वर्त्तमान रहे तो बहुत अधिक उपयोगिताके साथ इसका व्यवहार होता है।

केनाबिस इण्डिका १x, ६x—इसकी लक्षणावली भी 'चिमाफिला' की तरह ही है। मलद्वारके पास गेंदकी तरह सूजन, रोगी सोचता है, कि वह मानो गेंदपर बैठा हुआ है। वृक्ककमें थोड़ा थोड़ा प्रदाह और वृक्ककमें पुट्ठे तक जकड़ जानेकी तरह मालूम होता है। जलन करनेवाला मूत्रकृच्छ्र, बूँद बूँद पेशाब होता है। मानसिक दुर्बलता (mental weakness),

रोगी बोलता बोलता सूत्र खो देता है, क्या कह रहा था, यह एकदम भूल जाता है। यह प्रमेहके रोगियोंको ज्यादा फायदा करता है।

हिपर-सलफर ६x (विचूर्ण)—अगर ग्रन्थिमें फोड़ा होकर पीव हो जाये तो यह ज्यादा फायदा करता है।

मर्क्युरियस ६x (विचूर्ण), ३०—मुखशायी ग्रन्थिका प्रदाह और सूजन, ग्रन्थिमें कड़ापन भी रहता है। रक्तसंचय हो जानेकी वजहसे मूत्रस्तम्भ। मूत्रमार्गमें और पेशाब करनेके समय जलन, उपदंश और प्रमेह रोगियोंके लिये यह ज्यादा उपयोगी है। रातके समय और शय्याके उत्तापसे रोग-लक्षणोंका बढ़ना। मुखशायी-ग्रन्थिमें फोडा होकर पीव हो जानेपर भी इसका अत्यन्त उपयोगिताके साथ प्रयोग होता।

फास्फोरस ६, ३०, २००—ग्रन्थिमें कडापन, बहुत अधिक स्नायवीय दुर्बलता और कम्पन, बहुत शीर्णता। बाईं करवट या चित होकर सोनेपर रोग-लक्षणोंका बढ़ना। हस्त-मैथुन या स्त्री-संसर्गकी वजहसे बहुत ज्यादा शुक्रक्षय हो जानेके बादका ग्रन्थि-प्रदाह और उसका कडापन।

स्टैफिसेग्रिया ६x, ३०—हस्तमैथुनमें बहुत ज्यादा शुक्रक्षय हो जानेके बाद अगर मुखशायी-ग्रन्थिमें प्रदाह हो जाये तो यह ज्यादा फायदा करता है, खासकर वृद्धोंके ग्रन्थि-प्रदाहमें तो और भी फायदा करता है। बार बार पेशाब होना और पेशाब करनेके बाद भी वह बूंद बूंद टपका करता है। पीठमें दर्द, रातके

समय शयनावस्थामें वृद्धि। अण्डकोषमें दर्द, पारदके अपव्यवहार के बाद यह और भी उपयोगी है।

सलफर ३०, २००—पुरानी अवस्थामें, चुनी हुई दवाके प्रयोगसे भी जब इच्छानुसार फायदा होता नहीं देखा जाता, उसी समय अन्तर्वर्ती दवाके रूपमें इसकी दो एक मात्रा बहुत ही उपयोगिताके साथ व्यवहृत हो सकती है। सोरा दोषवाले रोगीके लिये यह और भी ज्यादा फायदेमन्द है।

थूजा ३०, २००—पुराने प्रमेहकी वजहसे मुखशायी-ग्रन्थि पर ही यदि हमला हो जाये तो इसका बहुत सफलता-पूर्वक व्यवहार होता है। डा० बूग इसकी विशेष प्रशंसा करते हैं और डा० हियुज नयी और पुरानी दोनों ही अवस्थाओंमें इसकी उपयोगिता स्वीकार करते हैं। मूत्रमार्गके मुँहपर पीब लिपटा रहता है और उसमेंसे पीला स्राव बहता है। पेशाब करनेके समय मूत्रमार्ग में जलन, बार बार पेशाबका वेग होना।

मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थिकी विवृद्धि ।

(HYPERTROPHY OR ENLARGEMENT OF THE PROSTATE GLAND)

साधारणतः बुढ़ापेमें यह ग्रन्थि बडी हो जाया करती है और बहुत तकलीफ हुआ करती है। मलद्वारमें अंगुली डालकर परीक्षा करनेपर इसका सहजमें ही पता लग जाता है। इसमें मूत्रनाली (urethra) संकुचित हो जाती है अर्थात सँकरी पड जाती है, पेशाब सहजमें नहीं निकलता, कितनी ही बार तो वीर्य निकलने की राह भी बन्द हो जाती है, पेशाब एकदम रुक जाता है, या बूँद बूँद पेशाब हुआ करता है। खडे होकर, दोनों पैर, दो ओर फैलाकर, सामनेकी ओर झुककर, पेशाब करनेकी चेष्टा अगर की जाती है, तो थोड़ा-सा पेशाब हो सकता है।

यह बहुत ही तकलीफ देनेवाली बीमारी है। तुरन्त आराम मिलनेके उद्देश्यसे कितने ही आदमी मूत्रशलाका (catheter) प्रवेश कराते हैं, पर इससे कुछ ज्यादा फायदा नहीं होता बल्कि हानि ही विशेष होती है। बार बार मूत्रशलाकाके प्रयोग करनेके कारण मूत्रनालीमें जखम पैदा हो जाता है और रोगीको और भी अधिक तकलीफ दिया करता है।

चिकित्सा।

आर्निका ३x या ६x—बार बार मूत्रशलाका (कैथिटर) पास करनेके कारण तेज दर्द रोकनेको यह सबसे उत्कृष्ट दवा है।

एपिस ६x या ३०—ग्रन्थिका बढ़ना, पेशाब बन्द या

बूँद पेशाव होना। पेशाव करनेके समय मूत्रनलीमें जलन प्रभृति लक्षणोंमें इसका व्यवहार होता है।

पलसेटिला ६x या ३०—प्रदाहके कारण विवृद्धि, बार बार पेशाब करनेकी इच्छा, पेशाबके बाद मूत्राशय या ब्लैडरमें अकडनकी तरह दर्द (spasmodic pain) होता है। यह उरु-देशतक फैल जाता है।

आयोडिन ३०—यह ग्रन्थियोंके कडापनमें व्यवहृत होता है। पेशाब करनेके पहले दोनों हाथोंसे मूत्राशय (ब्लैडर) को दबा रखना पडता है।

थूजा ३०, २००—सूजाककी वजहसे पैदा हुई बीमारीमें इसका बहुत सफलता-पूर्वक व्यवहार हुआ करता है।

पेराइरा-ब्रावा ३०—बार बार पेशाव होना, पेशाब धीरे धीरे और थोडा थोड़ा कर निकलता रहता है। पेशाव करनेके बाद भी कुथन रहती है।

कास्टिकम ३०, २००—कई बूँद पेशाब हो जाने बाद ही मूत्राशय (ब्लैडर) और मूत्रनालीमें तेज़ दर्द होने लगता है। परि-नियमके स्थानपर टपककी तरह दर्द होता है। नाड़ीकी गति उछलनेकी तरह मालूम होती है।

कोनायम ३०—बुढ़ापेकी बीमारीमें यह ज्यादा फायदा करता है। ग्रन्थिके बढ़ जाने और उसमें कड़ापन आ जानेकी वजहसे पेशाब निकलना निकलना बन्द हो जाता है। प्रोस्टेट-ग्रन्थि (मुत्राधारी-ग्रन्थि) से रस बहता है।

मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थिकी विवृद्धि।

कोपेइवा ३०—ग्रन्थिमें कड़ापन आ जानेपर यह फायदा
ता है, जलन और तकलीफके साथ बूँद बूँद पेशाव होता है।

डिजिटेलिस ६x, ३०—हृद्रोगके साथ ग्रन्थिके बढ़
जानेपर और खासकर वृद्धोंके लिये यह बहुत फायदेमन्द है।

फेरम-पिकरिकम ६x—मुखशायी-ग्रन्थिके बढनेकी यह
अन्यतम उत्कृष्ट दवा है।

लाइकोपोडियम ३०, २००—पेशावका वेग नहीं रोका
जा सकता। पेशाव करनेके लिये बैठनेपर, बहुत देरतक बैठे बैठ
राह देखे बिना पेशाव नहीं होता, पेशावमें लाल बालूकी तली
इकट्ठा होती है।

नेट्रम-सल्फ ३०—शरीरमें साइकोसिस या मापक विष
मौजूद रहनेपर यह फायदा करता है। श्लेष्मा और पीब-मिला
पेशाव होता है।

सैबाल-आयल ३, ३०—रति-शक्तिका न रहना, यह
लक्षण रहनेके साथ ही साथ अगर यह ग्रन्थि विवृद्धिकी बीमारी
हो तो यह फायदा करता है, पेरिनियमके खूब भीतर, गम्भीरतम
प्रदेशमें दर्द और तकलीफ मालूम होना; इस तकलीफको हटानेके
लिये रोगी बार बार अपनी बैठनेकी अवस्था बदला करता है।

पेट्रोलियम ३०—पुराने प्रदाहमें यह फायदा करता है,
बार बार थोड़ा थोड़ा पेशाव, लिंगेन्द्रियमें भरपूर कड़ापन नहीं आता।

सिपिया ३०—पेशाव करनेकी इच्छा, पर बहुत देरतक
बैठे रहे बिना पेशाव नहीं होता।

जिङ्कम ३०, २००—पीछेकी ओर टेढ़े होकर बैठ बिना बिलकुल ही पेशाव नहीं होता, पेशावके नीचे बालूकी तरह तली बैठती है।

ट्रिटिकम-रिपेन्स—वृद्धोंकी मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थि के बढ़नेकी वजहसे पेशाव रोध (retention of urine) और इसीलिये, पेशावमें नाना प्रकारकी तकलीफें होनेपर ट्रिटिकम रिपेन्स उसकी बढ़िया दवा है।

सैवाल सेरुलेटा—जिन्हे मूत्रशलाकाका प्रयोग किये बिना पेशाव नहीं होता, उनके लिये सैवाल सेरूलेटाका मूल अरिष्ट की मात्रा ४ बूँदके हिसाबसे देनेपर बहुत फायदा होता कहा जाता है।

× × × × ×

आप ही आप बूंद बूंद पेशाव होनेपर—एलोज, आर्निका, बेलेडोना, कास्टिकम, डिजिटेलिस, म्युरियेटिक एसिड, मेजेरियम, पल्सेटिला, पेट्रोलियम और स्टेफिसेग्रियाका प्रयोग होता है।

लगातार पेशाव करनेकी इच्छामें—एमोन-कार्ब, एमोन-म्यूर, एनाकार्डियम, एपिस, आरम, बेलेडोना, केन्थरिस, कोपेबा. डिजिटेलिस, आयोडियम, मर्कुरियस, म्यूरेटिक एसिड, फास्फोरस, फास्फोरिक एसिड, पलसेटिला, सिपिया, स्कुइला, सल्फर, थूजा।

पाखाना होनेके समय प्रोस्टेट-ग्रन्थिका स्राव—एग्नस-कैस्टस, एलूमिना, एनाकार्डियम, कैल्केरिया-कार्व, कोनायम, कोरेलियम, इलाप्स, हिपर-सलफर, इग्नेशियो, नेट्रम-कार्व, फास्फोरस, सिपिया, साइलिसिया, स्टाफिसेग्रिया, सलफर, जिङ्कम।

पेशाव कर लेने वाद भी फिर पेशाव करनेकी इच्छा—वैराइटा-कार्व, वोविस्टा, व्रायोनिया, कैल्केरिया-कार्ब, कास्टिकम, कार्वो-एनिमैलिस, डिजिटेलिस, लैकेसिस, मर्कुरियस, नेट्रम-कार्व, रूटा, सैवाडिला, स्टैफिसेग्रिया, थूजा, जिङ्कम।

पेशाव करनेके समय मूत्राशयके मुंहपर जलन—कैमोमिला, नक्स-वोमिका, पेट्रोलियम, सलफर।

पेशावकी पतली धार—ग्रैफाइटिस, नाइट्रिक-एसिड, सैण्डल-आयल, सार्सा-पैरिला, स्पञ्जिया, स्टैफिसेग्रिया, सलफर, टैराक्सेकम, जिङ्कम।

बहुत देरतक वेग देनेपर पेशाव होता है—एलूमिना, एपिस, कास्टिकम, हिपर-सलफर, मैफना, सिकेलि-कोर, सिपिया, टैराक्सेकम।

आर्काइटिस या अण्डकोष-प्रदाह ।

(ORCHITIS)

अण्डकोष-उपकोष या एपिडिडिमिस (epididimis—सिकुड़ी हुई शुक्र उत्पन्न करनेवाली नाड़ियाँ सब) और उनकी आवरक झिल्ली टियुनिका वेजाइनेलिस (tunica vaginalis) का जब प्रदाह हो जाता है, तो उसे आर्काइटिस कहते हैं । इसका प्रधान कारण प्रमेह और उपदंश ही होता है ।

इसके लक्षणोंको चार भागोंमें बाँटा जा सकता है। (क) अण्ड-कोषमें गोंदकी तरह क्षरण (plastic exudation) होकर, वह सूतकी तरहका आकार धारण कर लेता है । अण्डकोष और उपकोष या एपिडिडिमिस फूल उठता है अथवा कड़ा हो जाता है । (ख) अण्डकोष पक जाता है और उसमें पीब और रक्त पैदा होता है । (ग) अण्डकोषके भीतर रक्तस्राव होकर, वह जमा रह सकता है और (घ) हाइड्रोसील या एकशिराकी बीमारी हो जाती है । उसमें आवरक झिल्ली टियुनिका वेजाइनेलिस और कोषके भीतर जल-संचय होता है ।

चिकित्सा ।

एकोनाइट ३x या ६x—प्रदाहकी नयी अवस्थामें ज्वर, बेचैनी, प्यास, प्रभृति लक्षण वर्त्तमान रहनेपर इसका प्रयोग करना होगा ।

बेलेडोना ३x या ६x—प्रदाहित स्थान अगर फूला हो, लाल हो उठे, गरम मालूम हो, तो यही उसकी दवा है ।

हैमामेलिस—इसकी बढ़िया दवा है, इसका मूल अरिष्ट पन्द्रहगुने पानीके साथ धावनके रूपमें लगाया जा सकता है और भीतरी सेवनके लिये तथा सामान्य ज्वरभाव, अकड़न और उदासीके लिये इसका ३x क्रम व्यवहृत होता है ।

पल्सेटिला ६x या ३०—आर्काइटिस रोगकी यह एक बहुत ही उत्कृष्ट दवा है । अण्डकोषमें सूजनके साथ काटनेकी तरह दर्द । दाहिने अण्डकी सूजनमें इसके प्रयोगसे बहुत फायदा होता है ।

लाइकोपोडियम ३०—दाहिनी ओरके प्रदाहमें इसका प्रयोग होता है ।

लैकेसिस ३०—बायीं ओरके प्रदाहमें इससे बहुत फायदा होता है ।

स्पंजिया ६x—दर्द और सूजनके साथ अण्ड-प्रदाहमें इससे बहुत फायदा होता है । अण्डकोषमें दबावकी तरह दर्द, अण्डकोषसे लेकर शुक्रवाही नाड़ीमें सुई गड़नेकी तरह दर्द ।

होडोडेण्ड्रन ६x और **क्लिमेटिस** ६x—ये दोनो दवाएँ भी इन सब लक्षणोंमें व्यवहृत हुआ करती हैं । होडोडेण्ड्रनमें अण्डमें कड़ापन और सूजन रहती है तथा खींचनकी तरह दर्द होता है । उदरसे उरुतक दर्द होडोडेण्ड्रनमें दिखाई देता है, अण्डकोष खुजलाता है और उसमें बहुत पसीना होता है ।

क्लिमेटिसमें—दाहिने आधे भागमें सूजन दिखाई देती है, अण्ड शिथिल हो जाता है और झूला करता है । कुचिकित्सित

प्रमेहके बादके अण्ड-प्रदाहमें और बिना दर्दकी सूजनमें भी इससे बहुत लाभ दिखाई देता है।

मर्क्युरियस, नाइट्रिक-एसिड, नक्स-वोमिका सलफर, जिङ्कम प्रभृति भी उपयुक्त लक्षण वर्त्तमान रहनेपर व्यवहृत होते हैं।

प्रदाहकी पुरानी अवस्थामें—नये प्रदाहमें जिन सब दवाओंका व्यवहार होता है, उनमेंसे बहुत-सी दवाएँ पुरानी अवस्थामें भी काममें लायी जाती है।

पल्सेटिला ३० या २००—प्रमेहकी वजहसे पैदा हुए पुराने प्रदाहमें बहुत सफलता-पूर्वक व्यवहृत होता हैं।

क्लिमेटिस ३०—कुचिकित्सित प्रमेहके बादवाले पुराने प्रदाहमें यह लाभदायक होता हैं।

स्पंजिया—डाक्टर हेरिङ्ग कहते है, पुराना अण्डकोष-प्रदाह और उसके उपकोष या एपिडिडिमिसके प्रदाहमें स्पंजिया बहुत फायदा करता हैं। वार्कियोसिक या अंत्र-कोषिक अंत्र-वृद्धि में भी स्पंजियाका उपयोगिता-पूर्वक प्रयोग होता है।

मर्क्युरियस खासकर **मर्क-बिन आयोड** (उपदंशकी वजहसे पैदा हुई बीमारीमें), 'साइलिसिया' 'कोनायम' 'सिपिया' 'सल्फर' प्रभृति दवाओंका भी प्रयोग होता है। अण्ड-प्रदाहके साथ ध्वजभंग अगर मौजूद रहे तो कोनायमके प्रयोग से बहुत फायदा होता है।

एग्नोटेनस ६x, ३०—अण्डकोषकी सूजन और अण्ड-कोषका प्रदाह। रोगीकी काम-काज करनेकी इच्छा नहीं होती, वह निराश-सा रहता है। कमजोरी और शरीरका काँपना, शरीरमें जगह जगह भयानक दर्द रहता है।

आरम मेटालिकम ३०, २००—पुराना अण्डकोष-प्रदाह, खासकर यदि बीमारीका हमला दाहिनी ओर हो जाये। अगर उपदंश तथा पाराके दोषका इतिहास पाया जाये तो इससे और भी ज्यादा फायदा होता है। रोगीमें मानसिक अवसाद और उदासी रहती है। वह जीवनसे निराश रहता है (weary of life); रोगीके मनमें हमेशा ही आत्महत्याकी इच्छा बनी रहती है और इसी चिन्तासे वह बेचैन हो पड़ता है। दाहिनी ओरके अण्डकोषमें सूजन और छूनेपर दर्द मालूम होता है। अण्डका कड़ापन।

क्लिमेटिस ३x, ६x, ३०—सूजाकका स्राव रुककर अगर अण्डकोषमें प्रदाह पैदा हो जाये तो इससे बहुत ही फायदा होता है। (ऐसे स्थानपर 'पल्सेटिला' भी फायदा करता है)। अगर अण्डकोष फूलकर धीरे धीरे पत्थरकी तरह कड़ा हो जाये, तो क्लिमेटिसके प्रयोगसे बहुत लाभ होता है। अगर सूजाकका ठीक ठीक इलाज न हुआ हो तो उसके बादके अण्डकोष प्रदाहमें भी यह बहुत फायदा करता है। अण्डकोष ऊपरकी ओर खिंचता है, दाहिनी ओर सूजन रहती है, अण्डकोष प्रदाहित और दर्दसे भरा रहता है।

इरेक्थाइटिस (Erecthites) १x, ३x—सूजाकसे

मवाद आना रुककर अगर अण्डकोष-प्रदाह हो जाये, तो इरेक्थाइटिससे बहुत फायदा हुआ करता है। डा० हेलेनने इस दवाकी बहुत अधिक तारीफ की है। खासकर इस दवासे उन्होंने बहुत से प्रमेह और ग्लीटके रोगी आरोग्य किये हैं। रुके हुए सूजाकके मवादका अगर यह नतीजा हो, कि अण्डकोष-प्रदाह हो जाये तो यह 'क्लिमेटिस' और 'पल्सेटिला' औषधोंके सदृश दवा है।

हेमामेलिस ३x, ६x—सूजाकका मवाद आना रुककर अगर अण्डकोषमें प्रदाह हो जाये तो इससे फायदा हुआ करता है। रोगवाली जगहपर खींचनकी तरह दर्द और सूजन इसका विशेष लक्षण है। रुके हुए सूजाकके मवादकी वजहसे पैदा हुए रोग में यह क्लिमेटिस और पल्सेटिलाके सदृश है। क्लिमेटिसमें बहुत दर्द रहता है और अण्डकोष फूलकर पत्थरकी तरह कड़ा हो जाता है। हेमामेलिसमें काटनेकी तरह दर्द होता है और सूजन भी रहती है। इसमें क्लिमेटिसकी तरह कड़ापन नहीं रहता। हेमामेलिस जिस तरह भीतरी प्रयोगसे फायदा किया करता है, उसी तरह लगानेसे भी फायदा किया करता है।

आयोडिन ३०, २००—अण्डकोषमें सूजन और कड़ापन अथवा पुं०-शक्ति कमजोर पड़ जानेके साथ ही साथ अण्डका शीर्ण हो जाना। गण्डमाला ग्रस्त व्यक्तियोंके लिये यह ज्यादा फायदेमन्द है।

मर्क-सोल ६x (विचूर्ण), ३०—अण्डकोष प्रदाहके साथ अगर दूसरी जगहोंकी ग्रन्थियोंमें भी सूजन रहे तो इसमें लाभ

की तरह है । शुक्ररज्जुमें खींच रखनेकी तरह दर्द, कभी कभी तो यह दर्द उरु और उदरतक फैल जाता है । कभी कभी ऐसा मालूम होता है, मानो ग्रन्थिका भीतरी भाग चूर चूर हुआ जाता है । इसके बाद क्रमश: अण्डकोषमें atrophy या शीर्णता पैदा हो जाती है । वातज बीमारीमें यह ज्यादा फायदा करता है ।

स्पंजिया ६x, ३०—अण्डकोषका बढ़ना और सूजन। वहाँ कड़ापन पैदा हो जाता है । अण्डकोष तथा शुक्ररज्जुमें दर्द होता है । इसी दर्दके कारण ऐसा मालूम होता है, मानो कोई उसे जोरसे दबाये हुए है । जरा हिलने-डोलनेसे ही दर्द बढ़ जाता है । अण्डकोष और उपकोष या एपिडिडिमिसके पुराने प्रदाहमें स्पंजिया ज्यादा फायदा करता है ।

आनुसंगिक उपाय—इस तरह लंगोट ऊपर खींचकर बाँधना चाहिये कि अण्डकोष झूल न पड़े अथवा किसी दूसरी तरहसे अगर बाँध रखा जाये तो प्रदाह बहुत जल्द दब जा सकता है ।

हस्तमैथुन और उसके दुष्परिणाम।

(MASTURBATION AND ITS BAD EFFECTS)

कृत्रिम उपायोंसे रति-सम्भोग सुखको अनुभव करनेको हस्त-मैथुन कहते है। गरम देशोंमें बारह तेरह वर्षके बालक बालिकाओंमें यह पाप प्रवेश कर सकता है। यौवन-सुलभ अज्ञानताके कारण लोग इस हस्तमैथुन-रूपी अनिष्ट करनेवाले पापको करने लगते हैं और स्वप्नदोष प्रभृति नाना प्रकारको मारात्मक बीमारियों का बीज बो देते हैं। अगर एक बार यह दूषित अभ्यास लग जाता है तो बालक-बालिकाएँ उसे सहजमे त्याग नहीं सकतीं। हस्त-मैथुनकी दुर्निवार इच्छाको दमन करना उनके लिये, एक तरहसे, उनकी ताकतके बाहरकी बात हो जाती है।

जवानीके समय स्वभावतः संगमकी प्रवृत्ति पैदा हो जाती है। संगी-साथियोंके प्रलोभनमें पड़कर और उनका अनुकरण करते हुए, बालक-बालिकाएँ जननेन्द्रियकी उत्तेजनाकी यह प्रक्रिया सीखते हैं। इसमें जब सुख मिलता है, तो हाथसे वह क्रिया करनेका अभ्यास करते हैं, बुरे लड़के यह कु-कार्य अपने साथियोंको सिखाते है। अश्लील उपन्यास, नाटक प्रभृति पुस्तकें पढ़ना या तमाशा देखना, प्रेमकी कहानियाँ पढ़ना या पशुओंकी रतिक्रिया देखना, जननेन्द्रियको साफ नहीं रख सकना, आँतोंमें कृमि उत्पन्न हो जानेकी वजहसे भी इन सब अंगोंमें खुजली होती है और खुजलाते खुजलाते बालक इस कु-अभ्यासको आपसे आप आरम्भ कर देते हैं। जननेन्द्रियके पास या ऊपर दाद या खुजलीके कारण लिङ्गोद्रेक होनेके

कृत्रिम मैथुनकी प्रवृत्ति हो जाती है। लड़कपनमें जब ठीक ठीक शिक्षा नहीं होती और लड़के बुरी संगतमें पड़ जाते हैं, तो बहुतसे ... पापको करने लगते हैं।

इस पापमें लिप्त बालक-बालिकाओंमें नीचे लिखे लक्षण स्पष्ट दिखाई देते हैं। उनकी एकान्तमें रहनेकी इच्छा होती है, लजालू भाव, डरपोकपन, उदासी, स्वरभंग, स्मरण-शक्तिका घटना, सुस्ती, कर्कश स्वर, भूख न लगना, कब्जियत, ठीक ठीक दिखाई न देना या एकदम दिखाई न पड़ना, बोलनेमें भ्रम प्रभृति लक्षण रहते हैं। चेहरा बदरंग और शरीर दुर्बल हो जाता है। खासे बुद्धिमान और मेधावी बालक भी यह बुरा अभ्यास सीख जाने बादसे शारीरिक और मानसिक अवनत होते जाते हैं।

इससे मेरुदण्डमें बीमारी पैदा हो जाती है और फिर रोगका आक्रमण मस्तिष्कपर होकर मस्तिष्क रोग उत्पन्न हो जाता है। प्रमेह, बहुमूत्र, अजीर्ण प्रभृति बहुत-से ऐसे रोग पैदा हो जाते हैं। शरीरके सभी यन्त्रोंमें विकार उत्पन्न हो जाता है। चित्त-विकार, सुस्ती और आत्महत्या करनेकी इच्छा या एकाएक मूर्च्छा आ जाना या उन्माद रोगतक हो जा सकता है। अगर यह अभ्यास जल्द नहीं त्याग दिया जाता तो अन्तमें ध्वजभंगकी बीमारी ... जाती है। इतना ही नहीं, इससे बवासीर, भगन्दर, यक्ष्मा (...दिक), श्वास काम, ग्रहणी प्रभृति रोग भी पैदा हो ... हैं।

लड़का अगर अकेलेमें रहना चाहे या उसे ...
तो उसके अभिभावकको चुपचाप इसके ...
... चाहिये। जवानीके आरम्भमें लड़के

कृत्रिम मैथुनकी प्रवृत्ति हो जाती है। लड़कपनमें जब ठीक ठीक शिक्षा नहीं होती और लड़के बुरी संगतमें पड़ जाते हैं, तो बहुतसे इसी पापको करने लगते हैं।

इस पापमें लिप्त बालक-बालिकाओंमें नीचे लिखे लक्षण स्पष्ट दिखाई देते हैं। उनकी एकान्तमें रहनेकी इच्छा होती है, लजालू भाव, डरपोकपन, उदासी, स्वरभंग, स्मरण-शक्तिका घटना, सुस्ती, कर्कश स्वर, भूख न लगना, कब्जियत, ठीक ठीक दिखाई न देना या एकदम दिखाई न पड़ना, बोलनेमें भ्रम प्रभृति लक्षण रहते हैं। चेहरा बदरंग और शरीर दुर्बल हो जाता है। खासे बुद्धिमान और होशियार बालक भी यह बुरा अभ्यास सीख जाने बादमें शारीरिक और मानसिक अवनत होते जाते हैं।

इससे मेरुदण्डमें बीमारी पैदा हो जाती है और फिर रोगका आक्रमण मस्तिष्कपर होकर मस्तिष्क रोग उत्पन्न हो जाता है। प्रमेह, बहुमूत्र, [illegible] प्रभृति बहुत-से ऐसे रोग पैदा हो जाते हैं। शरीरके सभी यन्त्रोंमें विकार उत्पन्न हो जाता है। चित्त-विकार, सुस्ती और आत्महत्या करनेकी इच्छा या एकाएक मूर्च्छा आ जाना या उन्माद रोगाक्रान्त हो जा सकता है। अगर यह अभ्यास जल्द नहीं छुड़ा दिया जाय तो अन्तमें लड़कोंको बीमारी हो जाती है। [illegible] (हिस्टेरिक), [illegible] रोग भी पैदा हो सकते हैं।

[illegible]

देरतक अकेलेमें न रहने देना चाहिये तथा ऐसा उपाय करना चाहिये, कि उनमें धर्म और नीतिका ज्ञान पैदा हो। नाटक, उपन्यास, सिनेमा, थियेटर प्रभृति देखना एकदम बन्द कर देना चाहिये। यदि यह बात मालूम हो जाये, कि यह हस्तमैथुनके पापमें लिप्त है, तो तुरन्त उसे बराबरीकी उमरवाले किसी भी लड़केसे मिलना या एक बिछावनपर सोना बन्द कर देना चाहिये। अभिभावकोंको स्वयं संकोच त्यागकर इस अभ्यासका दोष और उसका भावी फल उसे समझा देना चाहिये। सहन हो, उतने ठण्डे पानीसे नहाना, व्यायाम, धर्म-उपदेश, धर्म-ग्रन्थका पढ़ना वगैरह कामोंमें उसे लगा रखना चाहिये। सोनेके पहले ठण्डे पानीसे हाथ, पैर और जननेन्द्रियको अच्छी तरह धो डालना उचित है।

चिकित्सा।

चायना ६—बहुत अधिक शारीरिक दुर्बलता, पेट-फूलना, जननेन्द्रियकी कमजोरी और एकान्तमें रहनेकी इच्छाका होना।

ओरिगेनम मेजोराना ३x—इसके सेवनसे हस्त-मैथुनका कु-अभ्यास घटता है। बहुतोंका ऐसा ही मत है, भोजन के पहले इसका सेवन कराना चाहिये।

नक्स-वोमिका ३०—हस्तमैथुनके दुष्परिणामकी वजह से अजीर्णकी बीमारी, सर-दर्द, कब्जियत प्रभृति हो जानेपर इसके सेवनसे बहुत फायदा होता है। हस्तमैथुनकी दुर्निवार इच्छा।

एसिड-फास ६—अगर जननेन्द्रियमें सहजमें ही उ

जना आ जाये, प्यास अधिक रहे और पेशाव भी ज्यादा होता हो। लिङ्गमें बहुत थोडी देरके लिये कड़ापन आता हो। कडापन यदि आता है, तो तुरन्त शिथिल हो जाता है और इसका परिणाम यह होता है, कि मनमें चिडचिड़ापन, क्रोध और वितृष्णा पैदा हो जाती है। इस अवस्थामें इसके प्रयोगसे बहुत फायदा होता है।

आस्टिलेगो ३०—हस्तमैथुनकी बेहद बढी हुई दुर्जय लालसा दमन करनेकी इसमें असाधारण शक्ति है।

कैल्केरिया-फास ६x—बायोकेमिक मतसे यह इस रोगकी सर्वश्रेष्ठ दवा है। जीवन-धारण और जीवन रक्षाका प्रधान उपकरण, धातुक्षयकी यह प्रधान दवा है।

राणा-व्यूफो ६—हस्तमैथुनके लिये रोगी हमेशा ही निर्जन स्थान खोजा करता है। हस्तमैथुनके परिणाम-स्वरूपमें मृगी रोग हो जाना।

बेलिस-पार ६—इस कु-अभ्यासके कारण सारा शरीर अस्वस्थ मालूम होना और चेहरेपर व्रण आदि निकलनेमें यह बहुत उपयोगी है।

रोग-सन्दिग्धता ।

(HYPOCHONDRIASIS)

यह एक काल्पनिक रोगोन्मत्तता है अर्थात इसका रोगी कल्पना किया करता है, कि उसका स्वास्थ्य बिलकुल बिगड गया है। इसी कारणसे वह विशेष व्याकुल रहता है और किसी तरह भी उसे आराम नहीं मिलता।

उसे हलकी-सी बीमारी भी बहुत भारी मालूम होती है। शरीरमे जो सब वास्तविक बीमारियाँ नहीं हैं ; अपनी कल्पनाके अनुसार उन्हें भी गहरी बीमारी हुई सोचकर व्याकुल होता रहता है। हमेशा बीमारीकी ही बात सोचा करता है, सबको—खासकर चिकित्सकको ढेर ढेर-से लक्षण बताया करता है। उसके सरमें चक्कर आता है, ब्रह्मतालुमें भार मालूम होता है। स्मरण-शक्ति धीरे धीरे क्षीण हो पडती है, अगर स्वप्नदोष होता है, अथवा पाखाना फिरनेके समय, जोर लगानेपर, वीर्य निकल जाता है तो सोचता है, कि उसकी जीवनी-शक्ति नष्ट हो गयी है। शरीरका संजीवन-रस (vital fluid) सब निकल गया है, अथवा उसे ध्वजभंग हो गया है। इसीलिये, अगर उसका विवाह हो गया रहता है, तो अपनी स्त्रीके पास नहीं जाता, जानेसे डरता है और उसे लज्जा मालूम होती है। अगर विवाह नहीं हुआ रहता है, तो विवाह नहीं करना चाहता है।

साधारणतः बहुत अधिक धातुक्षय हो जानेके कारण ही यह बीमारी पैदा होती है, पर मानसिक क्षोभ, काम-काजकी दुश्चि

बहुत तेज अजीर्ण रोग, पैतृक उन्मत्तताका इतिहास भी इसके अन्य कारण माने जा सकते है।

चिकित्सामें अनुसंगिक उपाय—रोगी चिकित्सक से बार बार अपनी तकलीफके विषयमें कहता है, एक ही बातको दस-पाँच बार कहता है। वह मन ही मन समझता है, कि शायद चिकित्सक अच्छी तरह नहीं समझ सके। इसलिये, यद्यपि उसके शरीरमें किसी तरहकी बीमारी नहीं दिखाई देती, तथापि उसकी बातें बहुत ध्यानसे सुननी पड़ती है, उसकी बीमारी आराम हो जायगी, इस सम्बन्धमें उसे विश्वास दिलाना पडता है। इसके साथ ही उसे बहुत तरहके उपदेश देने पड़ते हैं। इसी बीमारी की कल्पनामें कितने ही खाने-पीने नहानेतकका कठोर नियम बना लेते हैं। ठण्डे पानीमें डुबकी लगाकर नहाना और शरीरका पोषण करनेवाले उत्तम पुष्ट भोजन—इनका पहले प्रबन्ध करना चाहिये। सवेरे शाम थोड़ी देरतक खुली हवामें घूमना बहुत फायदा करता है। व्यायाम और शारीरिक परिश्रमकी भी बहुत आवश्यकता है। इस बातपर लक्ष्य रखना होगा, कि अच्छे ग्रन्थोंके पठन-पाठनमें मन लगा रहे।

औषधके द्वारा चिकित्सा।

आरम मेटालिकम ३०.२००—अगर उपदंश या पारा व्यवहार करनेका इतिहास पाया जाये तो इस दवाके व्यवहारसे बहुत फायदा होता है। हमेशा आत्महत्या करनेकी प्रवृत्ति:

किसी मानसिक चिन्ताके बाद ही ऐसा मालूम होता है, कि माथा फटकर टुकड़े टुकड़े हो जायगा।

अर्जेण्टम नाइट्रम ३०—मनमें निराशा भरी रहती है, सोचता है, कि उसकी बीमारी आराम न होगी। काम-काजसे डर मालूम होता है। बच्चोंकी तरह बातचीत करता है, रातमें बिछावनसे उठकर सबको उठा देता है और कहता है, कि वह अमुक समय मर जायगा। इस तरहकी मानसिक अवस्थामें अर्जेण्टमका बहुत उपयोगिताके साथ व्यवहार होता है।

कोनायम ३०, २००—यह कामातुर मनुष्योंकी बीमारीमें उपयोगी है, धातुदौर्बल्यके लक्षण, स्त्रीको देखते ही या उससे हँसी-दिल्लगी करते समय शुक्रस्खलन हो जाता है।

नक्स-वोमिका ३०, २००—क्षुब्ध चित्त, द्वेषी-स्वभाव-वाले रोगियोंके लिये यह उपयोगी है। जीवनसे अश्रद्धा ; नींदसे तृप्ति नहीं होती ; सवेरेके वक्त उपसर्गोंका बढ़ना।

नेट्रम-कार्ब ३०—रोगी दुःखित और चिड़चिड़े स्वभाव का रहता है। भोजनके बाद बीमारीके लक्षण बढ़ जाते हैं।

नेट्रम-म्यूर ३०, २००—दुःखित, निरुत्साह, रोनी प्रकृति, समझाने-बुझानेपर ये सब लक्षण और भी बढ़ जाते हैं। बहुत ही चिड़चिड़ा स्वभाव, सहजमें ही क्रोध आ जाता है। पुरानी कब्जियत, जिसमें कड़ा पाखाना होता है।

फास्फोरिक एसिड ३०—स्नायविक दौर्बल्यमें इसका अत्यन्त उपयोगिताके साथ प्रयोग होता है। उत्तेजना न होनेवाली

अवस्थामें यह और भी उपयोगी है। हस्तमैथुन, बहुत ज्यादा इन्द्रिय सेवन या मानसिक परिश्रमकी वजहसे व्याधि-शंका या रोग-सन्दिग्धता तथा उन्माद रोगमें यह बहुत फायदा करता है। बहुत ज्यादा मैथुन या कृत्रिम मैथुनकी वजहसे जननेन्द्रियकी क्षीणता, शिथिलता और स्तब्धता, बहुत ही उदासीन भाव। निरुत्साह और भविष्यके सम्बन्धमें व्याकुलता रहती है। किसीसे बात करनेकी इच्छा नहीं होती, स्मरण-शक्ति क्षीण हो जाती है।

पिकरिक-एसिड ३०—जो बहुत अधिक मानसिक परिश्रम करते हैं, अथवा काम-काजके भारसे दबे रहते हैं, उनकी मानसिक गड़बड़ीमें पिकरिक एसिड बहुत उपयोगिताके साथ व्यवहृत होता है। बहुत ज्यादा मेहनत करनेवाले विषयी लोगका सर-दर्द और पीठमें जलन तथा स्पर्शका सहन न होना।

फास्फोरस ३०, २००—बहुत अधिक इन्द्रिय सेवन या कृत्रिम मैथुनका जब यह परिणाम होता है, कि मानसिक गड़बड़ी पैदा हो जाती है, तो यह विशेष उपयोगिताके साथ व्यवहृत होता है। पुरुषोंका कामोन्माद, स्त्री-संसर्गकी दुर्दम्य इच्छा, बहुत उत्तेजना और हस्तमैथुनके बाद होनेवाले ध्वजभंगके साथ ही साथ मानसिक गड़बड़ी तथा चिन्ता-शक्तिका क्षीण पड़ जाना या घट जाना लक्षणमें इसका प्रयोग होता है।

स्टैफिसेग्रिया ३०—हस्तमैथुन या अनियमित इन्द्रिय सेवनका दुष्परिणाम-स्वरूप मानसिक गड़बड़ी· बहुत ज्यादा वीर्य-स्खलनके बाद स्मरण-शक्तिका घट जाना। अपने किये हुए

कर्मों पर बहुत अधिक विराग होनेके बाद, उसका बुरा नतीजा स्थानमें आकर अकड़न पैदा कर देता है। स्त्री-संसर्गकी इच्छा बहुत प्रबल हो जाती है, स्त्री-संसर्गके अन्तिम भागमें श्वास-कृच्छ्रताके लक्षण दिखाई देते हैं।

सलफर ३०, २००—जिनके शरीरमें पहलेका जखम और किसी तरहका उद्भेद या दाने थे, उनके लिये और जो कण्ठमाला या स्क्रोफुला धातुवाले हैं, उनके लिये यह विशेष उपयोगी है। छिपे हुए चर्म-रोगके कारण मानसिक गड़बड़ी। अप्रफुल्ल भाव, रोनी प्रवृत्ति, अच्छी तरह सोचने अथवा किसी विषयमें मन स्थिर नहीं रखा जा सकता। बहुत भुलक्कड़ प्रकृति, नामतक याद नहीं रहता, आमोद-प्रमोद हँसी-दिल्लगी, कुछ भी अच्छा नहीं लगता।

जिङ्कम मेटालिकम ३०, २००—बहुत अधिक इन्द्रिय सेवनकी वजहसे धातुदौर्बल्य और इसीका यह परिणाम हुआ हो, कि काल्पनिक रोगोन्मत्तता हो जाये। स्वभाव बहुत चिड़चिड़ा और क्रोधी रहता है।

अवस्थामें यह और भी उपयोगी है। हस्तमैथुन, बहुत ज्यादा इन्द्रिय सेवन या मानसिक परिश्रमकी वजहसे व्याधि-शंका या रोग-सन्दिग्धता तथा उन्माद रोगमें यह बहुत फायदा करता है। बहुत ज्यादा मैथुन या कृत्रिम मैथुनकी वजहसे जननेन्द्रियकी क्षीणता, शिथिलता और स्तब्धता, बहुत ही उदासीन भाव। निरुत्साह और भविष्यके सम्बन्धमें व्याकुलता रहती है। किसीसे बात करनेकी इच्छा नहीं होती, स्मरण-शक्ति क्षीण हो जाती है।

पिक्रिक-एसिड ३०—जो बहुत अधिक मानसिक परिश्रम करते हैं, अथवा काम-काजके भारसे दबे रहते हैं, उनकी मानसिक गड़बड़ीमें पिक्रिक एसिड बहुत उपयोगिताके साथ व्यवहृत होता है। बहुत ज्यादा मेहनत करनेवाले विषयी लोगका सर-दर्द और पीठमें जलन तथा स्पर्शका सहन न होना।

फास्फोरस ३०, २००—बहुत अधिक इन्द्रिय सेवन या कृत्रिम मैथुनका जब यह परिणाम होता है, कि मानसिक गड़बड़ी पैदा हो जाती है, तो यह विशेष उपयोगिताके साथ व्यवहृत होता है। पुरुषोंका कामोन्माद, स्त्री-संसर्गकी दुर्दम्य इच्छा, बहुत उत्तेजना और हस्तमैथुनके बाद होनेवाले ध्वजभंगके साथ ही साथ मानसिक गड़बड़ी तथा चिन्ता-शक्तिका क्षीण पड़ जाना या घट जाना लक्षणमें इसका प्रयोग होता है।

स्टेफिसेग्रिया ३०—हस्तमैथुन या अतिरिक्त इन्द्रिय सेवनका दुष्परिणाम-स्वरूप मानसिक गड़बड़ी; बहुत ज्यादा वीर्य-स्खलनके बाद स्मरण-शक्तिका घट जाना। अपने किये हुए

कर्मों पर बहुत अधिक विराग होनेके बाद, उसका बुरा नतीजा ध्यानमें आकर अकड़न पैदा कर देता है। स्त्री-संसर्गकी इच्छा बहुत प्रबल हो जाती है, स्त्री-संसर्गके अन्तिम भागमें श्वास-कृच्छ्रताके लक्षण दिखाई देते हैं।

सलफर ३०, २००—जिनके शरीरमें पहलेका जखम और किसी तरहका उद्भेद या दाने थे, उनके लिये और जो कण्ठमाला या स्क्रोफुला धातुवाले है, उनके लिये यह विशेष उपयोगी है। छिपे हुए चर्म-रोगके कारण मानसिक गड़बड़ी। अप्रफुल्ल भाव, रोनी प्रवृत्ति, अच्छी तरह सोचने अथवा किसी विषयमें मन स्थिर नहीं रखा जा सकता। बहुत भुलक्कड प्रकृति, नामतक याद नहीं रहता, आमोद-प्रमोद हँसी-दिल्लगी, कुछ भी अच्छा नहीं लगता।

जिङ्कम मेटालिकम ३०, २००—बहुत अधिक इन्द्रिय सेवनकी वजहसे धातुदौर्बल्य और इसीका यह परिणाम हुआ हो, कि काल्पनिक रोगोन्मत्तता हो जाये। स्वभाव बहुत चिड़चिड़ा और क्रोधी रहता है।

मस्तिष्क-दौर्बल्य ।

(BRAIN FAG)

बहुत ज्यादा इन्द्रिय-सेवनके साथ ही साथ मानसिक परिश्रम ही इसका प्रधान कारण मालूम होता है। मानसिक परिश्रम इसका उत्तेजक कारण भी माना जाता है।

सरमें दर्द और सरमें चक्कर, कमजोरी मालूम होना, नींद न आना। पीठमें दर्द, समूची पीठकी मज्जामें जलन मालूम होना, पीठकी रीढ़में कीड़ा रेंगनेकी तरह अनुभव होना। कलेजा काँपना, चिन्ता-शक्ति और स्मरण-शक्तिका क्षीण पड़ जाना प्रभृति इसके प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा ।

फास्फोरस ६x, ३०—इसकी प्रधान दवा है। फास्फोरस मस्तिष्कका एक प्रधान उपादान है। इस उपादानकी जब कमी हो जाती है, तभी मस्तिष्क दौर्बल्यकी बीमारी होती है। इसीलिये. होमियोपैथीके मतसे फास्फोरस ही इसकी प्रधान दवा है। कृत्रिम मैथुन या बहुत ज्यादा इन्द्रिय-सेवनसे जिनको मस्तिष्क-दौर्बल्यकी बीमारी हो गयी हो, उनके लिये फास्फोरस विशेष उपयोगी है।

पिक्रिक-एसिड ३०—बहुत ज्यादा मानसिक परिश्रमकी वजहसे मस्तिष्क दौर्बल्य। जो पढ़ने-लिखनेमें या दिन-, व्यवसायकी झंझटमें लगे रहते हैं, उनकी बीमारी, थोड़ी-सी

भी उत्तेजनासे, या मानसिक अथवा शारीरिक परिश्रम करनेके कारण सरका चक्कर बढ़ जाता है और पीठकी रीढ़में जलन होती है। विद्यार्थी, शिक्षक और बहुत ज्यादा परिश्रम करनेवाले व्यवसायियोंका सर-दर्द। सारे शरीरमें खासकर अंग-प्रत्यङ्गमें सुस्ती अनुभव होना।

नक्स-वोमिका ३०—क्रोधी स्वभाव, हिंसा-द्वेषपूर्ण व्यक्ति और जिन्हे पर्यायक्रमसे पतले दस्त आते हैं और कब्ज रहता है, उनके लिये यह उपयोगी है।

फास्फोरिक-एसिड १x, ३०—जिनको बहुत ज्यादा स्वप्नदोष होकर, बहुत अधिक वीर्य नष्ट हो गया है, उनके लिये फास्फोरिक-एसिड अत्यन्त उपयोगिताके साथ व्यवहृत होता है। सम्पूर्ण ध्वजभंग या स्मरण-शक्तिका कम पड़ जाना तथा रातके समय पसीना होना, इसके और भी दो विशेष लक्षण हैं।

इग्नेशिया ६x, ३०—पर्यायक्रमसे उदासी और प्रफुल्लता पैदा होना। जरा-सी बातमें ही रोने लगता है, नींद न आना प्रभृति लक्षणोंमें भी यह फायदा करता है।

कैल्केरिया-कार्ब ३०—दुःखित और रोनी-प्रकृति, सरमें चक्कर या सरके चक्करके साथ सर-दर्द, खासकर सवेरेका सर-दर्द, मानसिक परिश्रमसे, सर झुकानेपर और खुली-हवामें बढ़ता है। ब्रह्मतालुमें गरमी मालूम होती है।

एनाकार्डियम १२x, ३०, २००—हस्तमैथुनसे उत्पन्न अथवा नयी बीमारीके बादवाली मस्तिष्ककी दुर्बलतामें यह फायदा

करता है। बहुत अधिक अध्ययनसे उत्पन्न स्नायविक अवसन्नता और इन्द्रिय-दौर्बल्य तथा वीर्य-निकल जानेके कारण पैदा हुई, सुस्तीमें भी इसके व्यवहारसे बहुत फायदा होता है। स्मरण-शक्तिका बहुत घट जाना और शाप देने तथा शपथ-खानेकी दुर्निवार इच्छा, इसके प्रयोगके विशेष लक्षण हैं।

जिङ्कम ३०, २००—कृत्रिम मैथुन और बहुत ज्यादा इन्द्रिय-सेवनकी वजहसे अगर मस्तिष्क-दौर्बल्य हो जाये तो यह विशेष उपयोगी है। निरुत्साह और तेज दर्दके साथ सरमें दर्द और सरमें चक्कर आना, थोड़ी-सी शराब पीनेपर भी सरका चक्कर बढ़ जाता है। सरमें चक्कर, चलनेके समय बायें पार्श्वमें गिर पड़ना। मस्तिष्कके पक्षाघातके पूर्व-रूपमें बहुत उपयोगी है। अतृप्तिकर निद्रा, सपनेमें चिल्ला उठना है और चौंक पड़ता है।

लक्षणके अनुसार कोनायम, जेल्सिमियम, साइलिसिया, सल्फर प्रभृति दवाएँ भी व्यवहृत हुआ करती हैं।

पथ्य और आनुसंगिक उपाय—इस रोगमें मछली और मांस बहुत फायदेमन्द हैं। सवेरे ठण्डे पानीसे सरसे नहाना, विश्राम और भरपूर नींदकी बहुत अधिक आवश्यकता है।

मेलनकोलिया या विषाद-वायु ।
(MELANCHOLIA)

एक प्रकारके चित्त-विकारको मेलनकोलिया या विषाद-वायु कहते हैं। इसमें रोगीमें आत्महत्या करनेकी प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाती है। जीवन बहुत भार मालूम होता है, वह अपने जीवनसे ऊब जाता है। किसी तरहकी ऐसी उत्कण्ठासे जिसका उसको ज्ञान नहीं है अथवा निराशा या कोई भीतरी कष्टसे रोगी अभिभूत हो पडता है। कितनी ही बार तो रोगी विलाप करता है और ठण्डी सांसें लिया करता है। अगर उसे समझाया बुझाया जाता है या उससे सहानुभूति प्रकट की जाती है, तो रोगी उसपर ध्यान नहीं देता। बहुत-से विषयोंमें उसे सन्देह हो जाता है, हमेशा सन्दिग्ध-चित्त बना रहता है। बहुत ज्यादा हस्तमैथुन या इन्द्रिय सेवनका ही ऐसा परिणाम होता है। कोई भीतरी दबा हुआ शोक, व्यर्थ प्रणय, भग्न आशा प्रभृति कारणोंसे भी विषाद-वायुकी बीमारी पैदा हो जाती है।

चिकित्सा ।

एक्टिया रेसिमोसा या **सिमिसिफ्यूगा**—साधारणतः स्त्रियोंकी इस बीमारीमें सबसे ज्यादा फायदा करता है। सभी विषयोंमें सन्देह, उदासीनता और गुम-सुम चुपचाप पड़े रहना, बार बार लम्बी और ठण्डी सांसें लेना, उसे ऐसा मालूम होता है, कि एक गहरा काला मेघ उसे ढके हुए है और हृत्पि॰

सलफर ३०, २००—कण्ठमाला और विकृत धातुवाले मनुष्योंके लिये और इस बीमारीकी पुरानी अवस्थामें यह ज्यादा फायदा करता है। अगर कोई चर्म-रोग दबकर यह बीमारी हो गयी हो तो यह बहुत ही फायदा करता है।

प्रूनस ३०—धर्म-सम्बन्धी विषाद और दुबलापनके लक्षण में इसका प्रयोग होता है।

थूजा ३०, २००—प्रमेह रोगके बादवाले विषाद-वायुमें यह फायदा करता है। रोगी दु:खित और विरक्त-चित्त रहता है; क्षय रोगी, लिखने और बोलनेमें भूल करता है, सोच नहीं सकता है, धीरे धीरे बोलता है मानो वह शब्द खोज रहा है।

जिङ्कम ३०, २००—मस्तिष्क अवसाद, सरमें चक्कर आता है और चलते चलते बायीं ओर ढुलक जाता है। मस्तिष्कके पक्षाघातका पूर्वरूप। थोड़ी सी शराब पीनेसे रोग लक्षण बढ़ जाते हैं और रातमें नींदमें समूचा शरीर काँपता रहता है।

स्नायवीय-शिरोघूर्णन ।

(NERVOUS VERTIGO)

शिरोघूर्णन या सरमे चक्कर आना—यह बीमारी कितनी ह तरहकी होती है और बहुत तरहके कारणोंसे यह उत्पन्न हो जाय करती है। जैसे आँखकी बीमारी, कानकी बीमारी, पेटकी गड बडी, मृगी, गठिया प्रभृतिसे सरमें चक्कर आनेकी बीमारी पैद हो जाती है। पर नर्वस-वर्टिगो—अर्थात स्नायविक शिरोघूर्णन साधारणतः हस्तमैथुन या बहुत अधिक रति-क्रिया, बहुत अधिक मानसिक परिश्रम या अनियमित भावसे शराब, तम्बाकू, या चाय पीना इत्यादि कारणोंसे उत्पन्न होता है। इसके साथ ही अजीर्ण, पेट फूलना, नींद न आना, कमजोरी, कलेजा काँपना प्रभृति लक्षण भी वर्त्तमान रह सकते हैं।

इसमें कभी कभी माथेके भीतर कुछ हिलता हुआ मालूम होता है, कभी भों भो आवाज होती है, चलनेके समय कभी कभी सामनेकी ओर या बगलमें रोगी गिर जाता है या गिर पड़नेकी तरह हो जाता है। कभी कभी शराबियोंकी तरह ढलमलाया करता है, कभी ऐसा मालूम होता है, कि चारों ओरके पदार्थ चक्कर खा रहे हैं, इत्यादि लक्षण सब प्रकट होते हैं।

चिकित्सा।

जहाँ पैर रखता है, वहाँ पैर नहीं पड़ते, नींद नहीं आती, बेचैनी रहती है, माथा गरम और चेहरा लाल हो जाता है—

एकोनाइट, एगरिकस, एनाकार्डियम, अर्जेण्टम-नाइट्रिकम, आर्सेनिक, एस्टेरियस रूबेन्स ।

ऊपरकी ओर देखनेपर या एकाएक सर घुमानेपर, सरमें चक्कर आ जाता है—बेलेडोना, काकुलस, कोनायम, कैल्केरिया-कार्ब ।

वेगवती नदी या तेज धारका पानी देखनेपर सरमें चक्कर आ जाता है—साइक्लामेन, डिजिटेलिस, फेरम-मेट ।

पट होने या किसीके सहारे सर झुकाकर खड़े होनेपर घटना—जेल्सिमियम, ग्लोनोयन, ग्रेफाइटिस, इरिडगो ।

पट होनेपर बढ़ना—ग्लोनोइन ।

बायीं ओर सरमें चक्कर—आयोडिन ।

खुली हवामें बढ़ना—लिडम ।

मानसिक परिश्रमकी वजहसे बुद्धि-भ्रंश—मर्कुरियस, नक्स-वोमिका, ओपियम, पेट्रोलियम ।

मानसिक परिश्रमसे बढ़ना—पिकरिक-एसिड ।

दाहिनी ओरके सर-दर्दके साथ—सैंगुनेरिया ।

बायीं ओरके सर-दर्दके साथ—स्पाइजेलिया ।

सल्फर, थूजा, जिङ्कम प्रभृति दवाएँ भी लक्षणके अनुसार व्यवहृत होती हैं ।

कोई भी घटना याद नहीं रहती, रोगी पशुकी तरह हो जाता है। बढ़ी हुई अवस्थामें प्रकृत उन्माद रोग पैदा हो जाया करता है।

डिमनोमैनिया (Demonomania)—जिस उन्माद रोगमें रोगी अपनेको भूत प्रेतादिके आश्रित समझता है। (the patient fancies himself possessed by devils) इसीको डिमनोमनिया कहते हैं।

मानोमैनिया (Monomania)—रोगी किसी काल्पनिक विषयको इतने दृढ़ भावसे पकड़ रखता है, कि उससे किसी तरह भी उसे हटाया नहीं जा सकता। (Mania on one particular subject)।

मैनिया (Mania)—या उन्माद रोग। कोई कोई इसे प्रकृत उन्माद या insanity कहा करते हैं। पर वास्तवमें यह मनोविभ्रम या disordered intellect मात्र है। यह प्रकृत उन्माद का पूर्व-लक्षण है। कभी कभी यह एकाएक प्रकट हो जाता है, और कभी कभी इसके लक्षण धीरे धीरे उपस्थित होते हैं।

घटना और कारणके अनुसार मैनियाके और भी कई विभाग।

(क) पाइरोमैनिया (Pyromania)—घरमें आग लगानेकी प्रबल इच्छा (an irresistible desire to destroy fire)।

(ख) क्लेप्टोमैनिया (Kleptomania)—चौर्य-उन्माद (irresistible propensity to theft)—चोरी करने की अत्यन्त इच्छा।

(ग) ओटोफोमैनिया (Autophomania)—इसमें रोगीको केवल आत्महत्या करनेकी इच्छा होती है। (an irresistible desire to commit suicide)।

(घ) एण्ड्रोफोमैनिया (Androphomania)—इस में दूसरेको मारनेकी प्रबल इच्छा होती है (an irresistible desire to murder others)।

(ङ) थियोमैनिया (Theomania)—धर्मोन्माद; धर्म-सम्बन्धी काम करनेके सम्बन्धमें उन्मादका लक्षण प्रकट हो जाता है। (religious madness or melancholy)।

(च) सैटाइरियासिस (Satyriasis)—या पुरुषका कामोन्माद (excessive sexual inclination in males; स्त्रियोंका कामोन्माद—निम्फोमैनिया—Nymphomania)।

उन्माद (मैनिया) प्रभृति रोगोंकी संक्षिप्त चिकित्सा।

एनाकार्डियम—मानसिक शक्तियोंका बहुत जल्दी जल्दी क्षय होते जाना, यादाश्तका घटना।

आरम-मेटालिकम—आत्महत्याकी प्रवृत्ति और धर्मोन्माद ।

एगारिकस—प्रफुल्लता, पेशियोंका बहुत जोर जोरसे फड़कना ।

बेलेडोना—मस्तिष्कमें रक्तसंचय, नींद न आना इत्यादि ।

आयोडिन—डरपोक और मानसिक बलका घट जाना, कण्ठमाला धातु ।

इग्नेशिया—प्रेमभंग हो जानेकी वजहसे पैदा हुआ उन्माद अथवा रुके हुए शोकके कारण उत्पन्न उन्माद ।

हायोसायमस—लज्जा न रहनेके साथ कामोन्माद, अश्लील गाने गाना, धोती या साड़ी खोल डालना । रोगका कारण प्रेमका भंग होना ।

लैकेसिस—अपनी गरिमा प्रकट करनेवाला उन्माद, बहुत बकना, लगातार एक विषयसे दूसरेपर चले जाना ।

मर्क्युरियस—चिड़चिड़ा स्वभाव, हाथ-पैरोंका काँपना ।

नक्स-वोमिका—शराबियोंकी तरह सरमें चक्कर या ढलमलायी डगमगाती चाल ; बहुत ज्यादा इन्द्रिय-सेवन या बहुत अधिक मानसिक परिश्रमका दुष्परिणाम ।

ओपियम—भय या शोककी वजहसे पैदा हुआ उन्माद ।

प्लाटिना—यह दवा स्त्रियोंके लिये ज्यादा उपयोगी है । स्त्री-जननेन्द्रिय अस्वस्थ रहनेके कारण पैदा हुआ उन्माद रोग । धर्मोन्माद, गर्वितभाव ।

फास्फोरिक एसिड—हस्तमैथुन या बहुत ज्यादा इन्द्रिय-सेवनके कारण उन्माद, स्नायविकता ।

.. मार्थमें चोटके कारण बीमारी होनेपर ।

सलफर—पुराने रोगमें यह फायदा करता है।

ष्ट्रामोनियम—मस्तिष्कमें रक्तसंचय ; भयंकर प्रलाप, काल्पनिक मूर्त्तियोंका देखना, नाचना, गाना और बहुत अधिक बकना, इसका रोगी चिल्लाता है, जिसे सामने पाता है, उसे मारता और दाँतसे काटता है।

विरेट्रम एल्बम—धर्मोन्माद : मस्तिष्कके सिवा और किसी दूसरे यंत्रकी क्रियामें विकार हो जानेके कारण मानसिक उपसर्ग सब पैदा हो गये हों तो यह फायदा करता है। सबको ही काट डालनेकी इच्छा होना। कुछ बोलनेकी इच्छा नहीं होती ; धर्मके सम्बन्धमें बातें करता है। रोगी रातभर प्रार्थना करता है और शाप देता है।

जिङ्कम—मस्तिष्ककी, हीनावस्था और मानसिक दुर्बलता। पुराना सर-दर्द।

आनुसंगिक उपाय और पथ्य आदि।

मेलनकोलिया (विषाद वायु), डिमेनसिया (चित्त-विभ्रम) मैनिया (बुद्धि-वैकल्य)—प्रभृतिकी चरम परिणति उन्माद या insanity (पागलपन) है। इसीलिये, उन्मादका पथ्य और आनुसंगिक उपाय ही उसकी दूसरी दूसरी अवस्थाओंमें भी किये जाते हैं। पाश्चात्य देशोंके चिकित्सक इन सब रोगियोंके साथ बहुत ही बुरा और हृदय-हीनताका व्यवहार करते हैं, पर इससे बीमारी कभी आरोग्य नहीं हो सकती। आयुर्वेदका मत है, कि उन्माद के रोगियोंके प्रति आश्वास और हासजनक वचन कहना चाहिये,

आरम-मेटालिकम—आत्महत्याकी प्रवृत्ति और धर्मोन्माद।
एगारिकम—प्रफुल्लता, पेशियोंका बहुत जोर जोरसे फड़कना।
बेलेडोना—मस्तिष्कमें रक्तसंचय, नींद न आना इत्यादि।
आयोडिन—डरपोक और मानसिक बलका घट जाना ; कण्ठमाल धातु।
इग्नेशिया—प्रेमभग हो जानेकी वजहसे पैदा हुआ उन्माद अथवा रुके हुए शोकके कारण उत्पन्न उन्माद।
हायोसायमस—लज्जा न रहनेके साथ कामोन्माद, अश्लील गाने गाना, धोती या साड़ी खोल डालना। रोगका कारण प्रेमका भग होना।
लैकेसिस—अपनी गरिमा प्रकट करनेवाला उन्माद, बहुत बकना लगातार एक विषयसे दूसरेपर चले जाना।
मर्क्युरियस—चिड़चिड़ा स्वभाव, हाथ-पैरोंका काँपना।
नक्स-वोमिका—शराबियोंकी तरह सरमें चक्कर या ढलमलायी डगमगाती चाल ; बहुत ज्यादा इन्द्रिय-सेवन या बहुत अधिक मानसिक परिश्रमका दुष्परिणाम।
ओपियम—भय या शोककी वजहसे पैदा हुआ उन्माद।
प्लाटिना—यह दवा स्त्रियोंके लिये ज्यादा उपयोगी है। स्त्री-जननेन्द्रिय अस्वस्थ रहनेके कारण पैदा हुआ उन्माद रोग। धर्मोन्माद, गर्वितभाव।
फास्फोरिक एसिड—हस्तमैथुन या बहुत ज्यादा इन्द्रिय-सेवनके कारण उन्माद, बकबकना।
रसटक्स—माथेमें चोटके कारण बीमारी होनेपर।

सलफर—पुराने रोगमें यह फायदा करता है।

ष्ट्रामोनियम—मस्तिष्कमे रक्तसंचय ; भयंकर प्रलाप, काल्पनिक मूर्त्तियोंका देखना, नाचना, गाना और बहुत अधिक बकना, इसका रोगी चिल्लाता है, जिसे सामने पाता है, उसे मारता और दाँतसे काटता है।

विरेट्रम एल्बम—धर्मोन्माद ; मस्तिष्कके सिवा और किसी दूसरे यन्त्रकी क्रियामे विकार हो जानेके कारण मानसिक उपसर्ग सब पैदा हो गये हों तो यह फायदा करता है। सबको ही काट डालनेकी इच्छा होना। कुछ बोलनेकी इच्छा नहीं होती ; धर्मके सम्बन्धमें बातें करता है। रोगी रातभर प्रार्थना करता है और शाप देता है।

जिङ्कम—मस्तिष्ककी हीनावस्था और मानसिक दुर्बलता। पुराना सर-दर्द।

आनुसंगिक उपाय और पथ्य आदि।

मेलनकोलिया (विषाद वायु), डिमेनसिया (चित्त-विभ्रम) मैनिया (बुद्धि-वैकल्य)—प्रभृतिकी चरम परिणति उन्माद या insanity (पागलपन) है। इसीलिये, उन्मादका पथ्य और आनुसंगिक उपाय ही उसकी दूसरी दूसरी अवस्थाओंमें भी किये जाते हैं। पाश्चात्य देशोंके चिकित्सक इन सब रोगियोंके साथ बहुत ही बुरा और हृदय-हीनताका व्यवहार करते हैं, पर इससे बीमारी कभी आरोग्य नहीं हो सकती। आयुर्वेदका मत है, कि उन्माद के रोगियोंके प्रति आश्वास और त्रासजनक वचन कहना चाहिये,

उन्हे बाँधकर रखना चाहिये, डराना चाहिये, दान और हर्षका प्रयोग करना चाहिये, अवस्था विशेषमें त्रास-जनक वाक्य और डराने-धमकानेकी जरूरत पड सकती है। पर मार-पीटकर रोगी को कष्ट देना किसी भी अवस्थामें उचित नहीं है। महात्मा हैनिमैनने, उन्मादके रोगियोंके प्रति जो घृणित व्यवहार किया जाता है, उसको देखकर, अपनी जगद्विख्यात पुस्तक "आर्गेनन" में जो कुछ लिखा है, उसपर हमलोगोंको भरपूर ध्यान देना चाहिये। वे कहते हैं, दवा सेवन करानेके साथ ही साथ रोगीकी यदि आहार-विहारकी प्रणाली सावधानतासे ठीक कर दी जाये और उसके साथ उपयुक्त व्यवहार किया जाये तो रोगी आरोग्य हो सकता है। बहुत अधिक क्रोध दिखानेवाले उन्माद रोगीके सामने निडर, धीर और दृढ़ व्यवहार करना चाहिये। अगर रोगी चिडचिडा हो और यदि विलाप-भरी दुःखावस्था प्रदर्शित करता हो, तो चुप रहना उचित है। अगर रोगी ज्ञानहीनकी तरह बकबक करता हो, तो चुप रहकर उसकी बातें सुननी चाहियें। अगर रोगी तंग करनेवाला बुरा व्यवहार करता हो, तो उसकी तरफ ध्यान ही न देना चाहिये अर्थात उसके प्रति अमनोयोगी रहना चाहिये। रोगी की किसी तरहसे भी भर्त्सना न करनी चाहिये और इस ओर नजर रखनी चाहिये, कि उसे किसी तरहका भी शारीरिक दण्ड न दिया जाये।

रोगीके सरके केश छुरेसे मुड़वा देने चाहियें और निल या बादामका तेल तथा दूसरे दूसरे मस्तिष्कको ठण्डा करनेवाले तेलों का व्यवहार करना उचित है।

उन्हे खुराक ऐसी देनी चाहिये, जिससे मस्तिष्कका पोषण हो, स रोगमें सोनावेंगका मांस और शोरबा सुपथ्य माना जाता है। ायुर्वेदके मतसे कछुएका मांस, सौ बारका धोया हुआ घी, नया ौर पुराना घी तथा धारोष्ण दूध और फलोंमें कटहल, नारियल, ल, मीठा अनार प्रभृति सुपथ्य है।

धातु-दौर्बल्य सम्बन्धी रोगोंकी चिकित्सा प्रदर्शिका।

धातुदौर्बल्य और ध्वजभंग।

अत्यन्त हस्तमैथुनका अभ्यास—एगनस-कैस्टस, कैल्केरिया-कार्ब, चायना, काकुलस, हायोसायमस, मर्क्युरियस, नक्स-वोमिका, फास्फोरस, फास्फोरिक एसिड, पिकरिक एसिड, सिकेलि-कोर, सलफर।

स्त्री-सहवासकी प्रबल इच्छा—कैनाबिस इण्डिका, केन्थरिस, हायोसायमस, मर्क्युरियस, नेट्रम-म्यूर, फास्फोरस, नक्स-वोमिका, पिकरिक एसिड, स्ट्रैमोनियम, सलफर, विरेट्रम।

जननेन्द्रियमें जलन—एनाकार्डियम, आर्निका, बोवि. कैनाबिस, केन्थरिस, क्रियोजोट, मैग-म्यूर, प...

लिङ्गमुण्डमें जलन—आर्सेनिक, वार्वेरिस, क्रोटोन, नक्स-वोमिका, पेरेरा, वायोल-ट्रिकलर।

लिङ्गाग्रचर्ममें जलन—आर्सेनिक, वार्वेरिस, कैल्केरिया, मर्कुरियस, नक्स-वोमिका, पल्सेटिला, साइलिसिया, सलफर।

रतिक्रियाकी इच्छा न होना—एगनस, कैनाविस, क्लिमेटिस, कैलि-कार्व, लाइकोपोडियम, रोडोडेण्ड्रन।

संगमके समय आनन्द न आना—एनाकार्डियम, कैलेडियम, नेट्रम-म्यूर, प्लाटिना।

संगमके समय औंघाई या नींद—वैराइटा-कार्व, लाइकोपोडियम।

संगमके बाद मानसिक उद्वेग—सिपिया।

पीठमें जलन—मैग-म्यूर।

दोनों पैरोंमें ठण्डक—डौफाइटिस।

लिङ्गोद्रेक—रोडोडेण्ड्रन, सिपिया।

शारीरिक और मानसिक क्लान्ति—सिपिया।

घुटनोंमें कमजोरी—सिपिया।

स्नायविक उपदाह—पेट्रोलियम।

रातमें पसीना—एगारिकस।

विरक्त चित्त—सेलिनियम।

दाँतमें दर्द—डेफनी।

कमजोरी—एगारिकस, वार्बेरिस, कैल्केरिया, कोनायम, ग्रेफाइटिस, कैलि-कार्ब, लाइकोपोडियम, नाइट्रिक एसिड, पेट्रोलियम, सेलेनियम, सिपिया, साइलिसिया।

जननेन्द्रियकी शीतलता—एगनस, एलोज, ब्रोमिन, कैलेडियम, कैनाबिस, कैप्सिकम, जेलसिमियम, आइरिस, लाइकोपोडियम, मर्कुरियस, सलफर।

अण्डकोषका ठण्डापन—एगनस-कैस्टस, ब्रोमिन, एलोज, कैप्सिकम, मर्कुरियस।

लिङ्गमुण्डमें ठण्डक मालूम होना—वार्बेरिस, सलफर, जिङ्कम।

लिङ्गोद्रेक साधारण—(erections in general)—एनाकार्डियम, कैन्थरिस, क्रियोजोट, डिजिटेलिस, इयुफ्रेशिया, कैलि-कार्ब, मर्कुरियस, नेट्रम-कार्ब, नेट्रम-म्यूर, ओपियम, प्लम्बम, पल्सेटिला, सिपिया, स्ट्रैफिसेग्रिया।

सङ्गमकी इच्छाके विना ही—कैलेडियम, इयुफ्रेशिया, मैग्नेशिया, सल्फ, नाइट्रिक-एसिड।

लिङ्गोद्रेक—बहुत सहजमें ही होता है—लाइकोपोडियम, नक्स-वोमिका, फास्फोरस, सैबाइना।

असम्पूर्ण—कोनायम।

दर्द-भरा—कैनाबिस, कैन्थिरिस, हिपर-सलफर, इग्नेशिया, कैलि-कार्ब, मर्कुरियस, नेट्रम-कार्ब, नाइट्रिक-एसिड, पल्सेटिला, थूजा।

शामके समय—सिनाबेरिस, फास्फोरस।

रातके समय—पल्यूमिना, आरम, कैप्सिकम, मर्कु रियस, नेट्रम-म्यूर, नाइट्रिक-एसिड, प्लाटिना, प्लम्बम, सिपिया, थूजा, जिङ्कम।

ध्वजभंग—एगनस, कैलेडियम, कैल्केरिया, कैम्फर, कैनाबिस, कैप्सिकम, कास्टिकम, चायना, काफिया, कोलोसिन्थ, कोनायम, हायोसायमस, आयोडिन, कोबाल्टम, लाइकोपोडियम, मस्कस, म्यूरेटिक एसिड, नाइट्रिक-एसिड, नक्स-मस्केटा, फास्फोरस, फास्फोरिक एसिड, सेलिनियम, सिपिया, स्ट्रामोनियम, सलफर।

ध्वजभंग-पुराना—लाइकोपोडियम।

मरदीसे—मस्कस।

अण्डकोष कड़ापन—एगनस, आरम, क्लिमेटिस, कोपेरा, आयोडिन, मर्कु रियस, नक्स-वोमिका, रोडोडेण्ड्रन, स्पंजिया, सल्फर।

प्रदाह—आरम, बेलेडोना, क्लिमेटिस, कोनायम, लाइकोपोडियम, मर्कु रियस, नाइट्रिक-एसिड, नक्स-वोमिका, पल्सेटिला, स्पंजिया, स्टेफिसेग्रिया, जिङ्कम।

आर्द्रता—तर रहना—नेट्रम-कार्ब, पेट्रोलियम, साइलिसिया, सल्फर, जिङ्कम।

[illegible] **खुजली**—एगारिकस, एम्ब्राग्रिसिया, एकूस्टग, बार्बेरिस, कैल्केरिया, कास्टिकम, क्लिमेटिस, कोनायम,

इग्नेशिया, कैलि-कार्ब, लाइकोपोडियम, मर्कुरियस, नेट्रम-म्यूर, नेट्रम-सल्फ, नाइट्रिक-एसिड, सेलेनियम, सिपिया, साइलिसिया, सलफर।

अण्डकोषमें खुजली—एमोन-कार्ब, आरम, कास्टिकम, काकुलस, इण्डिगो, कैलि-कार्ब, नेट्रम-म्यूर, नेट्रम-सल्फ, नाइट्रिक-एसिड, पेट्रोलियम, रोडोडेण्ड्रन, रास्टक्स, सेलिनियम, साइलिसिया।

जननेन्द्रियकी शिथिलता—एगनस, कैलेडियम, हेलिबोरस।

रेतःस्खलन—स्वप्नदोष—एल्यूमिना, एनाकार्डियम, एमोन-कार्ब, आर्जेण्टम, आरम, बेलेडोना, कैल्केरिया, कैन्थरिस, चायना, कोनायम, डिजिटेलिस, फेरम, कोबाल्टम, लाइकोपोडियम, मर्कुरियस, मस्कस, नेट्रम-म्यूर, नक्स-वोमिका, फास्फोरस, फास्फोरिक-एसिड, पल्सेटिला, सिपिया, सलफर।

रेतःस्खलन-बार बार—कार्बोविज, कोनायम, कैलि-कार्ब, लाइकोपोडियम, नाइट्रिक-एसिड, फास्फोरस।

खून-मिला—कास्टिकम, लिडम, मर्कुरियस।

प्रेमके स्वप्नके साथ—कैलि-कार्ब, कोबाल्टम, लिडम, मर्कुरियस।

प्रेमके स्वप्न बिना ही—बिस्मथ, कोरैलियम, गुएयाकम, मर्क, आयोड।

वीर्यस्खलन लिङ्गोद्रेकके बिना ही—बेलेडोना, कैलेडियम, कोनायम, जेलसिमियम, मस्कस, सेबाडिला, सेलिनियम।

संगमके समय वीर्यस्खलन नहीं होता—कैलेडियम, इयुजेनिया, ग्रेफाइटिस, लाइकोपोडियम, मिलिफोलियम, मोस्किस।

असम्पूर्ण—एगारिकस, बार्बेरिस, ब्लस्कम।

विलम्बमें होता है—बोरेक्स, कल्केरिया, इयुजिनिया, लाइकोपोडियम, जिङ्कम।

जल्दी हो जाता है—बार्बेरिस, बोरेक्स, कैलेडियम, कार्बो-वेज, कोनायम, लाइकोपोडियम, फास्फोरस, प्लाटिना, सेलिनियम, सल्फर, जिङ्कम।

वीर्य बूंद बूंद गिरता है—कैन्थरिस।

नींदकी अवस्थामें—माइलिसिया।

पाखानेके समय—फास्फोरिक-एसिड।

संगमेच्छा घटी हुई—(Sexual passion diminished)—एकोनाइट, आर्जेंटम, बेराइटा-कार्ब, बेलेडोना, कार्बो-एनि, हेलिबोरस, हिपर-सल्फर, इग्निशिया, कैलि-कार्ब, कैलि-आयोड, लाइकोपोडियम, ओपियम, फास्फोरिक-एसिड, सेबाडिला।

संगमेच्छा बढ़ी हुई (Sexual passion increased)—एगारिकस, एलोज, एमोन-कार्ब, एण्टिम-टार्ट, आर्निका,

आरम, कैल्केरिया, कैनाबिस, कैन्थरिस, कास्टिकम, चायना, सिनाबेरिस, काकुलस, काफिया, ग्रैफाइटिस, हायोसायमस, इग्नेशिया, आयोडिन, लैकेसिस, लिडम, लाइकोपोडियम, मर्कुरियस, मस्कस, नेट्रम-कार्ब, नेट्रम-म्यूर, नक्स-वोमिका, ओपियम, फास्फोरस, प्लाटिना, पल्सेटिला, सैबाइना, सेनेगा, सिपिया, साइलिसिया, स्टैनम, स्टैफिसेग्रिया, स्ट्रैमोनियम, विरेट्रम।

संगमेच्छाकी कमी—एगनस, एल्यूमिना, बेलेडोना, बार्बेरिस, कैल्केरिया, कैम्फर, कोपेइवा, ग्रैफाइटिस, हिपर-सलफर, इग्नेशिया, कैलि-कार्ब, लाइकोपोडियम, म्यूरेटिक-एसिड, नाइट्रिक-एसिड, नक्स-मस्केटा, फास्फोरिक-एसिड, साइलिसिया, सलफर।

संगम-शक्ति दुर्बल—बैराइटा-कार्ब, कैलेडियम, कैल्केरिया, इग्नेशिया, नक्स-मस्केटा, सिपिया, साइलिसिया, सलफर।

मानसिक रोगोंकी रेपर्टरी।

आत्महत्याकी इच्छा—एगनस, आरम-मेट, एण्टिम-क्रूड, चायना, इग्नेशिया, मर्कुरियस, नेट्रम, सलफर।

डूब मरनेकी इच्छा—एण्टिम-क्रूड, बेलेडोना, ड्रोसेरा, हेलि-

वीर्यस्खलन लिङ्गोद्रेकके बिना ही—बेलेडोना, कैलेडियम, कोनायम, जेलसिमियम, मस्कस, सैबाडिला, सेलिनियम।

संगमके समय वीर्यस्खलन नहीं होता—कैलेडियम, इयुजेनिया, ग्रेफाइटिस, लाइकोपोडियम, मिलिफोलियम, मोरिनम।

अससम्पूर्ण—एगारिकस, वार्बेरिस, प्लम्बम।

विलम्बसे होता है—बोरेक्स, कल्केरिया, इयुजिनिया, लाइकोपोडियम, जिङ्कम।

जल्दी हो जाता है—बार्बेरिस, बोरेक्स, कैलेडियम, कार्बो-वेज, कोनायम, लाइकोपोडियम, फास्फोरस, प्लाटिना, सेलिनियम, सल्फर, जिङ्कम।

वीर्य बूंद बूंद गिरता है—कैन्थरिस।

नींदकी अवस्थामें—साइलिसिया।

पाखानेके समय—फास्फोरिक-एसिड।

संगमेच्छा घटी हुई—(Sexual passion diminished)—एकोनाइट, आर्जेंगटम, अगनस-कास्टस, बेलेडोना, कार्बोनि, हेलिबोरस, हिपर-सल्फर, इग्निशिया, कैलि-कार्ब, कैलि-आयोड, लाइकोपोडियम, ओपियम, फास्फोरिक-एसिड, सैबाडिला।

संगमेच्छा बढ़ी हुई (Sexual passion increased)—एगारिकस, एलोज, एसोन-कार्ब, एसिडम-टार्ट, आर्निका,

आरम, कैल्केरिया, कैनाबिस, कैन्थरिस, कास्टिकम, चायना, सिनाबेरिस, काकुलस, काफिया, ग्रैफाइटिस, हायोसायमस, इग्नेशिया, आयोडिन, लैकेसिस, लिडम, लाइकोपोडियम, मर्कुरियस, मस्कस, नेट्रम-कार्ब, नेट्रम-म्यूर, नक्स-वोमिका, ओपियम, फास्फोरस, प्लाटिना, पल्सेटिला, सैवाइना, सेनेगा, सिपिया, साइलिसिया, स्टैनम, स्टैफिसेग्रिया, स्ट्रैमोनियम, विरेट्रम।

संगमेच्छाकी कमी—एगनस, एलूमिना, वेलेडोना, वार्वेरिस, कैल्केरिया, कैम्फर, कोपेइवा, ग्रैफाइटिस, हिपर-सलफर, इग्नेशिया, कैलि-कार्व, लाइकोपोडियम, म्यूरेटिक-एसिड, नाइट्रिक-एसिड, नक्स-मस्केटा, फास्फोरिक-एसिड, साइलिसिया, सलफर।

संगम-शक्ति दुर्वल—वैराइटा-कार्ब, कैलिडियम, कैल्केरिया, इग्नेशिया, नक्स-मस्केटा, सिपिया, साइलिसिया, सलफर।

मानसिक रोगोंकी रेपर्टरी।

आत्महत्याकी इच्छा—एगनस, आरम-मेट, एण्टिम-क्रूड, चायना, इग्नेशिया, मर्कुरियस, नेट्रम, सलफर।

डूब मरनेकी इच्छा—एण्टिम-क्रूड, वेलेडोना, ड्रोसेरा, हेलि-

बोरस, हायोसायमस, पल्सेटिला, रास्टक्स, सिकेलि
माइलिसिया, विरेट्रम ।

फांसी लगाकर मरनेकी इच्छा—आरम-मेट, आर्सेनिक,
बेलेडोना ।

ऊँची जगहमें कूदकर मरनेकी इच्छा—आरम-मेट, बेले-
डोना, क्रोटेलस, नक्स-वोमिका, स्ट्रमोनियम ।

विष खाकर मरनेकी इच्छा—लिलियम-टि ।

गोलीके आघातमें मरनेकी इच्छा—एण्टिम-टार्ट,
आरम, कार्वो-वेज, हिपर-सल्फर, नक्स-वोमिका, पल्से-
टिला ।

भय—(fear of death)—एकोनाइट, एगनस, एनाकार्डियम,
आर्सेनिक, बेलेडोना, कल्केरिया, काफिया, हेलिबोरस,
हिपर-सल्फर, लैकेसिस, मस्कस, नेट्रम-म्यूर, नाइट्रम,
नक्स-वोमिका, फास्फोरस, प्लाटिना, स्ट्रमोनियम ।

हृद्रोगका—लैक-कैनाइनम, लैकेसिस ।

भय—संन्यास रोगका—फ्लोरिक एसिड, फास्फोरस ।

मारे जानेका—ओरियम, फास्फोरस, स्ट्रमोनियम ।

ज़हर देकर मारे जाने या बेच दिये जानेका—बेलेडोना, ग्राइ-
योनिया, हायोसायमस, रासटक्स ।

एकान्तमें—आर्सेनिक, हायोसायमस, लाइकोपोडियम, स्ट्रमो-
नियम ।

भूत-प्रेतका—एकोनाइट, आर्सेनिक, कार्बो-वेज, काकुलस, ड्रोसेरा, पल्सेटिला, सलफर, जिङ्कम।

एकान्तसे अनिच्छा—आर्सेनिक, विसमथ, वोविस्टा, केल्केरिया, कोनायम, लाइकोपोडियम, फास्फोरस, सिपिया, स्ट्रैमोनियम।

एकान्त अच्छा लगता है—आरम, वेराइटा-कार्व, बेलेडोना, कैल्केरिया, चायना, ग्रैफाइटिस, हायोसायमस, इग्नेशिया, कैलि-कार्व, लैकेसिस, लाइकोपोडियम, नेट्रम-कार्व, नक्स, रास्टक्स, सिपिया।

जीवन भार मालूम होना—एम्ब्राग्रिशिया, आर्सेनिक, आरम, बेलेडोना, चायना, लैकेसिस, नेट्रम-म्यूर, नाइट्रिक-एसिड, फास्फोरस, प्लाटिना, सलफर, रास्टक्स, थूजा।

हस्तमैथुनकी वजहसे पैदा हुआ उन्माद—एग्नस, कैन्थरिस, कोनायम, मर्कुरियस, नक्स-वोमिका, फास्फोरस, फास-एसिड, पिक्रिक-एसिड, स्टैफिसेग्रिया।

धर्म-सम्बन्धी नाना प्रकारकी क्रियाके साथ उन्माद—आरम, आर्सेनिक, बेलेडोना, क्रोकस, हायोसायमस, लैकेसिस, लाइकोपोडियम, स्ट्रैमोनियम, सेलिनियम, सलफर, विरेट्रम।

कसम खाने और गाली देनेका स्वभाव—एनाकार्डियम, बेलेडोना, हायोसायमस, लाइकोपोडियम, स्ट्रैमोनियम, विरेट्रम।

दूसरे लोगोंको मार डालनेकी इच्छा—आर्सेनिक, चायना, हिपर-सलफर, लैकेसिस, स्ट्रामोनियम।

❀ समाप्त ❀

कसम खाने और गाली देनेका स्वभाव—एनाकार्डियम, वेलेडोना, हायोसायमस, लाइकोपोडियम, स्ट्रैमोनियम, विरेट्रम ।

दूसरे लोगोंको मार डालनेकी इच्छा—आर्सेनिक, चायना, हिपर-सलफर, लैकेसिस, स्ट्रामोनियम ।

❀ समाप्त ❀

यदि थोड़े दिनोंमें ही चिकित्सा-ज्ञान और यश-प्राप्तिकी इच्छा हो, थोड़े परिश्रममें ही सुचिकित्सक बनना हो, बहुत जल्द औषध-निर्वाचन करना हो और अंगरेजी भाषाके अनेक नामी ग्रन्थोंकी बातें एक ही स्थानमें देखनी हों तो इसे अपने पास रखिये। इसकी भाषा बड़ी सरल है, बड़े बड़े डाक्टरी शब्दोंकी भरमार नहीं है, बहुत कम पढ़ा लिखा मनुष्य भी अतिसहजमें इसे हृदयङ्गम कर सभी रोगोंकी चिकित्सा कर सकता है। समलक्षणवाली एक दवासे दूसरेका प्रभेद-विचार, चरित्रगत लक्षण, मानसिक लक्षण, विशेष लक्षण, रोगकी वृद्धि, ह्रास, पूर्व और परवर्त्ती दवाएँ, दवाकी क्रियाका स्थितिकाल, फार्माकोपियाका फार्मुला—इसके अलावा ग्रन्थकारकी अभिज्ञताके परिणाम-स्वरूप तुरन्त लाभ दिखानेवाली दवाका वर्णन, मेडिकल सायन्सके अन्तर्गत अँगरेजी नामके सब रोगोंका लक्षण बतानेके साथ उनकी दवा, जगह जगहपर एनाटोमी अर्थात् शारीरकके वर्णन, आर्गननकी आवश्यक बातें—सारांश यह कि चिकित्सकको जो कुछ जाननेकी जरूरत है—वह सभी इसमें एक ही जगह है। इसे रखनेपर फिर किसी भी ग्रन्थको पढ़ने, या खरीदनेकी जरूरत नहीं है। इतना ही नहीं, इसमें नयी, काम करनेवाली अनेक दवाओंका ऐसा वर्णन आया है, ...में तुरन्त लाभ मालूम होता है। १४६१ पृष्ठोंकी सुन्दर, सुनहरी जिल्द बँधी पुस्तकका मूल्य—६॥), डा० मा० ॥=)

हैनिमैन पब्लिशिङ्ग को० प्रकाशित हिन्दी भाषाकी

बहुमूल्य पुस्तकें।

सरल पारिवारिक चिकित्सा।

खूब सहज तरीके और सरल भाषामें गृहस्थोंके लिये यह पुस्तक लिखी गयी है। यह बाज़ारकी अन्य गृह-चिकित्साकी पुस्तकों की तरह अंट-संट बातोंसे नहीं भरी है बल्कि इसमें प्रत्येक रोगका विवरण, रोग पहचाननेके तरीके और उसी ढंगके रोगसे प्रभेद, रोगकी विभिन्न अवस्थायें, उनकी होमियोपैथिक मतसे चिकित्सा, आनुसंगिक चिकित्सा अर्थात् किस रोगमें कैसा ऊपरी उपचार करना चाहिये, पथ्यापथ्य प्रभृति विषय बड़े ही सुन्दर भावसे लिखे गये है। साधारणतः इसमें सब तरहके रोग, स्त्री-रोग, बच्चोंकी बीमारियाँ अर्थात् शिशु-रोग, आकस्मिक दुर्घटना प्रभृति समस्त रोगोंका इलाज बता दिया गया है। इसके अलावा बराबर काममें आनेवाली ५० दवाओंकी मेटिरिया-मेडिका भी दे दी गयी है। पुस्तककी भाषा इतनी सरल है कि थोड़ी पढ़ी लिखी स्त्रियाँ भी इससे अपने पुत्र-कन्या और परिवारवालोंका इलाज कर सकेंगी। गृह-चिकित्साकी पुस्तक खरीदनेके पहले एक बार यह पुस्तक अवश्य देख लेनी चाहिये। हम जोर देकर कह सकते हैं, कि इस पुस्तकको पासमें रखनेपर आकस्मिक विपत्तिके समय अवश्य ही जीवन-रक्षा होगी। साथ ही धन और यशकी भी प्राप्ति होगी। नवीन विद्यार्थी, चिकित्सक तथा पारिवारिक मनुष्योंके लिये तो अपूर्व सामग्री है। छपाई कागज अति सुन्दर, पुस्तकका मूल्य २॥)

संक्षिप्त पारिवारिक चिकित्सा।

हमारे प्रकाशित "सरल पारिवारिक चिकित्सा" का सार-संग्रहकर यह पुस्तक नवसिखुए विद्यार्थी और गृहस्थोंके लिये लिखी गयी है। इतने कम दाममें ऐसी सुन्दर पुस्तक दूसरी नहीं है। इसमें भी सभी रोगोंका निदान और लक्षण तथा चिकित्साका बहुत सरलता पूर्वक वर्णन कर दिया गया है। जिसमें प्रत्येक हिन्दी भाषी इस पुस्तककी एक प्रति रख सकें, इसलिये, दाम भी बहुत कम अर्थात् नाम-मात्रका रख दिया गया है। मूल्य ॥।)

भारतीय औषधियोंका भेषजतत्व।

युरोप और अमेरिकामें जिन प्रणालियोंका अवलम्बन कर नाना प्रकारकी दवाओंकी परीक्षा हुई है और वे समस्त संसारमें व्यवहार की जा रही हैं, उसी तरह हमारे इस देशकी तुलसी, कालमेघ, नीम, गुर्च, पितपापड़ा, अडूसा, प्रभृति ७८ दवाओंकी उसी प्रणालीसे परीक्षा हुई है और बहुत वर्षोंसे शहर और मुफस्सिल-के होमियोपैथिक चिकित्सकगण इनके सहारे बहुत-सी कड़ी और कठिन बीमारियोंके रोगोंको आरोग्य कर चुके हैं। यह सभी जानते हैं कि, जिस देशकी जो जड़ी-बूटी होती है, वह उस देशवासीके लिये विशेष लाभदायक होती है। अतएव, ये दवाएँ भारतीयोंको बहुत ही शीघ्र लाभ पहुँचाती हैं। इस पुस्तकमें इन सब देशी दवाओंकी मेटीरिया-मेडिका दी गयी है। पुस्तक कितनी उपादेय है, इसका पता इसीसे लगता है कि बंगलामें इसके दो संस्करण हो चुके। मूल्य—॥)